मासिक शिविरा पत्रिका

वर्ष : 65 | अंक : 4 | अक्टूबर, 2024 | पृष्ठ : 56 | मूल्य : ₹20

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के स्वामी विवेकानन्द सभागार में आयोजित 28वें राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह की झलकियाँ

राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह की पूर्व संध्या में सांस्कृतिक कार्यक्रम की झलकियां

सत्यमेव जयते

मदन दिलावर
मंत्री
शिक्षा (विद्यालयी/संस्कृत)
एवं पंचायती राज विभाग
राजस्थान सरकार

'अपनों से अपनी बात' स्तम्भ समस्त शैक्षिक जगत के साथ विचारों को साझा करने का सहज माध्यम है । मेरी स्पष्ट मान्यता है कि हमारे चिन्तन और आचरण में एकरूपता होनी चाहिए । जिस प्रकार विद्यालय में हमारे शिक्षक बालकों से यह अपेक्षा करते हैं कि बालक जैसा बोलें वैसा करें, ठीक वही अपेक्षा मेरी गुरुजन से है । गुरुजन अपने आचरण से आदर्श चरित्र की लकीर खींचे । विभाग के मुखिया के नाते मैं जो अपेक्षा अपने विद्यार्थियों एवं शिक्षकों से करता हूँ स्वयं मेरा प्रयास भी यही है कि विचारों एवं कार्य में एकरूपता स्थापित की जा सके।

इदम न मम्

भारतीय संस्कृति यज्ञमयी संस्कृति है । जिसमें 'इदम न मम्' अर्थात् यह मेरा नहीं है का यज्ञ भाव प्रबलता पूर्वक कार्य करता है । यही कारण है कि हमारे यहाँ सम्पत्ति और शिक्षा सहित सभी विषयों के प्रति न्यासी का भाव रहता है । न्यासी भाव और कर्म की स्पष्ट समझ उत्पन्न और विकसित करने का गुरुतर कार्य शिक्षक करता है । शिक्षक स्वयं में ज्ञानकोष है । शिष्य के भविष्य को संवारने हेतु शिक्षक स्वयं दीपक के समान प्रज्ज्वलित होकर ज्ञान और संस्कृति के हस्तान्तरण का पावन कार्य न्यासी के रूप में करता है । यही कारण है कि अपने कर्त्तव्य पथ पर समर्पित शिक्षक समाज में बिखरे अनगढ़ प्रस्तर खण्डों को तराश कर राष्ट्रहितार्थ कलाम और पटेल रूपी रत्नों को गढ़ने की कला में निष्णात है ।

'अपनों से अपनी बात' स्तम्भ समस्त शैक्षिक जगत के साथ विचारों को साझा करने का सहज माध्यम है । मेरी स्पष्ट मान्यता है कि हमारे चिन्तन और आचरण में एकरूपता होनी चाहिए । जिस प्रकार विद्यालय में हमारे शिक्षक बालकों से यह अपेक्षा करते हैं कि बालक जैसा बोलें वैसा करें, ठीक वही अपेक्षा मेरी गुरुजन से है । गुरुजन अपने आचरण से आदर्श चरित्र की लकीर खींचे । विभाग के मुखिया के नाते मैं जो अपेक्षा अपने विद्यार्थियों एवं शिक्षकों से करता हूँ स्वयं मेरा प्रयास भी यही है कि विचारों एवं कार्य में एकरूपता स्थापित की जा सके । महाकवि जयशंकर प्रसाद ने उचित ही कहा है:-

'ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न हो, इच्छा क्यों पूरी हो मन की ।
एक-दूसरे से न मिल सके, यही विडम्बना है जीवन की ।।'

अतः हमें आज के प्रत्येक वर्ग में सामंजस्य स्थापित कर किम्कर्त्तव्यविमूढ़ समाज की दशा एवं दिशा बदलने का साहसिक कार्य करना है । मेरा शिक्षकों से आग्रह है कि गीली मिट्टी के समान आने वाले बालकों में संस्कारों का बीजारोपण कर शिक्षा द्वारा सामाजिक परिवर्तन के स्वप्न को साकार करें । मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि भारतीय विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी विभाग, भारत सरकार नई दिल्ली द्वारा आयोजित 11 वीं मानक इंस्पायर अवार्ड प्रदर्शनी का आयोजन प्रगति मैदान नई दिल्ली में हुआ, जिसमें राजस्थान राज्य स्तर से चयनित 23 बाल वैज्ञानिकों ने भाग लिया । राष्ट्रीय स्तर पर कुल 31 बाल वैज्ञानिकों में से राजस्थान के कुल 05 बाल वैज्ञानिकों का चयन हुआ है । यह पूरे राजस्थान के लिए गर्व की बात है । इस हेतु मैं निदेशक महोदय व उनकी पूरी टीम को बधाई देता हूँ ।

माँ भारती के महान और यशस्वी सपूत महात्मा गाँधी के जन्म दिवस 2 अक्टूबर को सम्पूर्ण विश्व अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाता है एवं 2 अक्टूबर लाल बहादुर शास्त्री जी का भी जन्म दिवस है । शास्त्री जी ने सत्य और नैतिकता को जीवन के शाश्वत मूल्यों में सर्वोत्तम स्थान देकर संसार को 'कथनी और करनी' की एकरूपता का संदेश दिया । मैं शिक्षकों से आग्रह करना चाहूँगा कि सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयन्ती 31 अक्टूबर को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाते हुए बालकों को सरदार पटेल के लौह पुरुष के गुणों के बारे में बताए ।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति के श्रेष्ठ शिखर की ओर अग्रसर होने के लिए संयम और शक्ति की आवश्यकता है । मैं अपेक्षा करता हूँ कि नवरात्र के अवसर पर समस्त शिक्षक शक्ति का आराधन कर नवीन ऊर्जा के साथ कार्य करेंगे । बुराई पर अच्छाई की विजय हो, ऐसी विजयदशमी हम सभी मनाएं । मेरा विश्वास है कि मूल्यहीनता के इस दौर में उत्तम शिक्षा एवं संस्कारों से हम भारत के भविष्य को सहेज कर पुनः भारत को विश्व गुरु के पद पर आसीन करने में सफल होंगे.....

अस्तु दीपावली पर्व की आप सभी को कोटि-कोटि बधाई ।

(मदन दिलावर)

आशीष मोदी
आई.ए.एस.
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

''राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षक सम्मान समारोह में राजस्थान के श्रीगंगानगर से डॉ. बलजिन्द्र सिंह बराड़ और बीकानेर से हुकमचंद चौधरी चयनित हुए हैं । सम्मानित शिक्षकों ने पूर्ण समर्पण एवं कर्त्तव्य निष्ठा के साथ गुणवत्तायुक्त एवं आनन्ददायी शैक्षिक वातावरण हेतु तकनीकी सहयोग से नवाचारी क्रियाकलापों द्वारा छात्र उन्नयन हेतु सार्थक एवं प्रेरणादायी प्रत्यन किए है जो सराहनीय होने के साथ हमारे लिए प्रसन्नता का विषय भी है । इस उपलब्धि के लिए सम्मानित शिक्षकों को बधाई देते हुए मैं कामना करता हूँ कि वे उत्तरोतर शिक्षक समाज के लिए प्रेरणा स्रोत बने।''

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

सांस्कृतिक गौरव और राष्ट्र प्रेम

बदलते प्रकृति के स्वरूप और त्योहारों के कारण माह अक्टूबर हमारे जीवन में विशिष्ट महत्त्व रखता है। इस माह में एक ओर अनेक महापुरुषों के जन्म से हमारी वसुधा धन्य हुई वहीं दूसरी ओर महापर्वों को उत्साहपूर्वक धूमधाम से मनाने पर हमारे एकरस जीवन में सरसता का संचार होता है।

स्वाभिमान, सादगी और इमानदारी के प्रतीक लाल बहादुर शास्त्री, महात्मा गाँधी और डॉ. कलाम का जीवन चरित्र भारतीय परिवेश का प्रेरणादायी चरित्र है। इसी माह हम लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयन्ती को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाएंगे। आप सभी शिक्षक वृन्द विद्यार्थियों को पटेल की दृढ़ इच्छा शक्ति के माध्यम से राष्ट्रहित में लिए गए निर्णयों से अवगत कराते हुए उनको श्रेष्ठ नागरिक बनाने में सफल होंगे ऐसा मेरा विश्वास है.....

भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्वों को समाहित कर आगे बढ़ने की दिशा में 21वीं शताब्दी की प्रथम ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020'' बनायी गयी है। मैं आशा करता हूँ कि ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020'' के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु विद्यालयों में सांस्कृतिक गौरव और राष्ट्र प्रेम की ऊर्जस्वित भावधारा से ओत-प्रोत सकारात्मक वातावरण देने में हमारे अध्यापक सफल होंगे।

राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षक सम्मान समारोह में राजस्थान के श्रीगंगानगर से डॉ. बलजिन्द्र सिंह बराड़ और बीकानेर से हुकमचंद चौधरी चयनित हुए हैं। सम्मानित शिक्षकों ने पूर्ण समर्पण एवं कर्त्तव्य निष्ठा के साथ गुणवत्तायुक्त एवं आनन्ददायी शैक्षिक वातावरण हेतु तकनीकी सहयोग से नवाचारी क्रियाकलापों द्वारा छात्र उन्नयन हेतु सार्थक एवं प्रेरणादायी प्रत्यन किए है जो सराहनीय होने के साथ हमारे लिए प्रसन्नता का विषय भी है। इस उपलब्धि के लिए सम्मानित शिक्षकों को बधाई देते हुए मैं कामना करता हूँ कि वे उत्तरोतर शिक्षक समाज के लिए प्रेरणा स्रोत बने।

इंस्पायर अवार्ड मानक योजना के तहत विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा नई दिल्ली में दिनांक 17.09.2024 से 19.09.2024 तक आयोजित 11वीं NLEPC में देश भर के निजी व सरकारी विद्यालयों के 350 विद्यार्थियों ने भाग लिया जिसमें से 31 बाल वैज्ञानिकों के प्रोजेक्टस का चयन हुआ। इसमें राजस्थान के 05 विद्यार्थियों का पुरस्कृत होना हमारे लिए गौरव का विषय है। इंस्पायर अवार्ड योजना का उद्देश्य विद्यार्थियों में रचनात्मक एवं सृजनात्मक सोच विकसित कर नवाचारों के लिए प्रोत्साहित करना है।

वर्तमान सत्र के इंस्पायर अवार्ड नॉमिनेशन की अंतिम तारीख 15.10.2024 है अतः सभी उच्च प्राथमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय के संस्था प्रधान अपने विद्यालय को E-MIAS पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन करते हुए अधिकतम 05 विद्यार्थियों के नवाचारी विचार जो कि गुणात्मक दृष्टि से भी श्रेष्ठ हो, को अपलोड करना सुनिश्चित करें।

आप सभी नवरात्र पर शक्ति की आराधना करें। बुराई पर अच्छाई की जीत हो, सभी के जीवन में ऐसी विजयदशमी प्रतिदिन आए और झिलमिलाते दीपों की रोशनी में आप के जीवन के सभी अन्धकार विलीन हो, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ.....

आपका अपना

(आशीष मोदी)

▼ *चिन्तन*

दुर्लभं भारतवर्षे, जन्म तस्मान्मनुष्यता।
मानुषे दुर्लभं चापि, स्व-स्वधर्म प्रवर्तिता ॥

अर्थात्: भारतवर्ष में जन्म लेना कठिन हैं, उससे भी कठिन है मानव रूप पाना और उससे भी कठिन है अपने-अपने कर्त्तव्य में प्रवृत्त होना।

पाठकों की बात

आपके सौजन्य से शिविरा पत्रिका का सितंबर अंक साभार प्राप्त हुआ। शिक्षक दिवस को समर्पित यह अंक अत्यंत विशिष्ट एवं समृद्ध लगा। 'शैक्षिक चिंतन' के अंतर्गत शिक्षा के शाश्वत मूल्यों, नवाचारों तथा वर्तमान दशा - दिशा पर अनेक विद्वानों द्वारा उपयोगी बौद्धिक प्रकाश डाला गया है। 'हिन्दी विविधा' उपखण्ड में हिन्दी के विविध आयामों का सार्थक विवेचन प्रस्तुत किया गया है। 'हिन्दी कविता' के अंतर्गत सभी रचनाएँ मनमोहक, प्रेरक एवं संदेशप्रद हैं। राजस्थानी भाषा को भी यथेष्ट सम्मान देते हुए पर्याप्त स्थान दिया गया है। बालसाहित्य के पृष्ठों में बाल मनोनुकूल ज्ञान - विज्ञान से परिपूर्ण सामग्री उपलब्ध करायी गयी है। पत्रिका की प्रत्येक रचना प्रशंसनीय, पठनीय और मननीय है। विशिष्ट साहित्यिक अनुष्ठान के रूप में यह अंक सर्वथा संग्रहणीय तथा मार्गदर्शक है। वैसे तो इस पत्रिका का प्रत्येक अंक उत्कृष्ट होता है, किंतु इस अंक को विशिष्ट बनाने में सम्पादन समूह की श्रम साधना मुक्तकण्ठ से स्तुत्य है।

विनम्र निवेदन है कि प्रत्येक मासिक अंक में यदि आगामी विशेषांकों की भावभूमि पूर्व में ही सूचित कर दी जाए तो पाठकों और साहित्यकारों को जुड़ने में सुगमता रहेगी। सादर

गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', लखनऊ

● माह सितम्बर 2024 मासिक शिविरा पत्रिका का शिक्षक दिवस विशेषांक प्राप्त हुआ। विशेषांक का मुख पृष्ठ डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन और शिक्षा मंत्री के चित्र सहित बहुत ही आकर्षक लगा।

विशेषांक के भाग एक शैक्षिक चिंतन हिन्दी विविधा, हिन्दी कविता, राजस्थानी विविधा एवं बाल साहित्य की रचनाएँ बहुत ही गहराई लिए हुए थी। शिक्षक दिवस से संबंधित भरपूर साहित्य का संगम था। शैक्षिक चिंतन में खेल-खेल में शिक्षा' स्वस्ति जैन का, 'डिजिटल कक्षा नया आगाज' आशीष जिन्दल, हिन्दी विविधा में 'सच्ची लगन और सफलता' हीराराम चौधरी, 'कन्या पूजन' आकांक्षा शर्मा हिन्दी कविता में 'मेरे शिक्षक' रिंकु मीणा का, 'माँ' रातुल शर्मा का राजस्थानी विविधा में 'मकान बिकाऊ है' छगन लाल व्यास का 'गीत पेड़' डॉ. गोविन्द नारायण कुमावत, बाल साहित्य में 'दादाजी' कमलेश शर्मा 'बाल वीर' दलपत सिंह राठौड़ का आदि का लेख प्रेरणादायक, सारगर्भित एवं मन को गहराई तक छूने वाला था।

ऋषिराज सैनी, जयपुर-ग्रामीण

● माह सितम्बर 24 का शिविरा अंक का मुखावरण शिक्षक दिवस विशेषांक माननीय शिक्षामंत्रीजी द्वारा वर्ल्ड बुक ऑफ रिकोर्डस लन्दन द्वारा सर्टिफिकेट लेते हुए खुशी का पल हमारे लिए प्रेरणादायक था कि हम सभी तन-मन एवं समर्पण की भावना से कोई भी कार्य करें तो एक एक रिकोर्डस के साथ सफलता अर्जित कर सकते हैं। मुख्यमंत्री वृक्षारोपण अभियान हरियालो राजस्थान, एक पेड़ माँ के नाम अभियान के तहत सभी शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं प्रदेश वासियों के तन-मन समर्पण की भावना से वृक्षारोपण कर एक रिकार्ड कायम किया। इसलिए सभी बधाई के पात्र हैं। अब हमें जरूरत हैं उनके रख-रखाव की। ऐसे अभियान प्रतिवर्ष अगस्त माह में आयोजित करने चाहिए जिससे जनजागृति आती है। वृक्ष पृथ्वी का शृंगार एवं जीवन का आधार है।

नृसिंहदास वैष्णव - बिशनगढ़

● सितंबर 2024 का शिविरा अंक शानदार कवर के साथ संग्रहणीय बन पड़ा है। शिक्षा मंत्री जी एवं निदेशक महोदय का मार्गदर्शन महत्त्वपूर्ण है। सृजनशील शिक्षकों के बेहतरीन आलेखों, कविताओं, कहानियों, नाटकों के अलावा मायड़ भाषा राजस्थानी की बेहतरीन रचनाएं प्रकाशित करने पर आभार। शैक्षिक चिन्तन में संकलित आलेख सम्पादक मण्डल की शोध दृष्टि एवं समग्र चिन्तन मनन के गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की प्रधानता झलकती है।

नाटकों में श्रीमान रत्न कुमार जी सांम्भरिया द्वारा रचित नाटक 'शहीद बीरबल सिंह' का प्रकाशन 'शिविरा' में पेज नंबर 38 से 41 पर हुआ है। अमर शहीद बीरबल सिंह जीनगर बीकानेर रियासत के एक मात्र व प्रथम दलित शहीद के जीवन क्रम व शहादत पर बहुत ही शानदार नाटक की रचना एवं प्रकाशन हुआ। जो नवीन पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा देगा। बाल शिविरा, शाला प्रांगण को रंगीन पृष्ठभूमि में देना और अधिक उपयोगी साबित होगा। भामाशाहों द्वारा दिया गया सहयोग शिक्षा के प्रति ऊंची सोच को दर्शाता है।

मैं पुनः सितंबर अंक के बेहतरीन प्रकाशन के लिए सम्पादक मण्डल का आभार एवं धन्यवाद के साथ शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

नारायण दास जीनगर, बीकानेर

मासिक
शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते- श्रीमद्भगवद्गीता ४/३८

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला नि:संदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 65 | अंक : 04 | आश्विन-कार्तिक २०८१ | अक्टूबर, 2024

प्रधान सम्पादक
आशीष मोदी
*
वरिष्ठ सम्पादक
कमला कालेर
*
सम्पादक
डॉ. संगीता पुरोहित
*
सह सम्पादक
सीताराम गोदारा
*
प्रकाशन सहायक
सुचित्रा चौधरी
रमेश व्यास

मूल्य ₹ 20

वार्षिक सदस्यता राशि व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹100
- राजकीय संस्थाओं / कार्यालयों/ विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/ बैंक ड्रॉफ्ट/ पोस्टल आर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखे।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से शिक्षा विभाग राजस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

- **अपनों से अपनी बात**
- इदम न मम् 4
- **दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ**
- सांस्कृतिक गौरव और राष्ट्र प्रेम 5
  रपट
- राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह-2024 8
  डॉ. संगीता पुरोहित
- 28वाँ राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह-2024 13
  महेन्द्र कुमार जैन
- 11वीं राष्ट्र स्तरीय प्रदर्शनी एवम् प्रोजेक्ट प्रतियोगिता 17
  भारती सिंह

आलेख

- महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन 19
  दिलीप कुमार मंगल
- स्वतंत्रता आंदोलन में डांडी यात्रा का महत्त्व 20
  ओमप्रकाश सारस्वत
- भारत माँ के अनमोल रत्न-लालबहादुर शास्त्री 22
  नवप्रभात दुबे
- श्रेष्ठ विद्यालय का स्वरूप 23
  गजपाल सिंह
- हिन्दी के सशक्त हस्ताक्षर : श्रद्धाराम फिल्लौरी 25
  जितेन्द्र शर्मा
- नारी तू नारायणी 26
  इला पारीक
- अधिगम के लिए मजेदार तरीकों का उपयोग 31
  डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता
- डाक खत की लिखावट 32
  सुभाष चंद्र कस्वाँ
- आचार्य देवो भवः 33
  ललिता रानी
- हारे नहीं सो हिन्दी 34
  नीलू शेखावत
- संस्कार एक नई खोज 35
  सुभाष रणवां
- अब्दुल कलाम : व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व 36
  डॉ. कान्ता मीना
- विश्व छात्र दिवस 37
  दिलीप कुमार अग्रवाल
- प्राथमिक कक्षा स्तर के बच्चों के लिए बाल साहित्य का सृजन कैसे हो 38
  ललिता पारीक
- शिक्षक एक धर्म 39
  कुलदीप सिंह
- निराशा में आशा की जीत है दीपावली 40
  तारकेश्वरी 'सुधि'
- ईयर फोन का शोर : कितना सेहतमंद 41
  डॉ. नगेन्द्र सिंह राठौड़

स्तम्भ

- पाठकों की बात 6
- आदेश-परिपत्र 27-30
- बाल शिविरा 43-44
- शाला प्रांगण 45-46
- भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर 47
  गोविन्द कुमार तनाण
- हमारे भामाशाह 48-52

पुस्तक समीक्षा 42

- **समै री सुरणाई**
  कवि : शिवराज छंगाणी
  समीक्षक : रामजीलाल घोड़ेला

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

मुख्य आवरण : तरूण शर्मा

रपट

राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह-2024

❒ डॉ. संगीता पुरोहित

सम्पूर्ण समाज को बिना किसी भेदभाव प्रगति के पथ पर आलोकित कर यशस्वी एवम् संस्कार वान भावी पीढ़ी तैयार करने का माध्यम है शिक्षा । शिक्षा की जड़ें जितनी गहरी, व्यापक और मजबूत होंगी समाज में ज्ञान का आलोक उतने विस्तृत पटल पर फैलेगा । शिक्षक ही वह प्रकाश पुंज है जो अज्ञान रूपी निविड़ अंधकार को अपने ज्ञान रूपी प्रकाश पुंज के माध्यम से समाप्त कर विद्यार्थियों को सफलता के श्रेष्ठ शिखर पर पहुँचाने का कार्य करता है।

भारत के महान दार्शनिक श्रेष्ठ चिंतक सम्मानित शिक्षक एवम् देश के पूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधा कृष्णन् के जन्म दिवस को उनके सम्मान में सम्पूर्ण राष्ट्र शिक्षक दिवस के रूप में प्रतिवर्ष मनाता है। कार्य के साथ कारण जुड़ने से कार्य की महत्ता द्विगुणित हो जाती है। अवसर की शोभा को और अधिक बढ़ाने हेतु शिक्षा विभाग राजस्थान राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन कर स्वयं को गौरवान्वित महसूस करता है। इसी क्रम में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह 5 सितम्बर, 2024 एवम् 4 सितम्बर, 2024 को सांस्कृतिक संध्या का भव्य आयोजन बिड़ला ऑडिटोरियम स्टेच्यू सर्किल, जयपुर में किया गया। 4 सितम्बर 2024 को पुरस्कृत शिक्षकों के सम्मान में आयोजित सांस्कृतिक संध्या कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय शिक्षा मन्त्री महोदय श्री मदन दिलावर राजस्थान सरकार, शासन सचिव स्कूल शिक्षा, श्रीमान् कृष्ण कुणाल, भाषा व पुस्तकालय विभाग पंचायती राज प्रारम्भिक शिक्षा, राज्य परियोजना निदेशक श्रीमान् अविचल चतुर्वेदी, आयुक्त राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद, संयुक्त शासन सचिव शिक्षा - ग्रुप - 2 श्रीमान् मनीष गोयल एवम् निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर श्रीमान् आशीष, मोदी सचिव राजस्थान पाठ्य-पुस्तक मण्डल श्री मूलचंद उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का शुभारम्भ माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवम् दीप प्रज्ज्वलन के साथ सम्मानित मंच के सहयोग से माननीय शिक्षा मन्त्री के करकमलों से किया गया। जयपुर संभाग के शिक्षकों द्वारा 'सरस्वती वन्दना' एवम् 'अतिथि स्वागत' गीत गाया गया । तत्पश्चात 'गणेश वन्दना' एवम् 'रुणझुण बाजे घूघरा' गीतों पर सुन्दर नृत्य की प्रस्तुति दी गयी।

कार्यक्रम की निरन्तरता में माननीय शिक्षामंत्री महोदय श्री मदन दिलावर ने समस्त शिक्षकों का स्वागत करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना की । माननीय शिक्षा मन्त्री ने कहा कि ''शिक्षक कभी सामान्य नहीं होता। आप गुरु रामदास, द्रोणाचार्य एवम् अनेक ऋषि मुनियों की परम्परा से है । आपने जिनका निर्माण किया वे श्रेष्ठ वैज्ञानिक राजनेता, उद्योगपति एवम् सन्त हुए हैं। भगवान ने मिट्टी के ढेले के रूप में इन्सान को भेजा है जिसका परिमार्जन शिक्षकों ने किया है। चन्द्रयान से लेकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपके शिष्यों ने प्रतिष्ठा अर्जित की है। हमें श्रेष्ठ समाज के निर्माण के लिए स्वयं को आदर्श के रूप प्रस्तुत करना है। देश के महामहिम एवम् प्रधानमन्त्री को भी आपकी परम्परा के गुरु ने पढ़ाया है। संस्कार किसी दुकान पर नहीं मिलते। हमें न्यूनता की तरफ ध्यान देकर अपने संस्कारों को और अधिक परिमार्जित करना है। मुझे विश्वास है कि राजस्थान के शिक्षक श्रेष्ठ शिक्षक हैं। यही कारण है कि माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का लोहा पूरा देश मानता है। इस हेतु मैं आप सभी को बधाई देता हूँ'' के साथ माननीय ने अपने उद्बोधन को समाप्त किया। इसी क्रम में 'कृष्ण वन्दना', 'गुरु वन्दना' नृत्य जयपुर की शिक्षिकाओं ने प्रस्तुत किया। 'नारी तू नारायणी' जोधपुर संभाग द्वारा एवम् 'पर्यावरण के बारे में' नृत्य अजमेर संभाग की शिक्षिकाओं द्वारा 'धरती गोरा-धोरां री' 'ब्रज की होरी' भरतपुर एवम् गंगानगर की शिक्षिकाओं द्वारा 'भांगड़ा' नृत्य की अत्यन्त सुन्दर एवम् मनोरम प्रस्तुति दी गयी। कार्यक्रम के अन्त में श्रीमान् निदेशक महोदय ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि ''प्रदेश के शिक्षकों द्वारा अल्प अवधि में किए गए वीर श्रृंगार व भक्ति रस के भावों की प्रस्तुति में भांगड़ा सहित प्रस्तुति द्योतक है कि प्रदेश के शिक्षकों में कलाकारों की कमी नहीं है। सभी का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए निदेशक महोदय ने कहा 'लास्ट बट नोट लीस्ट।' अन्त में राष्ट्रगान के साथ इस मधुर बरसाती शाम के कार्यक्रम का समापन हुआ।

5 सितम्बर 2024 को राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह का शुभारम्भ बिड़ला ऑडिटोरियम में प्रातः 11.00 बजे आरम्भ हुआ। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि माननीय मुख्यमन्त्री महोदय श्री भजनलाल शर्मा तथा अध्यक्ष माननीय शिक्षामन्त्री महोदय श्रीमान् मदन दिलावर थे । कार्यक्रम में उपमुख्यमन्त्री तकनीकी शिक्षा और उच्च शिक्षा, आयुर्वेद, योग, प्राकृतिक चिकित्सा यूनानी और होम्योपैथी आयुष चिकित्सा, परिवहन और सड़क सुरक्षा विभाग माननीय प्रेमचन्द बैरवा, महापौर नगर-निगम ग्रेटर डॉक्टर सौम्या गुर्जर, जयपुर शहर सांसद श्रीमती मंजू शर्मा सिविल लाइन्स विधायक डा. गोपाल शर्मा, शासन

सचिव स्कूल शिक्षा श्रीमान कृष्ण कुणाल, राज्य परियोजना निदेशक श्रीमान अविचल चतुर्वेदी आयुक्त राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद, निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर श्रीमान आशीष मोदी, निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर, श्रीमान सीताराम जाट विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

समस्त मंचासीन अतिथियों ने पूर्ण श्रद्धा के साथ ही डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के चित्र एवम् वीणा पाणि की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्ज्वलित किया।

सर्वप्रथम श्रीमान कृष्ण कुणाल शासन सचिव, स्कूल शिक्षा राजस्थान द्वारा मंचासीन अतिथियों एवम् पुरस्कृत शिक्षकों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम का सक्षिप्त परिचय दिया गया। शासन सचिव श्रीमान कृष्ण कुणाल ने कहा 'शिक्षक केवल शिक्षक नहीं होता वरन् वह जीवन में छाए अंधकार, संशय के बादल और नकारात्मक भावों को दूरकर, किताबी ज्ञान से आगे बढ़कर सही डगर की प्रेरणा देता है। शिक्षक के मार्गदर्शन के अभाव में सफलता की कल्पना करना मुश्किल है।'' आपने डॉ. राधाकृष्णन के बारे में बताया कि उन्होंने अपनी समस्त सम्पत्ति शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु दान कर दी थी। एवम् 27 बार डॉ. राधाकृष्णन को नोबेल पुरस्कार के लिए नामित किया गया था । राज्यस्तर पर सम्मानित शिक्षकों के चयन में पूर्ण निष्पक्षता एवम् पारदर्शिता के साथ ब्लॉक स्तर पर 1074 जिला स्तर पर 150 एवम् राज्य स्तर पर 145 कुल मिलाकर 1369 शिक्षकों को उनकी उपलब्धियों के लिए सम्मानित करने का निर्णय लिया गया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष माननीय शिक्षामन्त्री महोदय श्रीमान मदन दिलावर ने अपने उद्बोधन में समस्त गुरुजन को बधाई दी। माननीय ने कहा ''स्वामी विवेकानन्द को रामकृष्ण परमहंस और वीर शिवाजी को समर्थ गुरु रामदास ने घड़ा था। इसी परम्परा का निर्वहन करते हुए आप समस्त गुरुजन की परम्परा ने हमारे महामहिम और प्रधानमन्त्री को भी शिक्षा प्रदान की है । अत: शिक्षक समाज की दशा और दिशा बदलने में सक्षम होता है ।'' माननीय ने बताया कि राज्य सरकार के 7 करोड़ पौधे लगाकर पेड़ बनाने के क्रम में 2.50 करोड़ पौधे केवल शिक्षा विभाग ने लगाए हैं । इस प्रकार सत्रारम्भ में 5 जुलाई को सभी विद्यार्थियों को 3 करोड़ 58 लाख पाठ्य-पुस्तकों का वितरण किया गया एवम् शाला स्वास्थ्य कार्यक्रम के माध्यम से बालकों का बचपन स्वस्थ, मस्त बनाने के प्रयास की जानकारी दी । माननीय ने घुमन्तू जातियों की चर्चा कर आजादी में उनके योगदान पर प्रकाश डाला। माननीय ने घुमन्तू जातियों के योगदान को नमन करते हुए 2 अक्टूबर को इन्हें आवास उपलब्ध करवाने की जानकारी दी एवम् शिक्षा-विभाग के कार्यों और विद्यालयों में होने वाली उत्तरोतर शैक्षिक- सहशैक्षिक प्रगति पर सन्तोष व्यक्त किया।

राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान कार्यक्रम में सम्मानित मंच द्वारा शिक्षक सम्मान पुस्तिका और शिविरा पत्रिका के 'शिक्षक दिवस विशेषांक' का विमोचन किया गया । इसी क्रम में हरियालो राजस्थान का वर्ल्ड रिकॉर्ड प्रमाणपत्र श्रीमान प्रथम भल्ला द्वारा माननीय मुख्यमन्त्री राजस्थान सरकार को सौंपा गया।

अत्यन्त संवेदनशील हृदयस्पर्शी वातावरण में माननीय मुख्यमन्त्री महोदय श्री भजनलाल शर्मा ने विद्यालय में प्रथम प्रवेश देने वाले स्वयं के गुरु जिन्होंने उनको 'पाटी पूजन' करवाया था को प्रणाम कर उनको स्वयं के बराबर मंच पर बैठा कर सम्मानित किया । माननीय मुख्यमन्त्री के गुरु सेवानिवृत अध्यापक भरतपुर जिले की नदबई तहसील के छोटे से गाँव शाहपुरा के श्री शिवशंकर लाल शर्मा हैं । जिन्होंने उन्हें विद्यालय में प्रथम कक्षा में प्रवेश दिया था।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय मुख्यमंत्री महोदय श्री भजनलाल शर्मा ने अपने उद्बोधन में समस्त सम्मानित शिक्षकों सहित वी.सी. के माध्यम से प्रत्येक जिले व पंचायत के गुरुजन एवम् स्वयं को ''पाटी पूजन'' करवाने वाले गुरुजी का अभिनंदन एवम् नमन किया।

माननीय ने विद्यालय के प्रथम प्रवेश की पुरानी यादों को ताजा करते हुए कहा कि पहले घर वाले बालक के प्रथम बार विद्यालय जाने पर गुड़ के रूप में मिठाई बांटते थे। गुरुजी का बालक के साथ सीधा सम्पर्क होता था। बालकों के मन में बुजुर्गों के प्रति संवेदना होती थी। बदलते दौर में हमें अपने विद्यार्थियों में उन नैतिक मूल्यों का सृजन करना है।''

माननीय ने बताया कि 750 विद्यालयों की बिल्डिंग मरम्मत के लिए बजट में 100 करोड़ एवम् विद्यार्थियों की सुविधा के लिए लैब, कक्षा-कक्ष एवम् पुस्तकालय व शौचालय हेतु 350 करोड़ की राशि का प्रावधान किया है । सरकार मेधावी विद्यार्थियों को मुफ्त इंण्टरनेट के साथ टेबलेट भी वितरण कर रही है। 50 नये उच्च प्राथमिक विद्यालय और 100 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में नये विषयों की शुरुआत भी की गयी है । विद्यार्थी स्वस्थ रहे इसके लिए चिकित्सा विभाग द्वारा 80 लाख विद्यार्थियों का स्वास्थ्य सर्वे कराया गया है । अच्छे खिलाड़ी राज्य में तैयार हो इस हेतु 250 करोड़ रुपये की लागत से महाराणा स्पोर्टस यूनिवर्सिटी का प्रावधान किया गया है । सरकार प्रतिबद्ध है कि इन सम्पूर्ण कार्यक्रमों से कर्मशील शिक्षकों की मशाल जलती रहे । राजथान सरकार का प्रत्येक कदम आपके हित एवम् राजस्थान निर्माण के लिए होगा।

माननीय मुख्यमन्त्री महोदय ने बताया कि स्वच्छता के क्षेत्र में भी प्रदेश में जागरुकता बढ़ी है। इसी प्रकार लिंगानुपात के अन्तर को दूर करने के लिए 'बेटी बचाओ-बेटी पढाओ' व पर्यावरण के क्षेत्र में माननीय प्रधानमन्त्री महोदय के आह्वान पर 'हरियालो राजस्थान' हमारे सफल कार्यक्रम हैं।

अन्त में माननीय मुख्यमन्त्री महोदय ने कहा कि ''समाज में हमारे गुरु की भूमिका अलग है। समाज में गुरू का विश्वास और मान्यता है। शिक्षक सामाजिक सरोकारों में हमेशा सहभागी रहते है। अतः आपका योगदान श्रेष्ठ है।''

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी शिक्षकों के चयन में पूर्ण पारदर्शिता व गोपनीयता बरती गयी है। इस हेतु कुल 145 शिक्षकों का सम्मान किया गया है जिनकी सूची निम्न प्रकार है -

1. रामसुख लाल मालाकार, प्रबोधक स्तर 1
   राजकीय प्राथमिक विद्यालय फामड़ो की ढाणी, भादूं, किशनगढ़, अजमेर
2. अमर सिंह, शिक्षक स्तर-2
   राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल माला आरेन, अजमेर
3. सत्येन्द्र सिंह नाथावत, प्रिंसिपल एवं समकक्ष
   राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल सांडोलिया आरैण, अजमेर

4. दिनेश कुमार सैनी, शिक्षक स्तर-1
राउप्रावि बदला राजगढ़, अलवर
5. कैलाश चंद मीना, शिक्षक स्तर-2
राउप्रावि कल्याणपुरा रेनी, अलवर
6. मनीषा, व्याख्याता
एमजीजीएस नौगाँव रामगढ़, अलवर
7. भीम सैन, शिक्षक स्तर-1
राप्रावि 11एएस श्रीविजयनगर, अनूपगढ़
8. अजीत कुमार सिंह, प्रबोधक शारीरिक शिक्षक
राउप्राविएस 4जीबी श्रीविजयनगर,अनूपगढ़
9. कुलदीप सिंह, वरिष्ठ शिक्षक
एमजीजीएस रावला मंडी घरासना, अनूपगढ़
10. घेवर राम, शिक्षक स्तर-1
राजकीय सीनियर सैकंडरी स्कूल दाखां सिणधरी, बालोतरा
11. श्री धर शर्मा, शिक्षक स्तर-2
राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय जीराउप्राविएस अंबो का बड़ा समदड़ी, बालोतरा
12. ओम प्रकाश, व्याख्याता
राजकीय माध्यमिक विद्यालय मालियों का बेरा भीमगोड़ा सिवाना, बालोतरा
13. जैकी जोशी, शिक्षक स्तर-1
राप्रावि होलीफला घाटोल, बांसवाड़ा
14. दिलीप कुमार प्रजापति, शिक्षक स्तर-2
राउमावि रूपारेल, बांसवाड़ा
15. महिपाल सिंह चारण, प्रिंसिपल एवं समकक्ष
डॉ. भीमराव अम्बेडकर सरकार बालिका आवासीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल खोडन गढ़ी, बांसवाड़ा
16. पारस बाई मीना, शिक्षक स्तर-1
राउप्रावि हरिपुरा, बारां
17. राकेश कुमार मीना, वरिष्ठ शिक्षक
एसवीजीएमएस अंता, बारां मांगरोल, बारां
18. सत्यनारायण शर्मा, वरिष्ठ शिक्षक
राउमावि कडैयाछत्री छबड़ा, बारां
19. रामलाल, शिक्षक स्तर-1
राउप्रावि सनावड़ा खुर्द गुड़ामालानी, बाड़मेर
20. मोहनलाल बिश्नोई, शिक्षक स्तर-2
राउमावि सोनारी सेडवा, बाड़मेर
21. किशना राम सियाग, वरिष्ठ शिक्षक
राउमावि पानणियों का तला छोटून, बाड़मेर
22. प्रकाश बकरेचा, शिक्षक स्तर-1
राउप्रावि शिवपुरा टूकडा जैतारण, ब्यावर
23. अमर जीत सिंह, शिक्षक स्तर-2
राउप्रावि पटेलों की ढाणी आसरलाई जैतारण, ब्यावर
24. ओम प्रकाश भाटी, वाइस प्रिंसिपल
राउमावि फलका जैतारण, ब्यावर
25. रूपनारायण, शिक्षक स्तर-1
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय बझेरा नदबई, भरतपुर
26. मुकेश कुमार, वरिष्ठ शिक्षक
राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल खानुआ रूपवास, भरतपुर
27. आशीष जिंदल, प्रिंसिपल एवं समकक्ष
राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल नाम नदबई, भरतपुर
28. रामू देवी खाती, शिक्षक स्तर-1
S S S S SARERI BADARO KI हुरड़ा, भीलवाड़ा
29. सीताराम बैरवा, शिक्षक स्तर-1
राउप्रावि फतेहपुरा बिजोलिया, भीलवाड़ा
30. सुरेंद्र सिंह चौहान, व्याख्याता
राउमावि बावलास मांडल, भीलवाड़ा
31. बबलेश कंवर, शिक्षक स्तर-2
राजकीय प्राथमिक विद्यालय गुल सिंह की भोम कोलायत, बीकानेर
32. मनोज कुमार, वरिष्ठ शिक्षक
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय उदासर चारणान डूंगरगढ़, बीकानेर
33. गोवर्धन राम दार्जी, वरिष्ठ शिक्षक
राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बज्जू खालसा, बीकानेर
34. कृष्णा हाडा, शिक्षक स्तर-1
राउप्रावि बलदेवपुरा, बूंदी
35. विजय मिलिंद, शिक्षक स्तर-2
राउप्रावि निमोथा के.पाटन, बूंदी
36. रमेश सिंह गुर्जर, प्रिंसिपल एवं समकक्ष
राउमावि चाड़ी के.पाटन, बूंदी
37. महेश कुमार, शिक्षक स्तर-2
जीराउमावि सोनियाणा गंगरार, चित्तौड़गढ़
38. ममता रानी शर्मा, शिक्षक स्तर-2
राउप्रावि काद्या खेड़ी कपासन, चित्तौड़गढ़
39. अभिषेक चाष्टा, व्याख्याता
एमजीजीएस अरनियापंथ, चित्तौड़गढ़
40. सुरेंद्र कुमार सारण, शिक्षक स्तर-1
महात्मा गाँधी सरकार विद्यालय दाउदसर रतनगढ़, चूरू
41. धन राज, शिक्षक स्तर-2
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय ढाणी पूनिया तारानगर, चूरू
42. पुरषोत्तम लाल, वाइस प्रिंसिपल
शहीद राजकुमार सरकार सीनियर सेकेंडरी स्कूल भैंसाली राजगढ़, चूरू
43. राम दयाल मीना, शिक्षक स्तर-1
राउप्रावि गंदलाई रामगढ़ पचवारा, दौसा
44. ममता बाई मीना, शिक्षक स्तर-2
एमजीजीएस बहरावण्डा सिकराय, दौसा
45. नरेंद्र सिंह वर्मा, व्याख्याता
राउमावि फुलेला बसवा, दौसा
46. अनुराधा शर्मा, शिक्षक स्तर-1
एमजीजीएस डीडवाना-कुचामन
47. रामनिवास, शिक्षक स्तर-2
राउमावि हीरावती लाडनूं डीडवाना-कुचामन
48. भंवर लाल, व्याख्याता
राउमावि कुचामन सिटी कुचामन डीडवाना, कुचामन
49. परशुराम, शिक्षक स्तर-2
एमजीजीएस भटपुरा नगर, डीग
50. देवेन्द्र कुमार यादव, शिक्षक स्तर-2
राजकीय जी यूपीएस पुराना बस स्टैंड मुख्य बाजार, डीग
51. मुकुट बिहारी शर्मा, प्रिंसिपल एवं समकक्ष
श्रीमती शीला जोशी राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बहज, डीग
52. गौरव बाबू शर्मा, शिक्षक स्तर-1
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय दान राजाखेड़ा, धौलपुर
53. अतुल कुमार चौहान, वाइस प्रिंसिपल
राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल

विपरपुर, धौलपुर
54. चन्द्र प्रकाश टेलर, शिक्षक स्तर-1
महात्मा गाँधी सरकार स्कूल मोजमाबाद मौजमाबाद, डुडू
55. मुकेश चौधरी, शिक्षक स्तर-2
महात्मा गाँधी सरकार स्कूल सखुन, दुदु
56. हनुमान प्रसाद चौधरी, वरिष्ठ शिक्षक
महात्मा गाँधी सरकार स्कूल मंगलवाड़ा मौजमाबाद, दूदू
57. सुनील कुमार जोशी, शिक्षक स्तर-1
राप्रावि क्यावरी सबला, डूंगरपुर
58. नरेश कुमार लवोत, वरिष्ठ शिक्षक
एमजीजीएस चित्री नवीन गलियाकोट, डूंगरपुर
59. दीपिका जोशी, प्रिंसिपल एवं समकक्ष
सुखदेव भाई राउमावि पुनाली दोवड़ा, डूंगरपुर
60. मनोज कुमार मीना, शिक्षक स्तर-1
राप्रावि वार्ड नंबर टोडाभीम, गंगापुर सिटी
61. सुनीता चौधरी, शिक्षक स्तर-2
राउप्रावि मेरेडा टोडाभीम, गंगापुर सिटी
62. शिवकेश मीना, प्रिंसिपल एवं समकक्ष
राउमावि करेरी टोडाभीम, गंगापुर सिटी
63. अंजू वर्मा, शिक्षक स्तर-2
राउमावि 6 एचएलएम पीलीबंगा, हनुमानगढ़
64. विनोद कुमार, शारीरिक शिक्षा शिक्षक
राउप्रावि लांबीढाब संगरिया, हनुमानगढ़
65. सोहन लाल भांभू, व्याख्याता
राउमावि पीरकामड़िया टिब्बी, हनुमानगढ़
66. मधु सिंह चौहान, शिक्षक स्तर-1
जीराउप्राविएस अवधपुरी जयपुर पश्चिम, जयपुर
67. लक्ष्मण सिंह सीनियर, वरिष्ठ शिक्षक
एमजीजीएस मानसरोवर जयपुर पश्चिम, जयपुर
68. कमल सिंह शेखावत, वरिष्ठ शिक्षक
राउमावि चारण नाडी 2 झोटवाड़ा सिटी, जयपुर
69. दीपक कुमार शर्मा, शिक्षक स्तर-1
गुप श्रीकिशनपुरा सांगानेर सांगानेर ग्रामीण, जयपुर ग्रामीण
70. सीता राम मीना, प्रिंसिपल एवं समकक्ष
राउमावि नयावास जमवारामगढ़, जयपुर ग्रामीण
71. गिरधारी लाल मीना, प्रिंसिपल एवं समकक्ष
राउमावि नोनपुरा जवारमगढ़, जयपुर ग्रामीण
72. भवानी सिंह, शिक्षक स्तर-1
राउप्रावि राठौड़ा पोकरण, जैसलमेर
73. मतलूब खान, वरिष्ठ शिक्षक
राउमावि रिवड़ी फतेहगढ़, जैसलमेर
74. जेता राम सुथार, व्याख्याता
साहिद उम्मेद सिंह राउमावि बडोदा गाँव, जैसलमेर
75. जीतेंद्र कुमार शर्मा, शिक्षक स्तर-2
महात्मा गाँधी सरकार स्कूल रेबारियों की ढाणी भीनमाल, जालोर
76. संदीप जोशी, व्याख्याता
राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल रेवत, जालोर
77. संगीता वर्मा, शिक्षक स्तर-1
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय ठुंगनी झालारापाटन, झालावाड़
78. मधुबाला शर्मा, वरिष्ठ शिक्षक
राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल डूंगरगाँव झालारापाटन, झालावाड़
79. लाल चंद सोनी, वाइस प्रिंसिपल
राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल बेदला डीजी, झालावाड़
80. बबीता कुमारी, प्रिंसिपल एवं समकक्ष
राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल आबूसर, झुंझुनूं
81. सुभाष चंद्रा, वरिष्ठ शिक्षक
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय पिठाना जोहार सूरजगढ़, झुंझुनूं
82. अनूप कुमार, वरिष्ठ शिक्षक
सेठ रघुनाथ प्रसाद पोद्दार जी राउमावि अजारी कलां जेजेएन, झुंझुनूं
83. महेश कुमार भाटी, शिक्षक स्तर-2
एमजीजीईएस, अंबेडकर कॉलोनी, कालीबेरी, जोधपुर, जोधपुर शहर
84. महेंद्र कुमार मीना, शिक्षक स्तर-1
राजकीय प्राथमिक विद्यालय बागणियों की ढाणी पाबूसर शेरगढ़, जोधपुर ग्रामीण
85. मुकेश व्यास, वरिष्ठ शिक्षक
राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल धींगाणा लूणी, जोधपुर ग्रामीण
86. मदन सिंह, व्याख्याता
राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल सुवालिया शेरगढ़, जोधपुर ग्रामीण
87. प्रीती शर्मा, शिक्षक स्तर-1
महात्मा गाँधी सरकार विद्यालय हिण्डौन सिटी हिण्डौन, करौली
88. मुकेश चंद गुप्ता, वरिष्ठ शिक्षक
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय अरेनिया का पुरा हिण्डौन करौली
89. अमित कुमार शर्मा, व्याख्याता
स्वामी विवेकानन्द सरकार मॉडल स्कूल, करौली
90. महेश कुमार पारीक, शिक्षक स्तर-1
राउप्रावि सूरजपुरा सरवर, केकड़ी
91. नरेश पारीक, शिक्षक स्तर-1
राउप्रावि तेलाड़ा भिनाई, केकड़ी
92. रामस्वरूप जांगिड़, वरिष्ठ शिक्षक
राउमावि करंती भिनाई, केकड़ी
93. मनोज कुमार आर्य, शिक्षक स्तर-1
राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल मीरका किशनगढ़ बास, खैरथल-तिजारा
94. अनिता देवी, शिक्षक स्तर-2
राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल शेखपुर किशनगढ़ बास, खैरथल-तिजारा
95. रजनीश कुमार कौशिक, वरिष्ठ शिक्षक
राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल रडवा मुंडावर, खैरथल-तिजारा
96. सुखबीर पंकज, शिक्षक स्तर-1
राजकीय प्राथमिक विद्यालय नियाना सांगोद, कोटा
97. पद्मा राठौड़, प्रबोधक शारीरिक शिक्षक
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय डाबर सुल्तानपुर, कोटा
98. पुष्प चंद मीना, वरिष्ठ शिक्षक
राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल शाहनावाड़ा, कोटा
99. रेनू कुमारी, शिक्षक स्तर-1
राउप्रावि नारेडा कलां बहरोड़ कोटपूतली-बहरोड़
100. भवानी सिंह यादव, वरिष्ठ शिक्षक
राउप्रावि बांका कोटपुतली-बहरोड़
101. हितेश कुमार सैनी, व्याख्याता

राउमावि नाथूसर बांसुर, कोटपूतली-बहरोड़

102. मोहन राम गोदारा, वरिष्ठ प्रबोधक राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय रामदेवजी का गला पोटलिया मांजरा, नागौर
103. हरिओम तिवारी, शिक्षक स्तर-2 महात्मा गाँधी सरकार विद्यालय कसनाऊ मुंडवा, नागौर
104. अशोक फिरोदा, व्याख्याता राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल ईनाणा मुंडवा, नागौर
105. उमेश कुमार शर्मा, शिक्षक स्तर-2 राजकीय सेनाध्यक्ष माध्यमिक विद्यालय मानगढ़ अजीतगढ़, नीमकाथाना
106. अमरजीत सिंह, वरिष्ठ शिक्षक स्वतंत्रता सेनानी नेतराम सिंह शासकीय कन्या सेकंडरी विद्यालय गोरिर खेतड़ी, नीमकाथाना
107. हंसराम यादव, वरिष्ठ शिक्षक स्वतंत्रता सेनानी नेतराम सिंह शासकीय कन्या सेकंडरी। विद्यालय गोरिर खेतड़ी, नीमकाथाना
108. सुमन हल्किया, शिक्षक स्तर-2 राजकीय प्राथमिक विद्यालय नंबर 4 सोजत सिटी, सोजत पाली
109. मदाराम पंवार, वरिष्ठ शिक्षक राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय गुडा सोनिगरा, पाली
110. राजीव कुमार, वरिष्ठ शिक्षक राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल मादड़ी, पाली
111. महिपाल बिश्नोई, शिक्षक स्तर-1 राउमावि नयासरा कलौ देचू, फलोदी
112. कँवर लाल, वरिष्ठ शिक्षक राउमावि देचू, फलोदी
113. ओम प्रकाश, वरिष्ठ शिक्षक राउमावि उर्फ भाटियान, फलोदी
114. सुरेश चंद्र ढोली, शिक्षक स्तर-1 थाना छायन सुहागपुरा, प्रतापगढ़
115. योगेश कुमार, शिक्षक स्तर-2 एमजीजीएस धरियावद, प्रतापगढ़
116. राजदीप दाधीच, वरिष्ठ शिक्षक राउमावि पिथलवाडी छोटीसादड़ी, प्रतापगढ़
117. विक्रम सिंह शेखावत, शिक्षक स्तर-2 राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मावा का गुड़ा कुम्भलगढ़, राजसमंद
118. राजेंद्र सिंह चूंडावत, शिक्षक स्तर-2 राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल लाइकी आमेट, राजसमंद
119. नरेंद्र सिंह चौहान, व्याख्याता श्रीमती बादाम बाई उदय लाल सियाल सरकार सीनियर सेकेंडरी स्कूल गुडला खमनोर, राजसमंद
120. नरेंद्र कुमार भट्ट, शिक्षक स्तर-1 राप्रावि अंगारी फला, सलूंबर
121. रमेश चंद्र पटेल, शिक्षक स्तर-2 राउप्रावि बंदोली सारड़ा, सलूंबर
122. हितपाल सिंह, वरिष्ठ शिक्षक राउमावि बड़ी विरवा झल्लारा, सलूंबर
123. जगदीश कुमार, शिक्षक स्तर-1 राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय वासन चौहान, सांचौर
124. मांगीलाल खिलेरी, वरिष्ठ शिक्षक राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय किलूपिया सरनाऊ, सांचौर
125. लाला राम, व्याख्याता राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय डेटा सरनाऊ, सांचौर
126. सुनील कुमार वर्मा, शिक्षक स्तर-1 महात्मा गाँधी सरकार स्कूल खेड़ा बौंली, सवाई माधोपुर
127. तेज सिंह, शारीरिक शिक्षा शिक्षक राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय लोदीपुरा, सवाई माधोपुर
128. ओम प्रकाश मीना, शिक्षक स्तर-2 स्वामी विवेकानन्द सरकार मॉडल स्कूल, सवाई माधोपुर, एस. माधोपुर, सवाई माधोपुर
129. मधु बाला शर्मा, शिक्षक स्तर-1 राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल, शाहपुरा
130. ममता राजावत, वाइस प्रिंसिपल वीर माता माणिक कंवर सरकार कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, शाहपुरा
131. शबनम भरतिया, शिक्षक स्तर-1 राप्रावि नंबर फतेहपुर, सीकर
132. राजेंद्र सिंह, वरिष्ठ शिक्षक राउमावि भैनरूपुरा लक्ष्मणगढ़ सीकर
133. किशन लाल सियाक, वरिष्ठ शिक्षक राउमावि टोडीमाधोपुरा बागरियों की ढाणी पिपराली, सीकर
134. छगन लाल, शिक्षक स्तर-1 जीजीएसएस संतपुर आबूरोड, सिरोही
135. क्षेत्र प्रताप सिंह, शारीरिक शिक्षा शिक्षक राउप्रावि अवधी, सिरोही
136. भरत कुमार राजपुरोहित, व्याख्याता जीजीएसएस रोहिड़ा पिंडवाड़ा, सिरोही
137. हंसराज, शिक्षक स्तर-1 राउप्राविएस 6 एनएन पदमपुर, श्रीगंगानगर
138. राकेश कुमार, वरिष्ठ शिक्षक राउप्रावि 9 ए छोटी गंगानगर, श्रीगंगानगर
139. जगदीश राम, व्याख्याता राउमावि बारिंगन करणपुर, श्रीगंगानगर
140. मोहन लाल गुर्जर, शिक्षक स्तर-1 राउप्रावि जयकिशनपुरा पीपलू, टोंक
141. भंवर लाल वैष्णव, शिक्षक स्तर-2 राउमावि चांदली देवली, टोंक
142. कृतिका शर्मा, प्रिंसिपल एवं समकक्ष जीराउमावि सिदरा निवाई, टोंक
143. चेतन देवासी, शिक्षक स्तर-1 राप्रावि चावड़ावास सायरा, उदयपुर
144. किशन सोनी, शारीरिक शिक्षा शिक्षक राउप्रावि कालारोही गिरवा, उदयपुर
145. गणेश लाल कलाल, व्याख्याता राउमावि डाकन कोटड़ा गिरवा, उदयपुर

पुरस्कृत शिक्षकों को प्रमाणप्रत्र - ताम्रपत्र शॉल एवम् 1000 रूपये की राशि नकद प्रदान की गयी।

अन्त में निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर श्री आशीष मोदी ने समारोह में पधारे समस्त अतिथियों, सम्मानित होने वाले शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, मीडिया कर्मियों, आयोजकों एवं अन्य सभी सहयोगियों व शिक्षकों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ किया गया।

सहायक निदेशक
शिविरा प्रकाशन अनुभाग
माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर
मो. 9950 956577

रपट 28वाँ राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह-2024

❒ महेन्द्र कुमार जैन

वह धन्य देश की माटी है,
जहाँ भामाशाह सा लाल पला।
उस दानवीर की यश गाथा को
मिटा सके क्या काल भला।।

हमारा प्रदेश प्राचीन काल से अपने अद्वितीय त्याग समर्पण व दान के लिए सदैव अग्रणी रहा है। धर्म और संस्कृति की रक्षा करने वाले कई दानदाताओं ने इस भूमि को मन से सींचा है। ऐसे दानदाताओं को भामाशाह नाम देकर अभिनंदन करने की संस्कृति हमारे यहाँ हैं। उस कड़ी में शिक्षा विभाग व राजस्थान सरकार जयपुर के निर्देशन में और कार्यालय संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा उदयपुर संभाग की मेजबानी में दिनांक 1 सितंबर 2024 को मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के स्वामी विवेकानंद सभागार में 28वां राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह आयोजित हुआ। जिसमें प्रदेश के एक करोड़ से अधिक दान देने वाले 31 भामाशाहों को शिक्षा विभूषण तथा एक करोड़ से कम की राशि का दान करने वाले 126 भामाशाहों को शिक्षा भूषण एवं भामाशाहों को दान के लिए प्रेरित करने में अहम भूमिका अदा करने वाले 87 प्रेरकों को भी सम्मानित किया गया। विवेकानंद सभागार में आयोजित राज्य स्तरीय समारोह की अध्यक्षता जनजाति विकास मंत्री बाबूलाल खराड़ी द्वारा की गई। मुख्य अतिथि के रूप में शिक्षा मंत्री महोदय श्रीमान् मदन दिलावर उपस्थित थे। साथ ही विशिष्ट अतिथि के रूप में उदयपुर शहर विधायक श्री ताराचंद जैन भी उपस्थित थे। साथ ही सांसद महोदय श्रीमान् मन्नालाल रावत, विधायक चुन्नीलाल गरासिया, फूल सिंह मीणा, प्रताप लाल गमेती, जिला प्रमुख ममता कुंवर, मेयर गोविंद सिंह का आतिथ्य प्राप्त हुआ। विभागीय प्रतिनिधि के रूप में शिक्षा सचिव श्रीमान कृष्ण कुणाल, निदेशक माध्यमिक शिक्षा श्रीमान् आशीष मोदी, प्रारंभिक शिक्षा निदेशक श्रीमान् सीताराम जाट, माननीय राज्य परियोजना निदेशक श्रीमान् अविचल चतुर्वेदी उपस्थित थे। शहर व प्रदेश के कई गणमान्य अतिथि एवं भामाशाहों के परिजन भी उपस्थित थे। संयुक्त निदेशक के नेतृत्व में उदयपुर संभाग की टीम द्वारा श्रेष्ठतम तैयारी को अंजाम दिया गया मंगलाचरण व मेहमानों के स्वागत के साथ कार्यक्रम का आगाज हुआ। जिसके तहत मेवाड़ी पगड़ी व गुलदस्ते से मेहमानों का स्वागत किया गया पर्यावरण संरक्षण का ख्याल रखते हुए, पूरे आयोजन को प्लास्टिक से मुक्त रखने का प्रयास किया गया।

जनजाति विकास मंत्री श्रीमान् बाबूलाल खराड़ी ने अपने उद्बोधन में दान की महिमा का गान करते हुए सभी भामाशाहों का अभिनंदन किया। माननीय शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने भी पर्यावरण संरक्षण, वृक्षारोपण, प्लास्टिक उपयोग प्रतिबंध, शीतकालीन अवकाश परिवर्तन, गौ माता की सेवा व भारतीय संस्कारों के आदर्श मूल्यों की आवश्यकता पर सभी का ध्यान आकर्षित किया। साथ ही माननीय मुख्यमंत्री ने सभी भामाशाहों को यह आश्वासन दिया कि आपके द्वारा दान किए गए एक-एक पैसे का सदुपयोग होगा। हरियालो राजस्थान के तहत गिनीज बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड की प्रति भी सर्वप्रथम विभाग को सम्मान स्वरुप भेंट की गयी।

समारोह में शिक्षा विभूषण से पुरस्कृत मुख्य एवं प्रथम भामाशाह न्यूक्लियर पावर कॉरपोरेशन ऑफ़ इंडिया लिमिटेड रावतभाटा राजस्थान साइट श्री सुनील गाडगिल की तरफ से धौलपुर, करौली, चित्तौड़गढ़ 12 जिलों के राजकीय विद्यालयों में भौतिक विकास हेतु 14 करोड़ 11 लाख 58 हज़ार रुपये की राशि प्रदान की गई। वहीं दूसरे नंबर पर चंबल फर्टिलाइजर्स एंड केमिकल्स लिमिटेड श्री विकास भाले द्वारा कोटा व बांरा जिले के राजकीय विद्यालय में भौतिक विकास हेतु आठ करोड़ 73 लाख 15 हज़ार रुपए की राशि प्रदान की गई। श्री कुमार जय मोदी मेडिसिन चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा भी राजकीय महाविद्यालय फतेहपुर सीकर में कॉलेज निर्माण हेतु 8 करोड़ 50 लाख रुपए की राशि दान की गई। इस प्रकार कुल 31 शिक्षा विभूषण एवं 126 शिक्षाभूषण सम्मान से भामाशाहों को पुरस्कृत किया गया। सत्र 2023-24 में इन 157 भामाशाहों से 138 करोड़ 22 लाख और 13 हजार 952 रुपए की राशि दान स्वरूप शिक्षा विभाग को प्राप्त हुई है। इस सहयोग के लिए सभी भामाशाह एवं प्रेरक धन्यवाद के पात्र हैं।

राज्य भामाशाह पुरस्कार का शुभारंभ सन 1995 में तत्कालीन मुख्यमंत्री भैरो सिंह शेखावत द्वारा किया गया। तब से लेकर प्रतिवर्ष जयपुर मुख्यालय में भामाशाह सम्मान समारोह का आयोजन किया जा रहा है। 27 वर्षों में प्रथम अवसर था, जब यह समारोह राजधानी की बजाय भामाशाह की कर्मभूमि उदयपुर में आयोजित किया गया। उदयपुर शिक्षा विभाग के संयुक्त निदेशक महेंद्र जैन और उपनिदेशक नरेंद्र टांक एवं मांगीलाल जी मेनारिया के निर्देशन में विभिन्न समितियां बनाकर इस समारोह के सफलतम आयोजन के लिए श्रेष्ठ प्रयास किए गए। आयोजन के उपरांत मंत्रीगण एवं अधिकारियों द्वारा उदयपुर शिक्षा विभाग के इस सराहनीय प्रयास की प्रशंसा की गई। कार्यक्रम का संचालन डॉ. ज्योति एवं डॉ. नीना शर्मा द्वारा किया गया। कार्यक्रम का समापन राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भोपालपुरा की छात्राओं द्वारा राष्ट्रगान से किया गया।

संयुक्त निदेशक, उदयपुर
मो. 9413953709

शिक्षा विभूषण सम्मान से सम्मानित भामाशाहों की सूची

क्र.सं.	भामाशाह	राशि रूपये में
1.	न्यूक्लियर पावर कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड रावतभाटा राजस्थान साइट	141157824
2.	चंबल फर्टिलाइजर्स एंड केमिकल्स लिमिटेड	87315021
3.	मोडिसन चैरिटेबल ट्रस्ट	85000000
4.	टेम्पल बोर्ड नाथद्वारा	69700000
5.	क्यूआरजी फाउंडेशन	57194793
6.	गौतम आर. मोरारका	37825174
7.	एस एम सहगल फाउंडेशन	35185567
8.	हल्दीराम एजुकेशनल सोसायटी	34413616
9.	जीव जतन जन कल्याण ट्रस्ट	27500000
10.	श्री गोपाल राठी	26300000
11.	हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड	21531777
12.	रवीन्द्र हेरियस प्राइवेट लिमिटेड	21258983
13.	नटवर लाल पुरोहित	20515499
14.	शंकर लाल पितलिया	20122196
15.	हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड कायद माइंस	18042000
16.	एचडीएफसी बैंक लिमिटेड	17352203
17.	आरएचआई मैग्नेसिटा इंडिया लिमिटेड	16070027
18.	जिंक स्मेल्टर देबारी	15322098
19.	वंडर सीमेंट लिमिटेड	14830975
20.	जयपुर राउंड टेबल	13221000
21.	उदयपुर राउंड टेबल ट्रस्ट	11910800
22.	एचजी इंफ्रा इंजीनियरिंग लिमिटेड	11595037
23.	इंडिया इन्फोलाइन फाउंडेशन	11503381
24.	हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड	11431765
25.	दिव्या खंडेलवाल पत्नी आलोक खंडेलवाल	10890696
26.	मोज़ेक इंडिया प्राइवेट लिमिटेड	10844000
27.	मोतीलाल रायचंद	10630000
28.	साउथ वेस्ट माइनिंग लिमिटेड	10520483
29.	मयूर यूनिकोटर्स लिमिटेड	10481354
30.	चोकसी हेरियस प्राइवेट लिमिटेड	10199043
31.	बालचंद मोतीराम शर्मा	10000000

शिक्षा भूषण सम्मान से सम्मानित भामाशाहों की सूची

32.	आईपीसीए फाउंडेशन	9449678
33.	होंडा इंडिया फाउंडेशन	8641425
34.	विवेक गुप्ता	8328000
35.	कजरिया सिरेमिक्स लिमिटेड	7795494
36.	अरविंद पन्नालाल राणावत	7670000
37.	डीसीएम श्रीराम फाउंडेशन	7456000
38.	बीकानेर राउंड टेबल	7230000
39.	केयर्न फाउंडेशन	7120000
40.	जागृति	6603670
41.	आर एन नोवाल फाउंडेशन	6529400
42.	श्री सीमेंट लिमिटेड	6422932
43.	श्रीराम पिस्टन एंड रिंग्स लिमिटेड	6176000
44.	पुष्कर दत्ता तिवारी	6081386
45.	सेंट गोबेन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड ग्लास बिजनेस	6066520
46.	प्रफुल पन्नालाल राणावत	6018000
47.	जयपुर पिंकसिटी राउंड टेबल	6011022
48.	अल्ट्राटेक सीमेंट लिमिटेड यूनिट बिड़ला व्हाइट	5966500
49.	जेएसडब्ल्यू सीमेंट लिमिटेड	5960715
50.	रोटरी क्लब जयपुर मिड टाउन	5843543
51.	नागरिक विकास समिति सांभर झील	5827184
52.	महेश्वरी टी कंपनी लिमिटेड	5823956
53.	मांगी लाल	5800000
54.	कमली	5700000
55.	हरिप्रसाद बुधिया	5525915
56.	गोपाली	5500000
57.	आदित्य सीमेंट वर्क्स	5306000
58.	हरदत्तराय बालाबक्स बियानी चैरिटेबल ट्रस्ट	5202581
59.	सुरेंद्र कुमार यादव	5117000
60.	अंबुजा सीमेंट फाउंडेशन	5108290
61.	बाबू लाल	5100000
62.	लक्ष्मण भाई सोहनलाल खत्री	5100000
63.	प्रमोद कुमार रूंगटा	5100000
64.	मालाराम	5062000
65.	जी पी प्रोजेक्ट्स लिमिटेड	4963325
66.	टाटा ब्लूस्कोप स्टील प्राइवेट लिमिटेड	4912250
67.	उदयपुर लेकसिटी राउंड टेबल ट्रस्ट	4900000
68.	जोधपुर ब्लूज़ राउंड टेबल	4866217
69.	श्रीमती रचना मालगट्टी तिवाड़ी पत्नी राजेंद्र ब्राह्मण	4804906
70.	रणजीतमल संतोकचंद सोट्टानी	4781000
71.	शीला देवी	4752250
72.	एसके फाउंडेशन	4752096
73.	एसआरएफ फाउंडेशन	4711369
74.	जयपुर ज्वेलसिटी राउंड टेबल चैरिटेबल ट्रस्ट	4691450
75.	अंत्योदय फाउंडेशन	4616138
76.	स्वधर्म फाउंडेशन	4460491

77.	जयपुर हेरिटेज राउंड टेबल	4408652
78.	प्रताप सिंह	4038103
79.	रमेश कुमार जैन	4000000
80.	बी एल इंफ्रा प्रोजेक्ट्स प्राइवेट	3872005
81.	नॉमेट इंडिया प्राइवेट लिमिटेड	3675600
82.	नया सवेरा सोसायटी	3630000
83.	कैलाश चंद बंसलफ	3579594
84.	रामअवतार मूलचंद चैरिटेबल ट्रस्ट	3565000
85.	यूनिवर्सल हेल्थ फाउंडेशन	3519677
86.	श्री बल्लभ शर्मा	3509000
87.	ब्रिलियो	3508901
88.	किर्नोवा कैपिटल प्राइवेट लिमिटेड	3505042
89.	कस्तूरचंद भवरलाल जैन	3450000
90.	राकेशकुमार कस्तूरचंद जैन	3445000
91.	सरिता सोमानी तापड़िया	3410000
92.	एबीसीआई इंफ्रास्ट्रक्चर प्राइवेट लिमिटेड	3371000
93.	बलवंत सिंह राठौड़	3348044
94.	भामाशाह सेठ राधेश्याम चौधरी मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट	3335986
95.	ईश्वर सिंह	3300500
96.	संतोष सोमानी	3263000
97.	नेमी चंद तोषनीवाल	3215000
98.	रोटरी क्लब ऑफ जोधपुर	3204600
99.	पवन कुमार अग्रवाल	3200000
100.	बाबूलाल मीणा	3200000
101.	कंप्यूकॉम सॉफ्टवेयर लिमिटेड	3198000
102.	महिंद्रा एंड महिंद्रा लिमिटेड स्वराज डिवीजन	3197000
103.	मदनगोपाल माहेश्वरी	3135000
104.	पिंकसिटी ज्वेल हाउस प्राइवेट लिमिटेड	3134115
105.	ज्योति प्रसाद तापड़िया	3133500
106.	सुनील बिश्नोई	3100000
107.	जुगल किशोर तोषनीवाल	3100000
108.	मंजू सराफ	3080000
109.	समर्पण	3052528
110.	बीरबल एम बिश्नोई	3051000
111.	जेआरआरटी चैरिटेबल ट्रस्ट	3039562
112.	रमेश चंद्र नागर	3032670
113.	जोधपुर राउंड टेबल ट्रस्ट	3028087
114.	हरि प्रसाद अग्रवाल	3006360
115.	वीरेंद्र सिंह	3000000
116.	श्यामलाल अग्रवाल	3000000
117.	प्रदीप कुमार सराफ	3000000
118.	नर नारायण सराफ	3000000
119.	आरएक्स लोजिक्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड	2916581
120.	महिंद्रा एंड महिंद्रा लिमिटेड	2895798
121.	कआरटी चैरिटेबल ट्रस्ट	2800000
122.	प्रवीण भोपालचंद मेहता	2661000
123.	अशोक कुमार	2500000
124.	तीजा देवी	2500000
125.	पुष्प किरण यूनियन फॉर रियल एनलाइटमेंट प्योर	2414915
126.	उदयपुर मेवाड़ राउंड टेबल 349 ट्रस्ट	2400000
127.	स्वर्गीय श्रीमती भगवानी देवी भंडारी	2400000
128.	हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड	2300000
129.	शिवनाथ सिंह	2290000
130.	भारती एयरटेल फाउंडेशन	2278802
131.	उत्तमचंद केशरीमल जैन	2260000
132.	बलोदा राकेश कुमार	2250000
133.	किशन लाल शर्मा	2200000
134.	हरि राम बाना	2180200
135.	रमेश कुमार	2100000
136.	आईआईएल फाउंडेशन	2004342
137.	हरदेव सिंह घायल	2001000
138.	विनय पचीसिया	2000000
139.	हीरो मोटोकॉर्प लिमिटेड	1891608
140.	राम किशन शर्मा	1826000
141.	भंवर सिंह जोधा	1761000
142.	विपिन गोयल	1751120
143.	धत्रा राम चौधरी	1734880
144.	जवाहर लाल प्रजापत	1700000
145.	रतन चंद देसाई	1687000
146.	बिड़ला कॉर्पोरेशन लिमिटेड	1650306
147.	सुनील खेतपालिया	1650000
148.	दादा दादी शिक्षा एवं स्वास्थ्य	1629899
149.	पंडित बद्री प्रसाद महर्षि चैरिटेबल ट्रस्ट	1623990
150.	सुरेश कुमार बजाज	1600000
151.	किशनी देवी	1576970
152.	डॉ शकुंतला मीना	1551000
153.	सुरेश चंद अग्रवाल	1550000
154.	जगदीश केशरदेव कसेरा	1550000
155.	नरेंद्र एम चौधरी	1525000
156.	पिंटू सिंह राठौड़	1520000
157.	परमेश्वरी देवी अग्रवाल	1520000

प्रेरकों की सूची

1. राजबीरी देवी, चित्तौड़गढ़
2. थावर मल, सीकर
3. जगमाल गुर्जर, अजमेर
4. सुदर्शन सिंह शेखावत, झुंझुनूं
5. रमेश कुमार अग्रवाल, बीकानेर
6. वीरेन्द्र सिंह यादव, उदयपुर
7. अशोक कुमार जैन, चित्तौड़गढ़
8. भाग चंद भट्ट, अजमेर
9. श्याम लाल सुखवाल, चित्तौड़गढ़
10. इंद्रजीत सिंह, अलवर
11. पूजा हटीला, जयपुर
12. रमेश चंद्र शर्मा, जयपुर
13. बाल गोपाल शर्मा, उदयपुर
14. राकेश, नागौर
15. धनीराम यादव, अलवर
16. युवा अनस्टोपेबल, भीलवाड़ा
17. जला राम बिश्नोई, जालोर
18. मनोज कुमार शर्मा, अलवर
19. सुनीता पालीवाल, उदयपुर
20. राजेश कुमार व्यास, पाली
21. पंकज दीक्षित, जयपुर
22. ईश्वर सिंह राणावत, पाली
23. शर्मिला स्वामी, बीकानेर
24. जय प्रकाश व्यास, बाड़मेर
25. एचजी फाउंडेशन, उदयपुर
26. मोइनी फाउंडेशन, राजसमंद
27. कुलदीप कुमार व्यास, चूरू
28. दया शंकर जोशी, उदयपुर
29. हेमेन्द्र सिंह, अलवर
30. श्याम सुंदर कांकाणी, चूरू
31. वेद प्रकाश आदित्य, झुंझुनूं
32. बल्ला राम, जयपुर
33. विशाल जयशवाल, पाली
34. राम गोपाल जाट, नागौर
35. सुनीता शर्मा, जयपुर
36. राम निवास घोटिया, नागौर
37. पूनमा राम, जालोर
38. कुमुद शर्मा, जयपुर
39. डूंगा राम मेघवाल, पाली
40. भवानी शंकर शर्मा, नागौर
41. खुसी राम, अलवर
42. टीकम चंद मालाकार, जयपुर
43. सतीश चंदर शर्मा, सीकर
44. राजेश कुमार, अलवर
45. जीतेन्द्र सिंह, जालोर
46. सत्तार खान कायमखानी, नागौर
47. सीबीईओ निम्बाहेड़ा एवं स्टाफ नीतु गुप्ता, चित्तौड़गढ़
48. गिरधारी लाल मीना, जयपुर
49. रमेश शर्मा, बीकानेर
50. मीनाक्षी उपाध्याय, चूरू
51. अभय सिंह यादव, अलवर
52. सीबीईओ निम्बाहेड़ा एवं स्टाफ प्रदीप कुमार शर्मा, चित्तौड़गढ़
53. भगवती लाल सालवी, चित्तौड़गढ़
54. नरपाल सिंह, अलवर
55. निकेत कुमार, अलवर
56. लाडू राम विश्नोई, जालोर
57. विनोद कुमार, झुंझुनूं
58. सुरेश कुमार देवड़ा, पाली
59. राजीव उपाध्याय, चूरू
60. गोपाल लाल जाट, अजमेर
61. सूरज कुमारी यादव, अजमेर
62. कैलाश चन्द्र ओझा, उदयपुर
63. हरिओम सिंह, धोलपुर
64. वसुधा शर्मा, जयपुर
65. रामस्वरूप शर्मा, बीकानेर
66. नारायण लाल सैनी, जयपुर
67. रश्मी गोयल, कोटा
68. रघुवीर प्रसाद शर्मा, जयपुर
69. सीबीईओ निम्बाहेड़ा एवं स्टाफ सतीश कुमार वैष्णव, चित्तौड़गढ़
70. सुमन तोबरिया, सीकर
71. दीपेश दत्त जोशी, जयपुर
72. सायर लखीवाल, जयपुर
73. महेश चंद यादव, जयपुर
74. अनुराधा शर्मा, नागौर
75. नोराती देवी मामोदिया, जयपुर
76. सीमा अरोड़ा, जयपुर
77. महेंद्र गौतम, कोटा
78. लक्ष्मण सिंह गेहलोत, जोधपुर
79. राजेंद्र प्रसाद माहिच, झुंझुनूं
80. विक्रम श्रीवास्तव, जयपुर
81. शैलेश कुमार पंत, अलवर
82. अशोक कुमार जांगिड़, जयपुर
83. आशा राम जाट, नागौर
84. रामअवतार रावल, कोटा
85. सोहन राम जाट, जोधपुर
86. दिनेश यादव, अलवर
87. बाबूलाल सैनी, झुंझुनूं

11वीं राष्ट्र स्तरीय प्रदर्शनी और प्रोजेक्ट प्रतियोगिता

❒ भारती सिंह

इंस्पायर अवार्डस की 11 वीं राष्ट्रीय स्तर की प्रदर्शनी और परियोजना प्रतियोगिता [NLEPC - Manak [million minds augmenting national aspiration and knowledge] (राष्ट्रीय आकांक्षा और ज्ञान को बढ़ाते लाखों मस्तिष्क) का उद्घाटन 16 सितम्बर 2024 को भारत मण्डपम (प्रगति मैदान) नई दिल्ली में किया गया। देशभर के सरकारी व निजी विद्यालयों से आए हुए 350 विद्यार्थियों के नवाचार आधारित विज्ञान प्रोजेक्ट व मॉडल की प्रदर्शनी लगाई गई। प्रदर्शित नवाचारों में भारत के ग्रामीण अंचल की समस्याओं और देश की आशाओं एवं सामूहिक आकांक्षाओं के समाधान की कुंजी परीलक्षित थी। जैसे कि विकलांगो के लिए सुरक्षा उपकरण युक्त व्हील चेयर स्वच्छता उपकरण लिपाई के काम का सुचारू रूप से क्रियान्वयन, सुरक्षा उपकरण एवं ईको फ्रेंडली विविध उपकरण।

यह प्रदर्शनी अपने आप में अनूठी है क्योंकि यह न केवल युवाओं के बीच नवाचार की संस्कृति को बढ़ावा देती है बल्कि शैक्षणिक संस्थानों में एक वैज्ञानिक माहौल भी पैदा करने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है।

इंस्पायर अवार्ड- मानक योजना के अन्तर्गत समस्त राज्यों से राज्य स्तरीय प्रदर्शनी एवं प्रोजेक्ट प्रतियोगिता से चयनित विद्यार्थियों के लिए राष्ट्रीय स्तरीय प्रदर्शनी एवं प्रोजेक्ट प्रतियोगिता का आयोजन संयुक्त रूप से विज्ञान एवं प्रौद्यौगिकी विभाग, भारत सरकार एवं नेशनल इनोवेशन फाउंडेशन द्वारा किया जाती है जो चयनित विद्यार्थियो को अपने आइडिया / प्रोजेक्ट /मॉडल को राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शन के लिए एक महत्त्वपूर्ण प्लेटफार्म प्रदान करता है।

वर्ष 2022-23 के दौरान देश के सभी राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों से कुल 350 विद्यार्थियों ने अपने नवाचार पर आधारित प्रोजेक्ट और मॉडल प्रदर्शित किए । इस एनएलईपीसी से सफलता पूर्वक शीर्ष 31 में प्रवेश करने वाले विद्यार्थियों को 19 सितम्बर 2022 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में सचिव, डीएसटी, प्रो. अभय करान्दीकर द्वारा पुरस्कृत किया गया, जिसमे राजस्थान का अभूतपूर्व प्रदर्शन रहा व हमारे 05 विद्यार्थी पुरस्कृत हुए। होनहार युवा वैज्ञानिकों के नवाचारी साइंस प्रोजेक्ट मॉडल का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:-

विद्यार्थी का नाम : आहिल अली

प्रोजेक्ट का नाम : Inbuilt Fuel Protection Device

विद्यालय का नाम : सर पदमापत सिंधानिया स्कूल, कोटा

भारी वाहनों में ईधन चोरी बड़ी समस्या है। चोरी का मूल तरीका डीजल अथवा पेट्रोल टैंक के मुंह में नली या पाइप डालकर ईंधन को बाहर निकालना है । यह उपकरण मोबाइल फोन से जुड़कर एक अलार्म सिस्टम के द्वारा वाहन के मालिक को सूचित करता है।

विद्यार्थी का नाम : अनामिका यादव

प्रोजेक्ट का नाम : अभिनव सुरक्षा छड़ी

विद्यालय का नाम : महात्मा गाँधी गवर्नमेंट स्कूल, जयपुर

प्रस्तावित उपकरण विद्यार्थी द्वारा सार्वजनिक परिवहन माध्यम से विद्यालय आते समय हमलावरों द्वारा बाल शोषण किए जाने की घटना के अवलोकन से प्रभावित है। इस बहुउद्देशीय सुरक्षा छड़ी में एक बिजली का झटका उत्पन्न करने की विशेषता है, स्थिति की निगरानी और व्यक्तिगत सुरक्षा के लिए चेतावनी प्रणाली संयोजित है । यह हमलावार को दूर हटाने के लिए गैर जान लेवा झटका उत्पन्न करती है जबकि अन्तर्निहित जीपीएस वास्तविक समय में व्यक्ति की जगह की जानकारी के लिए तुरन्त आपातकालीन रिस्पोंस देता है । एक तेज चेतावनी सन्देश आस-पास के दूसरे व्यक्तियों को सम्भांवित खतरे की जानकारी देता है । यह छोटा और टिकाऊ उपकरण खासकर अकेले या अपरिचित क्षेत्रों में यात्रा करने वालों के लिए व्यक्तिगत सुरक्षा के लिए आदर्श है ।

विद्यार्थी का नाम : पल्लवी

प्रोजेक्ट का नाम: बहुउद्देशीय मिक्सर

विद्यालय का नाम : राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय दुलमाना, पीलीबंगा

बाल वैज्ञानिक पल्लवी ने इंस्पायर अवार्ड की 11वीं राष्ट्र स्तरीय प्रदर्शनी एवं प्रोजेक्ट प्रतियोगिता में बहुउद्देशीय मिक्सर को प्रस्तुत किया है । विद्यार्थी ने पारंपरिक ओखली मूसल का प्रयोग करने वाली ग्रामीण महिलाओं के हाथ और कंधों में होने वाले दर्द को कम करने के लिए एक बहुउद्देशीय मिक्सर बनाया है । यह अभिनव मिक्सर मसाले को एक साथ तोड़ और पीसकर महत्त्वपूर्ण समय और श्रम की बचत करता है। इस उपकरण में चार या पांच के संयोजन में ओखली और मूसल होते हैं और हाथों से चलाया जा सकने वाला एक हैंडल लगा होता है । इसके अलावा कुशल पिसाई के लिए इसमें एक बिजली की मोटर को लगाया जा सकता है जो ग्रामीण परिवारों के लिए एक व्यावहारिक और श्रम बचत समाधान प्रस्तुत करता है । इस नवप्रवर्तन के मार्गदर्शक शिक्षक कविता चौधरी है।

विद्यार्थी का नाम : प्रमोद

प्रोजेक्ट का नाम : बहुउद्देशीय कृषि उपकरण

विद्यालय का नाम : राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गांधीबड़ी, हनुमानगढ़

विद्यार्थी प्रमोद ने बहु उद्देशीय कृषि उपकरण 11वीं राष्ट्र स्तरीय प्रदर्शनी में प्रस्तुत किया है । इस उपकरण में एक संगीत प्रणाली है जो चुंबकीय किरणों का उत्सर्जन करती है जिसमें नीचे की ओर देखते हुए फुदकने वाले कीड़े की तरह डिजाइन किए गए पीवीसी पाइप के माध्यम से तरंगे पौधों तक पहुँचती है । निकलने वाली तरंग की ऊंचाई जमीन से लगभग 36 सेमी होती है जिससे विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक तरंगे उत्पन्न होती हैं । इस तरंगों से मिट्टी में एक रसायन मुक्त पर्यावरण तैयार होता है जो फसलों से कई प्रकार की बीमारियां समाप्त करता है । इस उपकरण में विभिन्न फसलों के लिए विशिष्ट संयोजन है जो जहरीले तत्वों को मिट्टी से कम कर फसलों को सुरक्षित रखने में सहायता करते हैं । इस प्रणाली की सहायता से किसान अपनी फसलों को विभिन्न बीमारियों से बचा कर अच्छा उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं । इसके अलावा उपकरण में एक कीटनाशक छिड़काव तंत्र और खेत पर सभी कार्यों के आसान सुदूर संचालन के लिए एक कैमरा शामिल है । बिजली का स्रोत सौर ऊर्जा है और यह किसान के लिए रोशनी पंखा व मोबाइल चार्जिंग की सुविधा प्रदान करता है । इस उपकरण के लिए मार्गदर्शक शिक्षक मदनलाल है।

विद्यार्थी का नाम : झिनेन्द्र शर्मा

प्रोजेक्ट का नाम : कूलर/एयर कण्डीशनर

विद्यालय का नाम : राउमावि गुणसार तह कोटकासिम, अलवर

सुविधा और दक्षता को ध्यान में रखकर बर्फ की ट्रे युक्त रिचार्जेबल एयर कूलर बनाया गया है यह एक पारंपरिक एयर कूलर की कार्य क्षमता को रीजार्चेबल बैटरी की गतिशीलता और उर्जा बचत लाभों के साथ जोड़ता है इसको एक सोलर पैनल के जरिए जोड़ा गया है वाष्पीकरण की मदद से ठंडा करने की प्रक्रिया के लिए इसमें एक मशीन का प्रयोग किया गया है जो पानी से वाष्प तैयार करने के काम आती है इसके अतिरिक्त रफ्तार पर इसे चलाया जा सकता है इससे बिजली बचत, पानी की बचत व जगह कम काम में आती है।

टीम प्रभारी, राजस्थान
अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी
कार्यालय संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा, जयपुर संभाग, जयुपर

महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन

❒ दिलीप कुमार मंगल

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में छात्रों के लिए महात्मा गाँधी के शिक्षा दर्शन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन छात्रों के सर्वांगीण एवं सार्वभौमिक विकास पर बल देता है। गाँधी का शिक्षा दर्शन मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से अभिप्रेरित है। महात्मा गाँधी के अनुसार शिक्षा वह है जो बालक के शरीर, मन और आत्मा का विकास करे अर्थात् शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास करे।

महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन- महात्मा गाँधी ने शिक्षा दर्शन में शिक्षा को 3R और 3H की संज्ञा दी थी। 3R से आशय Reading, Writing, Arthmetic से था और 3H से उनका आशय Hand, Head, Heart से था। उनका मानना था कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बालक का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक विकास करे।

शिक्षा दर्शन के आधारभूत सिद्धान्त:-

1. सम्पूर्ण देश में 7 से 14 वर्ष के बालकों की शिक्षा निःशुल्क और अनिवार्य होनी चाहिए।
2. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए।
3. शिक्षा विद्यार्थियों में समस्त मानवीय गुणों का विकास करे।
4. शिक्षा के द्वारा बालक की शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक शक्तियों को प्रोत्साहित करना चाहिए।
5. शिक्षा किसी लाभप्रद हस्तशिल्प से प्रारम्भ होनी चाहिए जो बालक को आंशिक रूप से स्वावलम्बी बना सके।
6. शिक्षण जीवन की वास्तविक परिस्थितियों में किया जाना चाहिए।

साक्षरता - गाँधी साक्षरता को शिक्षा नहीं मानते थे। उनके अनुसार साक्षरता न तो शिक्षा का अन्त है न ही प्रारम्भ है। यह एक साधन है जिसके द्वारा स्त्री एवं पुरुषों को शिक्षित किया जाता है। गाँधी जी मनुष्य को शरीर, मन और आत्मा तीनों का योग मानते है। उनका मानना है कि शिक्षा द्वारा इन तीनों का विकास होना चाहिए। उन्होंने अपने शिक्षा दर्शन में 3R को 3H में परिवर्तित कर दिया और मनुष्य के लिए शिक्षा का कार्य 3R का ही नहीं अपितु 3H का भी विकास करना है। **गाँधी जी के अनुसार** 'शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा का सर्वांगीण विकास होना चाहिए।'

गाँधी जी के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य

शारीरिक विकास - महात्मा गाँधी के शिक्षा दर्शन के अनुसार छात्रों को शारीरिक शिक्षा भी प्रदान की जानी चाहिए। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसमें बालक के शरीर का विकास होना चाहिए क्योंकि उनके अनुसार स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का विकास होता है।

मानसिक एवं बौद्धिक विकास - गाँधी के अनुसार जिस प्रकार शारीरिक विकास के लिए शिशु को माँ के दूध की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार मानसिक विकास के लिए शिक्षा की आवश्यकता होती है।

नैतिक एवं चारित्रिक विकास - गाँधी शिक्षा के माध्यम से बालक में सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्तेय, अपरिग्रह और निर्भरता आदि गुणों के विकास को देखना चाहते है।

व्यावसायिक शिक्षा - गाँधी आर्थिक विकास के लिए व्यावसायिक शिक्षा पर बल देते थे। मनुष्य एवं छात्रों को आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे। इसलिए वह हस्तकला एवं उद्योगों पर बल देते थे।

आध्यात्मिक विकास - गाँधी मनुष्य जीवन का अन्तिम उद्देश्य मुक्ति, आत्मानुभूति व आत्मबोध मानते हैं। गाँधी जी ने ज्ञान, कर्म, भक्ति और योग पर समान बल दिया। यह अहिंसा और सत्याग्रह को मूर्त रूप प्रदान करते हैं।

पाठ्यक्रम - बेसिक शिक्षा 1 से 8 तक इसमें हस्तकला उद्योग को प्रमुख स्थान मातृभाषा व्यावहारिक गणित, सामाजिक विषय, सामान्य विज्ञान, संगीत, चित्रकला, स्वास्थ्य विज्ञान और आचरण की शिक्षा पर बल देते है।

शिक्षक का स्थान

गाँधी के अनुसार एक शिक्षक आदर्श शिक्षक तभी बन सकता है जब वह शिक्षण कार्य को व्यवसाय के रूप में नहीं बल्कि सेवा के रूप में स्वीकार करें। उसे सभ्य आचरण वाला, सहिष्णु, जिज्ञासु, ज्ञान का भण्डार एवं धैर्यवान होना चाहिए।

बुनियादी शिक्षा

गाँधी बेसिक शिक्षा को निम्न लिखित रूपों में स्वीकार करते हैं। वह निम्न बातों पर बल देते हैं।

- शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए।
- विद्यार्थियों द्वारा निर्मित सामग्री को क्रय करके विद्यालय में उसका व्यय करना चाहिए।
- सम्पूर्ण शिक्षा हस्तकला और उद्योगो पर आधारित होनी चाहिए।

मूल्यांकन

गाँधी के शिक्षा दर्शन का आधार आदर्शवाद है तथा प्रकृतिवाद एवं प्रयोजनवाद मात्र उसके सहायक के रूप में है। गाँधी का शिक्षा दर्शन बालक की प्रकृति को विशेष महत्त्व देता है। इसलिए यह प्रकृतिवादी है और क्योंकि यह दर्शन बालक को उसकी रुचि के अनुसार सामाजिक परिस्थितियों को ध्यान में रखकर क्रिया करके सीखने पर बल देता है अत: वह इस अर्थ में प्रयोजनवादी है।

आदर्शवाद इस अर्थ में है क्योंकि गाँधी जी शिक्षा के अन्तिम उद्देश्य को आत्मानुभूति मानते हैं। वे बालकों को सत्य और अहिंसा का विचार पढ़ाना चाहते हैं। गाँधी का शिक्षा दर्शन आदर्शवाद, प्रयोजनवाद और प्रकृतिवाद तीनों से ही प्रभावित है।

गाँधी के अनुसार शिक्षा से तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा के सर्वोत्कृष्ट विकास से है इस प्रकार गाँधी की शिक्षा की विचारधारा में प्रकृतिवाद, प्रयोजनवाद एवं आदर्शवाद तीनों का ही समन्वय पाया जाता है।

अध्यापक L-2
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, मत्सूरा,
बाड़ी, धौलपुर
मो. 8946902757

स्वतंत्रता आंदोलन में डांडी यात्रा का महत्त्व

❒ ओम प्रकाश सारस्वत

महात्मा गाँधी लगभग 02 दशक तक विदेश में रहकर सन् 1915 में वापिस भारत लौटकर आए। तब तक देश में ब्रिटिश हुकूमत के प्रति आक्रोश की लहर चल पड़ी थी। स्वतंत्रता आंदोलन अंगड़ाई ले रहा था जिसे एक कुशल नेतृत्व की आवश्यकता थी। विदेशों, विशेषकर दक्षिणी अफ्रीका में महात्मा गाँधी ने जन जागृति लाने में अभूतपूर्व कार्य किया था। उनकी संगठन क्षमता गजब की थी। अपने राजनैतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले की सलाह पर शुरू-शुरू में गाँधी जी देश के विभिन्न भागों में भ्रमण करते रहे ताकि देश की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति का उनको भान हो सके। उनका जीवन त्याग और साधना का पर्याय था। लोग उनकी सरलता व सादगी के आगे नतमस्तक थे। शनैः शनैः महात्मा गाँधी राष्ट्रीय नेता के रूप में स्थापित हो गए। स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व प्रमुख रूप से उनके हाथों में आ गया। वह गोखले, तिलक, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, आचार्य जेबी कृपलानी, मोती लाल नेहरु जैसे नामचीन बड़े नेताओं का युग था, मगर सभी ने महात्मा गाँधी को स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व करने के लिए आगे किया।

सन् 1929 माह दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन लाहौर में आयोजित हुआ। अधिवेशन में देश की आजादी के लिए 'पूर्ण स्वराज्य' का प्रस्ताव पारित कर स्वतंत्रता आंदोलन को प्रखर करने का निर्णय लिया गया। पं. जवाहर लाल नेहरु कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए। लाहौर अधिवेशन में 26 जनवरी 1930 को प्रथम स्वतंनता दिवस बनाने के संदेश ने पूरे देश को क्रांति की भावना से भर दिया।

देश भर में स्वतंत्रता दिवस मनाए जाने के तुरंत बाद महात्मा गाँधी ने देशवासियों का ध्यान सरकार के नमक कानून की ओर आकृष्ट किया। नमक कानून के अनुसार नमक के उत्पादन और बिक्री के समस्त अधिकार राज्य को दे दिए गए थे। निर्धन से निर्धन व्यक्ति के घर में भी नमक का प्रयोग अपरिहार्य था लेकिन इसके बावजूद आम व्यक्ति को अपने घरेलू उपयोग के लिए भी नमक बनाने से कानून पूर्वक रोका गया। इस तरह उन्हें दुकानों open Market में इस ऊँचे मूल्यों पर नमक खरीदने के लिए बाध्य किया गया। नमक पर शासन के एकाधिकार का निर्णय अत्यन्त घृणित और शर्मनाक था। यह हर व्यक्ति, हर परिवार से जुड़ा बहुत संवेदनशील विषय था। महात्मा गाँधी ने बहुत सोच विचार करके नमक कानून का यह विषय चुना जिसके कारण देश का हर नागरिक आंदोलन में शरीक हो गया। यह महात्मा जी की कुशलता एवं समझदारी को इंगित करता है। गाँधी जी में यह एलान कर दिया कि आम व्यक्ति के हित विरोधी नमक कानून को तोड़ने के लिए वे एक पद यात्रा का नेतृत्व करेंगे।

महात्मा गाँधी ने लाहौर अधिवेशन के पश्चात 11 सूची योग पत्र ब्रिटिश सरकार के सामने रखा। इसमें अन्तिम 11वीं माँग नमक पर लगा कर समाप्त कर नमक पर सरकारी नियंत्रण खत्म करने की थी। इस आशय का उनका एक लेख Young India पत्र में प्रकाशित हुआ था जिससे ब्रिटिश सरकार व आम व्यक्ति सभी को इसकी जानकारी मिल गई। 02 मार्च 1930 को महात्मा गाँधी ने एक पत्र वायसराय को लिखा जिसमें उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि पूर्व में प्रस्तुत 11 सूत्रीय माँग पत्र पर सकारात्मक कार्यवाही नहीं हुई तो वे 12 मार्च से नमक कानून का उल्लंघन करेंगे।

सरकार द्वारा गाँधी जी के पत्र का कोई जवाब नहीं दिए जाने पर पूर्व में दी जा चुकी लिखित चेतावनी के क्रम में गाँधी जी ने 12 मार्च 1930 को अपने साबरमती आश्रम से 78 समर्थकों के साथ डांडी के लिए पद यात्रा आरम्भ की तथा 24 दिनों में 240 मील (390 किलोमीटर) पैदलयात्रा करते हुए 5 अप्रैल 1930 के दिन डांडी पहुँचे। उन्होंने समुद्र तट पर 6 अप्रैल 1930 के दिन नमक बनाकर कानून तोड़ा।

5 अप्रैल 1930 को महात्मा गाँधी ने डांडी में कहा था, 'कल हम नमक कानून तोड़ेंगे। सरकार इसे बर्दाश्त करती है कि नहीं, यह सवाल अलग है। हो सकता है कि सरकार हमें ऐसा न करने दें लेकिन उसने हमारे जत्थे के बारे में जो धैर्य और सहिष्णुता दिखाई है, उसके लिए वह अभिनंदन की पात्र है। यदि मुझे और गुजरात व देश भर के सारे प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार कर लिया जाता है तो क्या होगा ? यह आंदोलन इस विश्वास पर आधारित है कि जब एक पूरा राष्ट्र उठ खड़ा होता है और खड़ा होकर भागे बढ़ने लगता है, तब उसे नेता की जरूरत नहीं रह जाती। इस आशय का वर्णन ग्रंथ Collected Works of Mahatma Gandhi के 49 में खंड में किया गया है।

यहाँ पुनः उल्लेखनीय है कि महात्मा गाँधी जनता की नब्ज टटोलने वाले कुशल वैद्य थे। इसी लिए बहुत भावुक तरीके से उन्होंने नमक सरीखे अतिशय संवेदनशील विषय को अपने आंदोलन का केन्द्रीय बिन्दु बनाया। यह गौरतलब है कि गाँधी की डांडी पद यात्रा यानि साबरमती से डांडी तक की 240 मील की पद यात्रा के दौरान रास्ते में हजारों किसानों, मजदूरों, कामगारों, प्रबुद्धजनों महिलाओं- पुरुषों ने उनका मार्मिक संदेश सुना तथा उनके अनुयायी बन गए। अनेक व्यक्तियों ने सरकारी नौकरियों को छोड़कर पूर्णकालीय आंदोलन धर्मी बनने का निर्णय किया तथा कठोर जीवन जीने के लिए खुद को महात्मा जी के हवाले कर दिया। डांडी यात्रा का महत्त्व इसी तथ्य से प्रकट हो जाता है कि इसने संपूर्ण भारत को एक सूत्र में बांधने का काम किया। संपूर्ण देश ही नहीं अपितु पूरे संसार में डांडी यात्रा की व्यापक चर्चा हुई। इससे प्रेरित एवं उत्साहित होकर महात्मा गाँधी ने एक आम कार्यक्रम प्रसारित किया जिसके प्रमुख बिन्दु इस प्रकार है :-

(1) जहाँ कहीं भी संभव हो, लोग नमक कानून तोड़कर स्वयं नमक तैयार करें।

(2) शराब की दुकानों, विदेशी कपड़े की दुकानों तथा अफीम के ठेकों के समक्ष धरने आयोजित किए जाए।

(3) यदि हमारे पास पर्याप्त शक्ति हो तो हम करों की अदायगी का विरोध कर सकते हैं।

(4) वकील अपनी वकालात छोड़ सकते हैं।

(5) जनता याचिकाओं पर रोक लगाकर न्यायालयों का बहिष्कार कर सकती है।

(6) सरकारी कर्मचारी अपने पदों से त्याग पत्र दे सकते हैं।

(7) हर घर में लोग चरखा चलावे व सूत बनाए।

(8) छात्र सरकारी स्कूल एवं कालेजों का बहिष्कार करें।

(9) स्थानीय नेता मेरी गिरफ्तारी के बाद अहिंसा बनाए रखने में सहयोग प्रदान करें।

(10) इन सभी कार्यक्रमों में सत्य और अहिंसा को सर्वोपरी रखा जावे, तभी हमें पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति हो सकती हो।

महात्मा गाँधी की भावना के अनुसार नमक बनाकर नमक कानून का उल्लंघन करने के लिए

सत्याग्रह पूरे देश में प्रारम्भ हो गया। तमिलनाडु में तंजोर के समुद्री तट पर सी. राजगोपालाचारी ने त्रिचनापल्ली से वेदारण्यम तक की नमक यात्रा कर नमक बनाया और कानून को तोड़ा। असम के सत्याग्रही बंगाल के नोवाखाली समुद्र तट तक पैदल यात्रा करके आए और यहाँ नमक बनाकर कानून को धता बताया। आंध्र प्रदेश में विभिन्न जिलों में शिविर स्थापित कर कानून तोड़ा गया। 14 अप्रैल 1930 के दिन जवाहरलाल नेहरु व 4 मई 1930 को महात्मा गाँधी को गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तारी के समय महात्मा जी ने एलान किया कि धारासाणा स्थित बड़े नमक कारखाने पर धावा बोला जाएगा। सरकार की नींद उड़ गई। नमक कानून के विरोध स्वरूप प्रारम्भ हुए आंदोलन से अन्य सरकारी आदेशों का भी विरोध किया जाने लगा।

मध्य प्रान्त में वन कानून का खुल्लम खुला उल्लंघन करने के साथ ही रैयतवाड़ी क्षेत्रों में लगान व जमींदारी क्षेत्रों में चौकीदारी कर नहीं चुकाने का प्रस्ताव पारित किया गया। जन समुदाय में नमक कानून को लेकर भयंकर विद्रोह -ज्वाला प्रज्ज्वलित हो गई जिसका प्रभाव देखकर ब्रिटिश सरकार सकते में आ गई। मालाबार, उडीसा, बंगाल, बिहार, पेशावर, शोलापुर, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक मध्य प्रान्त, संयुक्त प्रान्त, मणिपुर, नागालैण्ड, किस-किस का नाम लें। कुल मिलाकर संपूर्ण देश में इस क्रान्ति का चमत्कार देखने को मिला। नमक सत्याग्रह की सर्वाधिक तीव्र प्रतिक्रिया धारासणा में देखने को मिली। सरोजनी नायडू एवं महात्मा गाँधी के पुत्र मणिलाल गाँधी ने 2000 आंदोलनकारियों के साथ धारासणा स्थित नमक कारखाने पर धावा बोल दिया। पुलिस की बर्बरतापूर्ण कार्यवाही के चलते 2 सत्याग्रही शहीद हुए तथा 320 घायल हो गए। अब तो नमक बनाने वाले कारखानों पर सीधी कार्यवाही होने लगी। धारासणा में बाद बडाला (बम्बई) सैनी कट्टा (कर्नाटक), आंध्र प्रदेश, मिदनापुर, पुरी, बालासोर, कटक आदि स्थानों पर चल रहे नमक कारखानों के सामने व्यापक प्रदर्शन किए गए। महात्मा गाँधी ने गिरफ्तारी के समय संदेश दिया था कि प्रदर्शन शांतिपूर्ण हो, हिंसा व तोड़ फोड़ नहीं हो। इसकी पालना सत्याग्रहियों द्वारा बराबर की गई लेकिन सरकार ने सदैव दमन मार्ग ही अपनाया जैसा कि जन आंदोलनों एवं प्रदर्शनों में किया जाता है।

नमक कानून के विरोध को लेकर महात्मा गाँधी के द्वारा की गई डांडी पद यात्रा एवं इसके पश्चात सम्पूर्ण देश में सुलगी चिनगारी ने गोरी सरकार की नींद हराम कर दी। आंदोलन की अप्रत्याशित सफलता से साम्राज्यवादी खेमे में घबराहट फैल गई। वह इसी उधेड़बुन में लगी रही कि अब कौनसा मार्ग अखित्यार किया जावे। जून 1930 तक महात्मा गाँधी सहित 90,000 लोगों को जेल में डाल दिया गया। सरकार जितना दमन करती आंदोलन उतना ही तीव्र से तीव्रतर होता जाता। अन्ततः सरकार को झुकना पड़ा और जुलाई 1930 में भारत के तत्कालीन वायसराय ने गोलमेज सम्मेलन का प्रस्ताव रखा। इस प्रकार बातचीत एवं सहमति के आधार बनें गोलमेज सम्मेलनों का सूत्रपात इसी नमक आंदोलन के कारण संभव हुआ। अगस्त 1930 में नेहरु पिता-पुत्र, पं. मोतीलाल नेहरु व जवाहर लाल गाँधी से मिलने व विचार विमर्श करने यरवदा जेल गए। इस चर्चा में भी भारत को पूर्ण स्वतंत्रता की मांग विशेष रूप से रखी गई।

इंग्लैण्ड से हरी झंडी मिलने पर 25 जनवरी 1931 के दिन महात्मा गाँधी एवं अन्य नेताओं को जेल से रिहा कर दिया गया। फरवरी माह में एक पखवाड़े तक गाँधी व वायसराय इरविन के मध्य समझौता वार्ता चली और 5 मार्च 1931 को एक समझौता हुआ जिसे गाँधी-इरविन समझौता कहा जाता है। इस आंदोलन के तत्कालीन एवं दूरगामी व्यापक प्रभाव पड़े जो अन्ततः पूर्ण स्वतंत्रता के आधार बनें।

महात्मा गाँधी की डांडी यात्रा के बारे में उस दौर के विख्यात विदेशी पत्रकार ब्रेल्स फोर्ड ने कहा की डांडी यात्रा क्रान्ति का अंकुरण है। यह इस तथ्य पर आधारित है कि एक केतली में समुद्र का पानी उबालकर सम्राट को हराया जा सकता है। कलकता के समाचार पत्र The states man ने गाँधी के दृढ़ संकल्प एवं जनता के प्रबल समर्थन को भांप कर टिप्पणी की थी कि गाँधी महोदय, समुद्री जल को तब तक उबाल सकते हैं जब तक कि डोमिनियन स्टेट्स नहीं मिल जाता। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने गाँधी बाबा की डांडी यात्रा की तुलना नेपोलियन बोनापार्ट के एल्बा से पेरिस की ओर किए गए अभियान से करते हुए इसे ब्रिटिश ताज को जगाने वाला बताया।

गाँधी-इरविन समझौते में न केवल समुद्र तट की एक निश्चित सीमा में नमक तैयार करने की अनुमति ही प्रदान की गई अपितु अन्य महत्त्वपूर्ण मांगों को भी मान लिया गया। डांडी यात्रा के उपरांत गोलमेज सम्मेलनों के आयोजन, सरदार वल्लभ भाई पटेल की अध्यक्षता में करांची अधिवेशन, पूना समझौता आदि स्वतंत्रता आंदोलन को गति प्रदान करते रहे जो अन्ततः 15 अगस्त 1947 को मिली पूर्ण स्वतंत्रता के हेतु बनें।

'नमक' यानी आम व्यक्ति के जरूरत की सबसे जरूरी वस्तु, शपथ एवं संकल्प दिलाने वाली वस्तु, विश्वास का आधार, जब कोई कहता है कि मैंने आपका नमक खाया है या नमक की सौगंध या नमक हाथ में लेकर कुछ कहना, तो इससे बड़ा और कुछ नहीं माना जाता। नमक कानून के उल्लंघन हेतु हुई डांडी यात्रा एवं नमक की महत्ता को उजागर करते हुए साहित्य सृजन भी हुआ। विख्यात कथाकार रज़िया सन्नाद ज़हीर की कहानी 'नमक' बंटवारे की पीड़ा व नव सृजित दोनों देशों में परस्पर बदल कर आए नागरिकों की भावना को व्यक्त करती है। लाहौर से अमृतसर आई सिख बीबी को जब पता चलता है कि अमृतसर से लाहौर भाई से मिलने सफिया जा रही है तो बीबी उसे वहाँ से नमक लाने को कहती है। यह होता है नमक का फर्ज और नमक की गहराई। नमक लाने ले जाने पर प्रतिबंध होने के बावजूद सफिया कस्टम वालों के सामने हाथ जोड़कर एक पुड़िया नमक अपनी अमृतसर वाली आंटी के लिए लेकर आती है। बड़े भावुक संवादों से सज्जित है रजिया रचित कहानी नमक उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द की कहानी 'नमक का दरोगा' में नमक तत्कालिन पांबन्दियों एवं स्थिति का बड़ा सटीक वर्णन किया गया है। यह कहानी सन् 1925 में लिखी गई थी।

'स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव' 2022 के 75 सप्ताह पूर्व शुरू किए गए कार्यक्रमों की शुरुआत डांडी यात्रा की श्री गणेश तिथि 12 मार्च से 2021 में की गई। इस दिन साबरमती आश्रम में एक कार्यक्रम के साथ ही महोत्सव का शुभारम्भ हुआ था। इस प्रकार नमक कानून को तोड़ने के निमित्त गाँधी की डांडी यात्रा आज भी अपना महत्त्व एवं प्रासंगिकता रखती है। एक ही वाक्य में डांडी यात्रा के महत्त्व को प्रकट करना चाहे तो हम कहेंगे वह डांडी यात्रा ही थी जिसने सम्पूर्ण भारत को एक सूत्र में पिरोया, स्वतंत्रता के लिए जनमानस को उद्वेलित किया जो 17 वर्ष पश्चात 1947 के दिन भारत को आजादी दिलाने में कामयाब हुई।

(पूर्व संयुक्त निदेशक शिक्षा)
ए. विनायक
बाबा रामदेव जी रोड, गंगाशहर (बीकानेर)
मो. 9414060038

भारत माँ के अनमोल रत्न-लालबहादुर शास्त्री

❒ नवप्रभात दुबे

सादगी में ही महानता छिपी होती है, जिसके प्रत्यक्ष उदाहरण है हमारे देश के दूसरे प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री। जिन्होने अपनी सादगी कर्त्तव्य-परायणता और निष्ठा के साथ अपनी मातृभूमि का कर्ज और फर्ज ईमानदारी से अदा किया और नींव की ईंट बनकर हमारे देश की इमारत को बुलंद किया।

हमारे देश के प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरु के प्रधानमंत्री कार्यकाल के दौरान 27 मई 1964 को मृत्यु हो जाने से आपकी साफ सुथरी और ईमानदार छवि होने के कारण आपको प्रधानमंत्री बनाया गया। आपका कार्यकाल छोटा रहा लेकिन अद्धितीय रहा। आप 9 जून 1964 से लेकर 11 जनवरी 1966 तक प्रधानमंत्री पद पर रहें।

आपका जन्म 2 अक्टूबर 1904 में मुगलसराय (वाराणसी) उत्तरप्रदेश में कायस्थ परिवार में मुंशी श्री शारदा प्रसाद श्रीवास्तव के यहाँ हुआ। आपके पिता प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक थे। आपकी माता का नाम रामदुलारी देवी था। परिवार में सबसे छोटे और दुलारे होने के कारण सब आपको प्यार से नन्हें कह कर बुलाते थे। बाल्यावस्था में जब आप मात्र डेढ वर्ष के थे आपके पिता का निधन हो गया। आपकी माँ अपने तीनों बच्चों के साथ पिता हजारीलाल के घर मिर्जापुर चली आई। ननिहाल में रहते हुए आपने कठिन परिस्थितियों में प्राथमिक शिक्षा ग्रहण की। प्रतिदिन आपको गंगा नदी तैर कर पढ़ने जाना पड़ता था। इतनी कठिनाई में भी आपने हार नही मानी और अपनी पढ़ाई जारी रखी। लाल बहादुर शास्त्री बचपन से ही पढाई में काफी होशियार थे। वे अपने स्कूल के स्कालर थे जिसके लिए आपको तीन रुपये स्कालरशिप के रूप में मिलते थे। वे अपने दोस्तों के साथ स्कूल जाते थे। रास्ते में एक बाग पड़ता था। एक दिन बाग का माली बाग में नही था। सभी बाग में घुस गए और फल फूल तोड़नें लगे। तभी बाग का माली आ गया। सभी भाग गए और शास्त्रीजी खड़े रहें। इनके हाथ में कोई फल नही था सिर्फ एक गुलाब का फूल था जो इसी बाग से तोड़ा था। माली ने उन्हें जब इस हालत में देखा तो एक तमाचा लगाया। आप रोने लगे और रोते हुए बोले क्या तुम्हें मालूम नही हैं कि मेरे पिताजी नही है और तुम मुझे मारते हो, तुम्हें दया नहीं आती। शास्त्रीजी को लगा की ऐसा कहने से माली के मन में सहानुभूति पैदा हो जाएगी और वह छोड़ देगा लेकिन इसके विपरीत हुआ। माली ने एक और तमाचा लगाया ओर बोला तब तो तुम्हें ऐसी गलती कदापि नही करनी चाहिए तुम्हे नेक और ईमानदार बनना चाहिए। यह बात आपके दिल में घर कर गई। इसके बाद की शिक्षा हरिशचन्द्र हाईस्कूल और काशी विद्यापीठ में हुई। जहाँ से 1926 में आपने स्नातक किया और शास्त्री की उपाधि मिलने के बाद आप लालबहादुर शास्त्री के नाम से पहचाने जाने लगे। स्नातक की शिक्षा ग्रहण करने के बाद आप भारत सेवक संघ से जुड़ गए और देश सेवा का संकल्प लेकर आपने राजनैतिक जीवन की शुरूआत की।

1928 में आपका विवाह मिर्जापुर निवासी गणेशलाल की पुत्री ललिता से हुआ। गुदड़ी के लाल शास्त्रीजी सच्चे गाँधीवादी थे उन्होने अपना सारा जीवन सादगी और गरीबों की सेवा में बिताया। स्वतंत्रता संग्राम में आपने असहयोग आन्दोलन, दाण्डी यात्रा, भारत छोड़ो आन्दोलन आदि में सक्रियता से भाग लिया और कई बार जेल में भी गए।

8 अगस्त 1942 की रात में गाँधीजी ने अंग्रेजो भारत छोड़ो और भारतीयों को करो या मरो का नारा दिया, बाद में उन्हे कैद कर पूना के आगाखाँ पैलेस में रखा गया।

9 अगस्त 1942 को शास्त्रीजी ने इलाहाबाद पहुँचकर भारत छोड़ो आन्दोलन मे गाँधीजी के नारे 'करो' या 'मरो' को मरो नही मारों में बदल दिया जिससे पूरे देश में आन्दोलन ने प्रचण्ड रुप ले लिया। कुछ दिनों तक भूमिगत रहने के बाद आप 19 अगस्त 1942 को गिरफ्तार कर लिए गए।

आपके राजनैतिक जीवन में महात्मा गाँधी, पुरुषोत्तम दास टंडन, जवाहरलाल नेहरु और गोविन्द बल्लभ पंत प्रमुख स्तम्भ रहें। आजादी के बाद काग्रेंस सत्ता में आई तब तक विनीत और नम्र लाल बहादुर शास्त्री अपनी पहचान बना चुके थे। आपको देश के शासन में रचनात्मक भूमिका निभाने के लिए कहा गया और अपने गृहराज्य उत्तर प्रदेश में संसदीय सचिव नियुक्त किया गया।

1951 में नई दिल्ली आ गए और केन्द्रीय मंत्रीमंडल के कई विभागों का प्रभार संभाला रेलमंत्री, परिवहन और संचार मंत्री, वाणिज्य एवं उद्योगमंत्री। एक बार रेल दुर्घटना जिसमें कई लोग मारे गए थे इसके लिए खुद को जिम्मेदार मानते हुए आपने रेलमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था देश और संसद ने आपकी इस अभूतपूर्व पहल को काफी सराहा गया और इससे एक संवैधानिक मिसाल कायम हुई। अपने मंत्रालयिक काम काज के साथ आप कांग्रेस पार्टी को भी संगठनात्मक रूप से मजबूत करते रहें और आम चुनावों में कांग्रेस पार्टी सफल होती गई। आपकी समर्पित सेवा, निष्ठाभावना व क्षमता ने लोगों के बीच आपको प्रसिद्ध बना दिया। इस प्रकार नेहरु से आपकी निकटता बढ़ती गई ओर आप उनके मंत्री मंडल में गृहमंत्री तक पहुँचे और उनकी मृत्यु के बाद प्रधानमंत्री। 9 जून को आपने प्रधानमंत्री पद ग्रहण किया।

आपके पुत्र सुनिल शास्त्री ने अपनी पुस्तक ''श्री लाल बहादुर शास्त्री मेरे बाबूजी'' में शास्त्री जी के जीवन से जुड़े कई आत्मिक प्रसंग साझा किए। आप बहुत सीमित संसाधनों से काम चलाते थे। अपने फटे कुर्ते से रुमाल माँ से बनवाकर काम में लेते थे। अकाल के दौरान आपने स्वयं एक दिन का उपवास रखा और सभी देशवासियों से उपवास करने को कहा ताकि कोई भूखमरी से न मरें। पत्नी के लिए साड़ी खरीदने गए तो दुकानदार ने महंगी साड़ी दिखाई तो उन्होनें यह कह कर लेने से मना कर दिया कि उस साड़ी को खरीदने के लिए पैसे नही हैं। जब दुकानदार ने साड़ी उपहार में देनी चाही तो आपने सख्ती से मना कर दिया। एक बार मैने उनकी सरकारी गाड़ी का प्रयोग किया तो आपने किलोमीटर से हिसाब लगाकर उतना पैसा सरकारी कोष में जमा कराया और भविष्य में ऐसा नही करने को कहा।

1965 में भारत-पाकिस्तान युद्ध शुरू हुआ। इससे 3 वर्ष पूर्व हुए युद्ध में भारत चीन से हार चुका था। आपने इस युद्ध में उत्तम नेतृत्व प्रदान किया और देश को जय जवान जय किसान का नारा दिया। जिससे पूरा देश एकजुट हो गया। इस प्रकार आपकी सुझबूझ और समझदारी एवं वीर भारतीय सैनिको के शौर्य से हम विजयी हुए।

युद्ध के दौरान जब भारतीय वायु सेना लाहौर के हवाईअड्डे तक आक्रमण करने की सीमा तक पहुँच गई थी। इससे घबराकर अमेरिका ने अपने नागरिकों को लाहौर से निकालने के लिए कुछ समय युद्ध विराम की अपील की। रूस और अमेरिका की मिलीभगत से शास्त्री जी पर दबाव डाला गया और एक सुनियोजित तरीके से समझौते के लिये रूस बुलाया गया। यह ताशकंद (रूस) समझौता 10 जनवरी 1966 को भारत और पाकिस्तान के बीच हुआ एक शांति समझौता था। समझौता वार्ता में शास्त्रीजी ने साफ कह दिया था कि उन्हें जीती हुई जमीन पाकिस्तान को वापस लौटाने के अलावा सभी शर्तें मंजूर होगी।

अंत में लम्बी वार्ता व अन्तर्राष्ट्रीय दबाव के बाद ताशकंद में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री अयूब खान के साथ युद्ध समाप्ति के समझौते पर हस्ताक्षर हुए। शास्त्रीजी ने यह कहते हुए हस्ताक्षर किए कि वे हस्ताक्षर जरुर कर रहें हैं, पर जीती हुई जमीन तो कोई दूसरा प्रधानमंत्री ही लौटाएगा, वे नहीं। युद्ध विराम पर हस्ताक्षर करने के 12 घण्टो बाद 11 जनवरी 1966 को तडके रहस्यमयी परिस्थितियों में उनकी मृत्यु हो गई। आधिकारिक तौर पर उनकी मृत्यु का कारण हृदयघात बताया गया और कुछ अन्य उनकी मौत की वजह जहर को मानते है क्योंकि उनके शरीर पर नीले और सफेद धब्बे देखे गए। आपकी अन्त्येष्टि पूरे राजकीय सम्मान के साथ नई दिल्ली में यमुना के किनारे की गई और उस स्थल को विजय घाट नाम दिया गया।

आपने अपने कार्यकाल में 1965 में हरित क्रातिं को बढावा दिया, जिससे पंजाब हरियाणा ओर उत्तर प्रदेश में खाद्धान्न उत्पादन मे काफी वृद्धि हुई। आपके दिए नारे में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेई जी ने जय विज्ञान और वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने जय अनुसंधान और जोड़ दिया और

अब यह नारा जय जवान, जय किसान,
जय विज्ञान, जय अनुसंधान हैं।

आपको मरणोपरान्त 1966 में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारतरत्न' से सम्मानित किया गया।

श्री लालबहादुर शास्त्री को आज पूरा भारत वर्ष उनकी कर्त्तव्यपरायणता, देशभक्ति, ईमानदारी और सादगी के लिये श्रद्धा से याद करता हैं, नमन करता हैं।

उप प्रधानाचार्य
व्याख्याता इतिहास
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
बडौदिया, जिला-बून्दी राज.
मो. 9414745053

श्रेष्ठ विद्यालय का स्वरुप

❒ गजपाल सिंह

जहाँ चाह है वहाँ राह है। सभी की चाह होती है कि उसके जीवन में जो भी हो वह श्रेष्ठ हों। एक शिक्षक भी श्रेष्ठ विद्यालय की कल्पना को अपने मनोमस्तिष्क में रखता है। जिस विद्यालय में वह शिक्षक के रूप में कार्य कर रहा है, वह कैसा होना चाहिए ? उसमें कौन सी खासियत हो ! जिससे कि उसके विद्यालय की गिनती एक अच्छे विद्यालय में हो, उसके विद्यालय का नाम हो तथा जिसमे बहुत से विद्यार्थी पढ़ने के लिए आए। शिक्षक की तरह बालक के माता पिता भी यही चाहते है कि उनका बच्चा एक श्रेष्ठ विद्यालय में अध्ययन करे। अच्छे विद्यालय में शिक्षा पाने से उनके बच्चे का जीवन सुधर जाए। उसे अच्छी नौकरी प्राप्त हो, समाज में मान सम्मान हो, वह एक सफल व्यक्ति बनें। एक अच्छा विद्यालय बच्चों को काबिल इन्सान बना सकता है व इसी काबिलियत से उसकी आगे की जिन्दगी जुड़ी है। जो व्यक्ति विद्यालय से जुड़ा हुआ है वह चाहे शिक्षक हो, माता पिता हो, विद्यार्थी हो, प्रबन्धक या संचालक हो सभी चाहते है कि अपना विद्यालय श्रेष्ठ विद्यालय हो।

प्रश्न यह उठता है कि एक अच्छे विद्यालय में क्या-क्या गुण होने चाहिए उसकी क्या विशेषता होनी चाहिए व कौन कौन से लोग उसे विशिष्ट बना सकते है ? ; विद्यालय को श्रेष्ठ बनाने की जिम्मेदारी किसी एक व्यक्ति के कन्धे पर नही डाली जा सकती। विद्यालय को श्रेष्ठ बनानें के लिए सभी को अपनी- अपनी जिम्मेदारी समझ में आनी चाहिए जो विद्यालय में उपस्थित हैं, वह व्यक्ति जो स्कूल की व्यवस्था को देख रहा है, पढ़ा रहा है या पढ़ रहा है, वह जो अभिभावक के तौर पर उसमें शिक्षा प्राप्त करने के लिए अपने बच्चो को भेज रहा है। वस्तुतः एक श्रेष्ठ विद्यालय सभी की सामूहिक जिम्मेदारी से बनता है। एक अभिभावक की नजर में श्रेष्ठ विद्यालय वह है जिसका समाज में नाम हो, पढ़ाई अच्छी हो प्रवेश प्रक्रिया सरल हो, अच्छा अनुशासन हो तथा फीस कम हो।

श्रेष्ठ विद्यालय की कल्पना शिक्षा को बेहतर रुप प्रदान करके की जा सकती है । जिसमें विद्यार्थी को परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने के लिये रटने के बजाय समझ कर पढ़ाई करने पर जोर दिया जाना चाहिए । आन्तरिक वातावरण विद्यार्थी व शिक्षक दोनो को ही मानसिक व शारीरिक तौर पर विद्यालय के माहौल से जोड़े।

विद्यार्थी पर पढ़ाई का दबाव बनाने के बजाय रचनात्मक व मनोरन्जनात्मक ढंग से पढाई करने के लिए प्रेरित करना होगा । जिससे अच्छे परिणाम दे सकें। विद्यालय का परिवेश दमन व दबाव मुक्त होना चाहिए ताकि अध्ययन व अध्यापन दोनों के लिए सहायक बन सके, अच्छे शिक्षण में समझा कर पढ़ाते हुए, बिना अत्यधिक दबाव के, भविष्य के सुनहरे सपने के लिए आज के जीवन को हवन किए बिना बेहतर शिक्षा प्रदान करने से है। बेहतर शिक्षा बिना भय, लालच के दी जाती है। इसमे विद्यार्थियों में सीखने की इच्छा को बढ़ावा देना होता है।

बेहतर सीखना:- श्रेष्ठ विद्यालय की कल्पना में एक छवि जो विकसित होती है कि शिक्षण में ज्ञान व जानकारी का विकास हो शिक्षण को समझ कर अवधारणाओं की स्पष्टता के साथ सीखना, जो ज्ञान प्राप्त किया है उसे प्रयोगात्मक तौर पर सीख कर उपयोग में लाना, विद्यार्थियों का सक्रिय एवं स्वयं खोज में शामिल हो कर पढ़ने के लिए प्रेरित कराना, शिक्षण को उल्लासपूर्ण बना कर विद्यार्थी में अध्ययन के लिए रुचि पैदा करना, जिससे वह पढ़ाई में बोरियत महसूस न करके गुणवत्ता युक्त शिक्षा पर ध्यान देकर सीखने की क्षमता को बेहतर बनाने पर जोर देना है।

अच्छी पढ़ाई:- श्रेष्ठ विद्यालय में रटने पर दबाव न डालकर समझा कर पढ़ाने से है। जिससे शिक्षण को प्रत्यक्ष तौर पर समझा कर कराया जाए। उदाहरण देकर, कहानी सुनाकर, चल - चित्र दिखा कर अध्ययन करवाया जाए। बालक में सीखने का भाव जागृत करना, प्रोजेक्ट द्वारा विद्यार्थियों में आपसी सहयोग से कार्य कराना। पढ़ाई को खेल-खेल में समझा कर प्रयोगशाला में व्यवहारिक गतिविधियों के साथ, सक्रिय खोज के आधार पर पढ़ाई करवा कर किया जाए। अच्छी व रचनात्मक पढ़ाई कराने से विद्यार्थी में विद्यालय के प्रति लगाव व गर्व की अनुभूति उत्पन्न होती है। पढ़ाई को मनोरन्जनात्मक बनाने से विद्यार्थी में पढ़ाई के प्रति जो डर या भय है वह दूर होता है। साथ ही उसमे सीखने की इच्छा के भाव जागृत होते है । शिक्षा के साथ व्यवसायीकरण व प्रशिक्षण के महत्त्व को बढ़ावा देकर रोजगार का कौशल पैदा करता है।

सह अकादमिक क्षेत्रः - श्रेष्ठ विद्यालय का मुख्य गुण है सह - अकादमिक क्रिया कलाप, जो विद्यार्थी की रुचि के अनुरूप उनकी प्रतिभाओं का विकास कर सर्वोत्तम परिणाम देता है । विद्यालय अगर खेलों और व्यायामों को प्रोत्साहन देता है, रुचिकर कक्षाओं का आयोजन कराता हैं, विद्यालय पत्रिका का प्रकाशन कराता है, विद्यालय सभा कार्यक्रम मे सुधार कर विद्यालय के गुणवत्ता को बढ़ावा देता है तो इन सह अकादमिक क्रिया-कलापों को अपना कर रुचि के अनुसार बच्चे के भविष्य की बुनियाद रख सकता है। छात्र अपनी स्वरुचि के अनुसार क्रिया कलापों में भाग ले कर भविष्य मे अपने कैरियर का भी चुनाव कर सकता है । जैसे लेखन, खिलाड़ी, संगीतकार, नर्तक, अभिनेता, कवि आदि के प्रथम पायदान पर पैर रख सकता है । विद्यालय में इन सभी सह अकादमिक कार्यक्रमों

का आयोजन कर प्रतिभागियों के श्रेष्ठ परिणाम पाने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत करना श्रेष्ठ विद्यालय की छवि बनाता है। इन सभी कार्यक्रमों के द्वारा छात्र पढ़ाई के प्रति उत्साहित होकर श्रेष्ठ परिणाम देगा।

विद्यालय व्यवस्था व माहौल:- श्रेष्ठ विद्यालय का महत्त्वपूर्ण अंग वहाँ का वातावरण व व्यवस्था भी है। विद्यालय का माहौल सौहार्द पूर्ण व अनुशासनात्मक होना अति आवश्यक। विद्यालय व्यवस्था व वातावरण सुचारु ढंग से रहे, उसकी जिम्मेदारी सिर्फ संस्था प्रधान तक सीमित न रह कर शाला के अध्यापकों, विद्यार्थियों, कर्मचारियो, अभिभावकों व समाज पर निर्भर करती है। संस्था प्रधान का कार्य एक कप्तान की तरह होता है जो कि अन्य सदस्यों की कलाओं, क्षमताओं व प्रतिभाओं को आदर्श मानते हुए उनमे अध्ययनरत शिक्षार्थियों में अनुशासन व अच्छे संस्कार का भाव विकसित कर सके। संस्था प्रधान एक नेता की तरह अपने वाक - चातुर्य से शिक्षकों में आपसी सहयोग का विस्तार, सम्मान का रिश्ता, विद्यार्थी व शिक्षक के सम्बन्धों को मजबूती देता है। शिक्षकों में न्यायपूर्ण तरीकों से कार्य के विभाजन की क्षमता रखे, शिक्षार्थी व शिक्षकों में स्वतः ही स्व प्रेरित अनुशासन की भावना का विकास हो, किसी के दिशा निर्देश की आवश्यकता न पड़े, विद्यालय की व्यवस्था व वातावरण का जिम्मेदार बनाने में समर्थ होना श्रेष्ठ विद्यालय में आपसी भरोसे व सम्मान व सहयोग का होना अति आवश्यक है। इसी सहयोग व विश्वास की भावना से विद्यालय की व्यवस्था व वातावरण में श्रेष्ठता आती है। विद्यालय के वातावरण में छात्र के व्यक्तित्व का विकास, उनकें दृष्टिकोणों का विकास, चरित्र का निर्माण कर एक योग्य कुशल नागरिक बनाना, शिक्षा सम्बन्धी कार्यो को विधिवत सम्पन्न कराना, वहाँ के कर्मचारी, शिक्षकों व छात्रों को उनके अपने-अपने कर्त्तव्यो एवं उत्तरदायित्व से अवगत कराना व क्रियान्वयन एक आदर्श विद्यालय की व्यवस्था का प्रमुख घटक है जो विद्यालय को सकारात्मकता प्रदान करता है।

विद्यालय में भौतिक संसाधन:- श्रेष्ठ विद्यालय में भवन की अहम भूमिका होती है। विद्यालय की इमारत विशाल होनी अति आवश्यक है। भवन खुला हवादार हरा-भरा होना अति आवश्यक है। कक्षा-कक्ष हवादार बड़े होना अति आवश्यक है जिससे विद्यार्थी आराम से बैठ सके। विद्यालय में बाग बगीचे हो जिससे वहाँ हरियाली रहे। विद्यार्थी को स्वच्छ व सेहतमन्द विद्यालय प्रांगण मिल सके, खेल मैदान भी होना अति आवश्यक है जिसके द्वारा विद्यार्थी का शारीरिक विकास भी हो पढ़ाई के साथ खेल को भी प्रोत्साहन मिलें। विद्यालय में प्रयोगशाला व पुस्तकालय के द्वारा आधुनिक शिक्षण विधियों को अपनाया जा सके। छात्रों को अधिक सुविधाए देने के लिए व्यायामशाला, सभा भवन, सार्वजनिक भवन, कम्प्यूटर कक्ष और दृश्य व श्रव्य सामग्री का प्रबन्धन होना आवश्यक हैं।

प्रबन्धन:- शिक्षा सम्बन्धी कार्यों को विधिवत सम्पन्न करना ही विद्यालय प्रबन्धन है जिसमें विद्यालय का उद्देश्य यह है कि बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक साधन एवं सामग्री उपलब्ध कराना, शिक्षा के मूल उद्देश्यों सिद्वान्तों का समाज एवं छात्र के हित में निर्धारित कराना, अभिभावकों को विद्यार्थी व विद्यालय के कार्यों से सन्तुष्ट कराना, अभिभावकों विचारो प्रश्नो व चिन्ताओं को समझकर उनका निराकरण करना शिक्षा संस्थाओ एवं समाज में शिक्षा के माध्यम से समन्वय स्थापित कराना, अभिभावक व अध्यापक की साझेदारी से अधिगम में उत्तम परिणाम देना, अभिभावकों को विद्यालय में आने व वहाँ के कार्यो मे भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना, विद्यालय के निजी सम्पर्को के द्वारा विद्यालय के कार्यों व गुणवत्ता का प्रचार प्रसार करना, समाज व अभिभावक से सम्बन्ध स्थापित करना, शिक्षकों की अकादमिक कार्या में मदद करना, विद्यालय परिवेश में सहयोग व लचीलेपन के साथ दृढ़ता से कार्य करना ही विद्यालय का श्रेष्ठ प्रबन्धन हैं।

आवश्कतानुसार पुनर्गठित पाठ्यचर्चा:- श्रेष्ठ विद्यालय में छात्रो की आवश्यकतानुसार पाठ्यचर्चा करना, पुस्तकालय में विविध विषयों से सम्बन्धित बुक बैंक उपलब्ध कराना, दृश्य व श्रव्य सामग्री को उपलब्ध करवा कर उनके पाठ्यक्रम को सहज व सरल बनाना, प्रोजेक्ट व थीम के द्वारा स्थानीय परिवेश के अनुसार संगतता लाना छात्रों के जरूरत के अनुसार डिजिटल बोर्ड के द्वारा पाठ्यक्रम को आसान कर उनकी समझ के साथ पुनर्रचना कराना, विद्यालय का उद्देश्य सिर्फ विद्यार्थी को अकादमिक परीक्षा उत्तीर्ण कराना ही नही बल्कि शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त कर अच्छा नागरिक बनाना व समाज व राष्ट्रहित मे दूरदर्शिता प्रदान कराना है।

शिक्षा का उद्देश्य :- शिक्षा का उद्देश्य है कि बालक का सर्वांगीण विकास कर एक कुशल नागरिक बनाना, जो कि सुदृढ़ राष्ट्र व समाज की स्थापना करें। इसमे एक महत्त्वपूर्ण भूमिका विद्यालय की है जो कि शिक्षा के माध्यम से एक श्रेष्ठ नागरिक का निर्माण करती है। जिसमे धैर्य सहिष्णुता, सहयोग, आत्म विश्वास, समस्याओं से निपटने की शक्ति स्थानीय नेतृत्व आदि गुणो को पोषण देता है श्रेष्ठ विद्यालय ही श्रेष्ठ राष्ट्र निर्माण के उत्तरदायित्व का निर्वहन कर सकता है।

शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिससे
आप दुनियां को बदल सकते हों।
- नेल्सन मन्डेला -

वरिष्ठ अध्यापक - गणित
महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय
(अंग्रेजी माध्यम)
ओजटू, चिड़ावा, जिला-झुंझुनु
मो. 9413642352

हिन्दी के सशक्त हस्ताक्षर : श्रद्धाराम फिल्लौरी

❒ जितेन्द्र शर्मा

पंजाब ऋग्वेद की भूमि है। अष्टध्यायी के रचनाकार पाणिनी भी पेशावर के थे। दसवें गुरु गोविंद सिंह स्वयं बृज भाषा में काव्य रचना करते थे। जालंधर के नजदीक फिल्लौर के रहने वाले श्रद्धाराम शर्मा ने पंजाब की इसी विरासत को अपने हिंदी-प्रेम से आगे बढ़ाया। यह संयोग ही है कि हिन्दी दिवस जिस माह में मनाया जाता है, उसी माह की 30 तारीख को महाराजा रणजीत सिंह के शासन-काल में सन 1837 में श्रद्धाराम का जन्म हुआ। पिता जयदयालु की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं थी कि औपचारिक शिक्षा का प्रबंध किया जा सके। घर में रहकर ही सात वर्ष की उम्र में वे गुरुमुखी में पारंगत हो गए। संस्कृत, हिन्दी, फारसी, संगीत और ज्योतिष का अध्ययन भी स्वाध्याय से ही किया। आर्थिक कारणों से छोटी उम्र में ही कथावाचन को आजीविका बनाना पड़ा। रामायण, महाभारत और श्रीमद्भागवत कथा कहने के निराले अंदाज ने उन्हें अमृतसर और लाहौर जैसे बड़े शहरों में पर्याप्त यश दिलाया। नाम के साथ फिल्लौरी तखल्लुस ने उनकी जन्मभूमि को भी अमर बना दिया।

अंग्रेजों ने लगाई फिल्लौर में घुसने पर रोक

1857 की क्रांति के समय श्रद्धाराम की उम्र बीस वर्ष की थी। अंग्रेजों के विरुद्ध देश में आए इस भूचाल को उन्होंने भी देखा और सुना था। अपने चरम लक्ष्य को पाने में भले ही यह क्रांति सफल न हो पाई हो, लेकिन अंधकार युग में प्रकाश की आहट जरूर दिखाई देने लगी थी। पंजाब में जनजागरण का हेतु उन्हें भी बनना था। विधवा विवाह, समाज सुधार, देश-प्रेम उनके कथावाचन में प्रवेश करने लगे। पंजाबी भाषा के विद्वान होते हुए भी जनजागरण के लिए उन्होंने हिन्दी भाषा की शक्ति को समझा और इसे अपनाया। महाभारत की कथा के कौरव और पांडव पक्ष को उन्होंने अंग्रेज और भारतीय पक्ष में बदल दिया। महाभारत के प्रसंगों को इस अन्योक्तिपरक ढंग से सुनाने की खबर अंग्रेजों तक पहुँची तो 1865 में दुष्प्रचार का आरोप लगाते हुए इन्हें अपनी जन्मभूमि फिल्लौर से शहर बदर कर दिया गया। जोरदार बात यह थी कि कोई विकल्प न होने के कारण पंजाबी में लिखी गई इनकी जिन पुस्तकों को अंग्रेजों ने पंजाब के स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल कर रखा था, वे इस दौरान भी स्कूलों में पढ़ाई जाती रही। श्रद्धाराम ने सामाजिक सुधार के लिए आर्य समाज के लिए भूमि तैयार कर दी थी। बाद में एक पादरी फादर न्यूटन के अंग्रेजों से आग्रह करने पर यह आदेश वापस लिया गया। फादर के आग्रह पर इन्होंने बाइबिल के एक भाग का गुरुमुखी में अनुवाद भी किया।

सिखां दे राज दी विथियां (सिख साम्राज्य की कहानियां)

श्रद्धाराम फिल्लौरी को लेकर यह निश्चय कर पाना मुश्किल है कि पंजाबी भाषी उनके अधिक ऋणी हैं या हिन्दी-भाषी। हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखने वाले मूर्धन्य आलोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल जिन दो शुरुआती भाषा (हिन्दी) लेखकों की बात करते हैं उनमें भारतेन्दु के अलावा श्रद्धाराम फिल्लौरी का ही नाम लेते हैं। इन्हीं श्रद्धाराम को पंजाबी गद्य का पिता भी माना जाता है। इनकी पुस्तक 'सिख दे राज दी विथियां' (सिख शासन की कहानी) सिख धर्म, महाराजा रणजीत सिंह के शासन और पंजाबी लोकगीत और संस्कृति का जीवंत दस्तावेज है। आईसीएस (इंडियन सिविल सर्विस) बनकर पंजाब आने वाले अधिकारियों को इस पुस्तक को पढ़ना जरुरी था, जिससे यहाँ के समाज, संस्कृति, धर्म और भाषा की पूरी जानकारी उन्हें मिल सके। 'पंजाबी बातचीत' उनकी दूसरी प्रसिद्ध पुस्तक है, जिसे इस भाषा का शब्दकोश कहा जा सकता है। यह पहली पुस्तक है जिसका स्वयं अंग्रेजों ने गुरुमुखी से रोमन में लिप्यांतरण किया। पंजाब विद्यालय शिक्षा बोर्ड मोहाली ने अभी भी इस पुस्तक को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल किया हुआ है।

ओम जय जगदीश हरे

पूरी दुनिया में हिन्दी बोलने-समझने वालों की संख्या करीब सत्तर करोड़ है। इनमें से बहुतों ने इस आरती को अपने जीवन में कभी न कभी गाया जरुर होगा, जिन्होंने गाया नहीं उन्होंने सुना अवश्य होगा। भारत सहित दुनिया के हर भाग में गायी जाने वाली 'ओम जय जगदीश हरे' आरती श्रद्धाराम फिल्लौरी के कंठ से निकली है। 1870 में 32 वर्ष की उम्र में उन्होंने यह रचना की। उनके जीवनकाल में ही यह आरती पंजाबी अंचल (पंजाब, हरियाणा, कांगडा व जम्मू) में लोकप्रिय हो चुकी थी। संभवत: हिन्दी में लिखी गई यह पहली रचना है, जिसका गुरुमुखी में अनुवाद हुआ। आरती का हिन्दी प्रदेशों में तेजी से प्रसार होने में फिल्मों व गायक कलाकारों ने भी योगदान दिया। 1970 में अभिनेता मनोज कुमार निर्देशित फिल्म पूरब-पश्चिम में इस आरती को स्वर महेन्द्र कपूर और ब्रजभूषण काबरा ने दिया। तब यह समझा जाने लगा कि यह मूल रूप से इसी फिल्म का गीत है। स्वर कोकिला स्व. लता मंगेशकर ने भी इसे गाया। श्रद्धा, भक्ति, प्रेम और करुणा के मानवीय मूल्यों पर आधृत यह रचना धार्मिक होने पर भी साम्प्रदायिक नहीं कही जा सकती। समर्पित भाव और ईश्वर की शरण के अलावा किसी विशेष पूजा-विधि के प्रति आग्रह न होने के कारण इस रचना की ग्राह्यता लगातार बढ़ती गई। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि श्रद्धाराम की 'ओम जय जगदीश हरे' आरती विश्व में सर्वाधिक लोगों द्वारा गायी जाने वाली हिन्दी रचना है। आरती लोकप्रिय होती गई, लेकिन आरतीकार विस्मृत होता गया। हिन्दीभाषी प्रदेशों ने आरती को तो मान दिया, लेकिन इसके रचनाकार को अपेक्षित सम्मान नहीं मिल पाया। यहाँ तक कि आरती का गायन करने वाले ज्यादातर लोग इसके रचनाकार के नाम से अनभिज्ञ है।

जेंडर संवेदनशीलता और भाग्यवती उपन्यास

'भाग्यवती' हिन्दी के शुरुआती उपन्यासों में शुमार है। कुछ लोग श्री निवासदास के 'परीक्षा गुरु' के स्थान पर इसे हिन्दी का पहला उपन्यास भी मानते हैं। उपन्यास की नायिका भाग्यवती पुत्री को जन्म देने पर अपने दुखी पति को समझाती है कि बेटे और बेटी में कोई अंतर नहीं है। विधवा विवाह को समर्थन, बाल-विवाह की मनाही जैसी विषयवस्तु का होना प्रमाण हैं कि श्रद्धाराम अपने समय से बहुत आगे था। मानो पंजाब और हरियाणा (तब पाकिस्तान का पंजाब, हिमाचल प्रदेश और हरियाणा भी वृहत पंजाब के ही हिस्से थे) में विषम लिंगानुपात की वर्तमान स्थिति को उन्होंने पहले ही भांप लिया था। जनजागरण का असर पंजाब में दूसरे राज्यों की अपेक्षा ज्यादा था। बाद में आर्य-समाज के प्रभाव ने जागृति को और अधिक पुष्ट किया। यह उपन्यास घर में रखा जाना जेंडर संवेदनशील होने और प्रगतिशीलता का भी प्रतीक माना जाता रहा। हिन्दी में महिलाओं को बराबरी का अहसास पहली बार इस उपन्यास ने कराया। बहुत पहले पंजाब में नववधू को बराबरी का प्रतीक भाग्यवती उपन्यास दहेज में दिया जाता था। मात्र 43 वर्ष की आयु में 24 जून 1881 को लाहौर में हिन्दी व पंजाबी के साहित्य-साधक श्रद्धाराम फिल्लौरी का निधन हुआ।

हरमोहिंदर सिंह बेदी आगे बढ़ा रहे हैं फिल्लौरी की विरासत

श्रद्धाराम के सम्पूर्ण साहित्य-कर्म को प्रकाश में लाने का कार्य पंजाबी और हिन्दी के साहित्यकार हरमोहिंदर सिंह बेदी कर रहे हैं। गुरुनानक विश्वविद्यालय के डीन व हिन्दी विभाग के अध्यक्ष रहे बेदी ने फिल्लौरी की सम्पूर्ण साहित्य-साधना को 'श्रद्धाराम रचनावली' शीर्षक से तीन खंडों में संपादित कर प्रकाशित करवाया है। पुस्तक में हिन्दी, पंजाबी, संस्कृत व उर्दू भाषाओं में लिखी गई उनकी रचनाएं संकलित हैं। बेदी को वर्ष 2022 में पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका। इससे पूर्व 2015 में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी उन्हें हिन्दी सेवी सम्मान से भी नवाज चुके। बेदी का मानना है कि श्रद्धाराम का भाग्यवती उपन्यास हिन्दी का पहला उपन्यास है।

उप प्राचार्य
राउमावि रोजवाडी, तूंगा, जयपुर
मो. 9829774877

नारी तू नारायणी

❐ इला पारीक

'या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।

'नारी तू नारायणी' का तात्पर्य है कि नारी, साक्षात नारायणी का स्वरूप है और वह सर्वोपरि है। नारी के कई रूपों का वर्णन वेदों, पुराणों और इतिहास में मिलता है। माँ दुर्गा भी नारी का दैवीय स्वरूप है। माँ दूर्गा को 'दुर्गतिनाशिनी' कहा जाता है। दुर्गुणों से मनुष्य और समाज की जो दुर्गति होती है, उसे नाश करने का आध्यात्मिक प्रतीक हैं देवी दुर्गा। जब भी संसार में नकारात्मक आसुरी प्रवृत्तियों की अति होती है, तब सकारात्मक दैवी शक्तियों का आह्वान होता है। इसीलिए प्रत्येक वर्ष नवरात्रि पर नव दुर्गा रूपी नौ शक्ति स्वरूपों का आह्वान और आराधना होती है। नौ दिन के लिए अष्ट भुजाधारी देवियों की मूर्ति और झांकी बनाई जाती है। प्रतिष्ठित देवियों से वरदान प्राप्ति के लिए व्रत, उपवास और उपासना की जाती है। दसवें दिन महादुर्गा के महिषासुर वध करने पर विजय उत्सव भी मनाया जाता है।

इन त्योहारों के माध्यम से आध्यात्मिक मर्म और श्रेष्ठ संदेश को समझने और उन्हें जीवन में उतारने की आवश्यकता है। वास्तव में देवी और दानवों के बीच का यह युद्ध बाहरी नहीं है, यह अपने अंदर चलने वाला युद्ध है। यह युद्ध प्रत्येक मानव के अंतर्निहित दैवीय और दानवीय दुर्गुणों के बीच का है।

नौ दिन तक पूजी जाने वाली देवी को शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कुष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी, सिद्धिदात्रि को नौ देवियों को रूप में दिखाते हैं-

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति. चतुर्थकम्॥
पंचमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च।
सप्तमं कालरात्रीति.महागौरीति चाष्टमम्॥
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना।

ये नौ देवियां वास्तव में आध्यात्मिक ज्ञान, पवित्रता, शांति, दिव्यता, प्रेम, सुख, करुणा, आनंद एवं आत्मसंतुष्टि जैसी नौ सात्विक शक्तियों की प्रतीक हैं। जीवन में पूर्णता, सर्वसिद्धि और सदा सफलता के लिए आध्यात्मिक ज्ञान, योग, ध्यान, धारणा और निस्वार्थ सेवा से अपने अंदर सोयी हुई इन सात्विक शक्तियों को जगाने की आवश्यकता है। इसी तरह शुंभ-निशुंभ, चंड-मुंड, रक्तबीज और महिषासुर आदि दैत्य मूल रूप में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, आलस्य आदि अनेक तामसिक हानिकारक वृत्तियों के सूचक हैं। इन दुष्प्रवृतियों को समाप्त करने के लिए, सृष्टि की आदिशक्ति, अष्टभुजाधारी महादेवी दुर्गा ने योगसाधना से भगवान शिव से दिव्य शक्तियां प्राप्त की। विभिन्न देवी-देवताओं से भी दैवी गुण रूपी अस्त्र-शस्त्र ग्रहण करके विकार रूपी दानवीय कुसंस्कारों का संहार किया।

नारी के प्रमुख तीन रूप पुत्री, पत्नी और माता हैं। इनमें माता का रूप सर्वाधिक प्रशंनीय माना गया है। हमारे शास्त्रों में 'मातृ देवो भव' कहकर माता को देव स्वरूप माना गया है। वेदों में तो सम्पुर्ण धरित्री को माता के रूप में माना है, तभी तो कहा गया है-

'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः'।

भारतीय संस्कृति में नारी को वंदनीय माना गया है। मनुस्मृति में लिखा गया है कि

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

अर्थात्-जहाँ नारी की पूजा होती है, वहां देवता निवास हैं। इसके विपरीत यदि नारी के सम्मान नहीं किया जाता तो महर्षि मनु चेतावनी देते हुए लिखते हैं-

यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वस्तत्राफलाः क्रियाः॥
मनुस्मृति 3/56

अर्थात् जहाँ भी इनकी पूजा (सम्मान)नहीं होती, वहाँ सभी कार्य विफल हो जाते हैं।

आज महिलाएँ हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही हैं। शिक्षा के प्रसार से भारतीय महिलाओं ने साहित्य, विज्ञान, चिकित्सा और खेल विज्ञान में अपनी अलग पहचान बनाई है। आज की नारी का सफर चुनौती भरा जरूर है, पर आज उसमें चुनौतियों से लड़ने का साहस आ गया है। अपने आत्मविश्वास के बल पर आज वह दुनिया में अपनी एक अलग पहचान बना रही है। आज की नारी आर्थिक व मानसिक रूप से आत्मनिर्भर है। कामकाजी महिलाएं परिवार व अपने कैरियर दोनों में तालमेल बैठाते हुए परिवार की समृद्धि में अपना योगदान दे रही है। चुनौतियों का हँसकर स्वागत करने वाली महिलाएँ आज हर क्षेत्र में अपना लोहा मनवा रही हैं। कल तक भावनात्मक रूप से कमजोर महिलाएँ आज आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रही हैं तथा अपनी जिंदगी के महत्त्वपूर्ण फैसले स्वयं कर रही हैं।

सामाजिक स्तर पर परित्यक्ता व विधवा जैसे शब्द उसके मार्ग का रोड़ा बनकर उसे आगे बढ़ने से रोकते हैं पर इतने पर भी वह अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने का सही मौका तलाश ही लेती है और कामयाबी के नित नए कीर्तिमान रचती जाती है।

अपनी क्षमताओं से महिलाओं ने आज पुरुषों को पीछे छोड़ते हुए परिवार व समाज में एक अलग पहचान बनाई है। हमें यह याद रखना चाहिए कि नारी शक्ति का नाम है, इसलिए नारी का सम्मान सभी का प्रथम और आवश्यक कर्त्तव्य है। महाकवि जयशंकर प्रसाद जी कहते हैं - ''नारी! तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास रजत-नग पगतल में। पीयूष स्रोत सी बहा करो जीवन के सुंदर समतल में।''

आज की महिलाएं राजनीति, सामाजिक सेवा, सैन्य क्षेत्र, आर्थिक, प्रशासनिक सेवा और प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में पूरी तरह से भाग लेती हैं। इसके अलावा, उन्होंने खेलों में भी पूरा योगदान दिया है। इस प्रकार, उन्होंने परिवार और समाज में एक सम्मानजनक स्थान प्राप्त किया है। इसीलिए तो कहा जाता है 'नारी तू नारायणी।'

उप प्राचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
स्वरूपदेसर, बीकानेर।

आदेश-परिपत्र : अक्टूबर, 2024

1. जिला समान परीक्षा व्यवस्था के सम्बन्ध में नवीन दिशा–निर्देश
2. विद्यार्थियों को दिए जाने वाले सत्रांकों में वृक्षारोपण के अंकीय प्रावधान किए जाने के संबंध में
3. भण्डार भौतिक सत्यापन एवं नाकारा समान के निस्तारण की कार्यवाही सुनिश्चित कर शाला दर्पण मॉड्यूल में आवश्यक सूचना प्रविष्ट करने बाबत्

1. जिला समान परीक्षा व्यवस्था के सम्बन्ध में नवीन दिशा–निर्देश

• कार्यालय–निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक : शिविरा–माध्य/मा–स/समान परीक्षा/22402/2014–24/263–66 दिनांक 05–09– 2024

–: आदेश :–

वर्तमान व्यवस्था के अनुरूप कक्षा 09 से 12 तक की अर्द्धवार्षिक एवं कक्षा 9 एवं 11 की वार्षिक परीक्षा प्रदेश के समस्त जिलों में समान परीक्षा योजनान्तर्गत आयोजित की जाती रही है। वर्तमान परिस्थितियों के मध्यनजर उक्त परीक्षाओं में समरुपता तथा समान समय सारणी की दृष्टि से पुनः संशोधन/निर्धारण किया जाना है । अतः अग्रांकित नवीन दिशा-निर्देश, इस कार्यालय द्वारा जारी पूर्व परिपत्र दिनांक : 02.06.2014 के पूरक रूप (अतिरिक्त) में जारी किए जाते हैं। समान परीक्षा व्यवस्था के सन्दर्भ में जारी उक्त नवीनतम दिशा-निर्देश (प्रश्न-पत्र निर्माण, मुद्रण एवं निविदा आदि के सम्बन्ध में) शैक्षिक सत्र : 2024-25 से प्रभावी होंगे :-

नवीन समान परीक्षा व्यवस्था :-

राज्य स्तरीय समान परीक्षा समिति का गठन किया जाता है, जिसका प्रारूप इस प्रकार होगा : -

1. अतिरिक्त निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर - अध्यक्ष

2. कोई 04 संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा, राजस्थान (निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा नामित) - सदस्य

3. सहायक निदेशक, गुणवत्ता एवं नवाचार अनुभाग, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर - सदस्य सचिव

राज्य स्तरीय समान परीक्षा समिति के कार्य : -

1. उक्त समिति ''राज्य स्तरीय समान परीक्षा नोडल'' का चयन करेगी । चयनित नोडल उक्त समिति में सम्मिलित संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा के अतिरिक्त शेष संभागों में से किसी 01 संभाग का संयुक्त निदेशक होगा।

यह चयन अधिकतम 02 वर्ष के लिए होगा तथा सम्बन्धित संयुक्त निदेशक अधिकारी के कार्यरत होने की स्थिति में ही होगा।

2. उक्त समिति राज्य स्तरीय समान परीक्षा के लिये प्रति विद्यार्थी शुल्क की दर निर्धारित करेगी । उक्त शुल्क में जिला स्तर पर प्रश्न पत्र वितरण के लिये आवश्यक राशि भी सम्मिलित होगी । जिला समान परीक्षा संयोजक द्वारा उक्त दर से शुल्क एकत्रित कर जिला स्तर पर प्रश्न पत्र वितरण की राशि की कटौति कर शेष राशि **''राज्य स्तरीय समान परीक्षा नोडल''** को जमा करवाई जाएगी।

3. निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा अलग-अलग विषयों के प्रश्न-पत्र गोपनीय रूप से मुद्रण करवाने हेतु प्रिंटिंग प्रेस/फर्मों से निविदा आमंत्रित की जाएगी तथा संबंधित गोपनीय फर्म को प्रश्न-पत्र मुद्रण व छपाई का कार्य सौंपेगी।

4. **''राज्य स्तरीय समान परीक्षा नोडल''** द्वारा प्राप्त अलग-अलग विषयों के प्रश्न-पत्र गोपनीय रूप से मुद्रण हेतु गोपनीय प्रेस को उपलब्ध करवाये जायेगें तथा प्रश्न-पत्रों की प्राप्ति के पश्चात गोपनीय फर्म का भुगतान किया जाएगा।

''राज्य स्तरीय समान परीक्षा नोडल'' के कार्य :-

● **''राज्य स्तरीय समान परीक्षा नोडल''** द्वारा अलग-अलग संभागों को अलग-अलग प्रश्न-पत्र निर्माण हेतु आवंटित किए जाएगें। यह आवंटन का कार्य पूर्णतया गोपनीय होगा। इसकी जानकारी राज्य स्तरीय समान परीक्षा समिति को भी नहीं होगी।

● अलग-अलग विषयों के प्रश्न-पत्र निर्माण व मॉडरेशन का कार्य अलग-अलग संभाग/मण्डल को दिया जाएगा।

● जब अलग-अलग मण्डलों द्वारा अलग-अलग विषयों के प्रश्न-पत्र तैयार हो जाएंगे तो सम्बन्धित **''राज्य स्तरीय समान परीक्षा नोडल''** उन प्रश्न-पत्रों को गोपनीय रूप से प्राप्त कर लॉकर में सुरक्षित रखेगा।

● उक्त प्रश्न-पत्रों की छपाई के पश्चात गोपनीय फर्म सम्बन्धित जिलों के समान परीक्षा संयोजक विद्यालयों को सीधे ही प्रश्न-पत्र पहुँचा देगी, जो निदेशालय द्वारा की गई निविदा शर्तों में शामिल रहेगा।

● इसके पश्चात वर्तमान व्यवस्था के अनुसार ही प्रश्न-पत्रों का वितरण विद्यालयों को किया जाएगा।

● समान परीक्षा व्यवस्था हेतु आवश्यक कार्मिको की ड्यूटी शाला दर्पण के स्टाफ ड्यूटी मॉनिटरिंग मॉड्यूल के माध्यम से ही लगाई जाएगी। किसी भी स्थिति में ऑफलाइन आदेश जारी नही किए जाएगे।

''जिला समान परीक्षा समिति'' के कार्य :-

● प्रश्न पत्रों के निर्माण, मॉडरेशन (अनुसीमन), मुद्रण एवं शुल्क निर्धारण के अलावा सम्पूर्ण दायित्व कार्यालय हाजा के परिपत्र दिनांक : 02.06.2014 के अनुसार यथावत रहेंगे।

● समान परीक्षा व्यवस्था हेतु आवश्यक कार्मिको की ड्यूटी शाला दर्पण के स्टाफ ड्यूटी मॉनिटरिंग मॉड्यूल के माध्यम से ही लगाई जाएगी। किसी भी स्थिति में ऑफलाइन आदेश जारी नही किए जाएंगे।

उपर्युक्त क्रम में समान परीक्षाओं के आयोजन के सम्बन्ध में अतिरिक्त कार्य पूर्व में जारी परिपत्र दिनांक : 02.06.2014 के अनुरूप ही रहेंगी।

(आशीष मोदी) आई.ए.एस. निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर।

2. विद्यार्थियों को दिए जाने वाले सत्रांकों में वृक्षारोपण के अंकीय प्रावधान किए जाने के संबंध में।

• कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • क्रमांकः शिविरा-माध्य/गुण एवं प्रशि अनु/गुण प्र/परीक्षा 61196/2024-25 दिनांक 06-09- 2024 • समस्त संभागीय संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा • समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजना समन्वयक, समग्र शिक्षा • समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक/प्रारम्भिक शिक्षा • समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी एवं ब्लॉक सन्दर्भ केन्द्र प्रभारी, समग्र शिक्षा • समस्त पीईईओ/यूसीईईओ।

विषयः- विद्यार्थियों को दिए जाने वाले सत्रांकों में वृक्षारोपण के अंकीय प्रावधान किए जाने के संबंध में।

प्रसंगः- माननीय शिक्षा मंत्री महोदय की अध्यक्षता में वृक्षारोपण के संबंध में आयोजित वी.सी में प्रदत्त निर्देशों के क्रम में।

संदर्भः- कार्यालय हाजा के समसंख्यक पत्र दिनांक 05.09.2024 की निरंतरता में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत एवं संदर्भित पत्र की निरंतरता में बोर्ड विद्यार्थियों के सत्रांकों में विद्यार्थी द्वारा किए गए वृक्षारोपण के भी अंक स्थायी रूप से निर्धारित करने के संबध में कक्षावार तथा विषयवार विवरण अग्रानुसार है-

1. बोर्ड कक्षाओं (कक्षा 5, 8, 10 तथा 12) की परीक्षा देने वाले विद्यार्थियों के सत्रांकों में वृक्षारोपण अंक :–

कक्षा 5

कक्षा	विषय	प्रोजेक्ट अंक	सद्व्यवहार के अंक में से वृक्षारोपण हेतु	वृक्षारोपण के अंक
5	हिन्दी, अंग्रेजी तथा गणित	01 अंक प्रति विषय	01 अंक प्रति विषय	02 अंक प्रति विषय
5	पर्यावरण	03 अंक	01 अंक	04 अंक
	वृक्षारोपण हेतु (कुल अंक)	**06**	**04**	**10**

कक्षा 8

कक्षा	विषय	प्रोजेक्ट अंक	सद्व्यवहार के अंक में से वृक्षारोपण हेतु	वृक्षारोपण के अंक
8	हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, सामाजिक विज्ञान,एवं तृतीय भाषा	00 अंक प्रति विषय	01 अंक प्रति विषय	05 अंक
8	विज्ञान	04 अंक	01 अंक	05 अंक
	वृक्षारोपण हेतु (कुल अंक)	**04**	**06**	**10**

कक्षा 10

कक्षा	विषय	प्रोजेक्ट अंक	सद्व्यवहार के अंक में से वृक्षारोपण हेतु	वृक्षारोपण के अंक
10	हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, सामाजिक विज्ञान,एवं तृतीय भाषा	00 अंक प्रति विषय	01 अंक प्रति विषय	05 अंक
10	विज्ञान	01 अंक	01 अंक	02 अंक
	वृक्षारोपण हेतु कुल अंक	**01**	**06**	**07**

कक्षा 12

कक्षा	विषय	प्रोजेक्ट अंक	सद्व्यवहार के अंक में से वृक्षारोपण हेतु	वृक्षारोपण के अंक
12	हिन्दी अनिवार्य तथा अंग्रेजी अनिवार्य	01 अंक प्रति विषय	01 अंक प्रति विषय	04 अंक (02 अंक प्रति विषय)
12	वैकल्पिक विषय 1 वैकल्पिक विषय 2 वैकल्पिक विषय 3	00 अंक प्रति विषय	01 अंक प्रति विषय	03 अंक (01 अंक प्रति विषय)
	वृक्षारोपण हेतु कुल अंक	**02**	**05**	**07**

उक्त विवरणानुसार वृक्षारोपण के लिए बोर्ड कक्षाओं में निम्न प्रावधान किए जाते है —

- कक्षा 12 वीं के लिए 07 अंक सभी विषय सहित (सभी विषयों के सत्रांक में से)
- कक्षा 10 वीं के लिए 07 अंक सभी विषय सहित (सभी विषयों के सत्रांक में से)
- कक्षा 08 वीं के लिए 10 अंक सभी विषय सहित (सभी विषयों के सत्रांक में से)
- कक्षा 05 वीं के लिए 10 अंक सभी विषय सहित (सभी विषयों के सत्रांक में से)

2.गैर बोर्ड कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए वृक्षारोपण अंक :—

वृक्षारोपण के लिए गैर बोर्ड कक्षाओं के लिए सभी विषयों में वृक्षारोपण हेतु निम्नांकित प्रावधान किया गया है।

कक्षा 6 एवं 7

कक्षा	विषय	मौखिक परीक्षा में से	तृतीय परख में से	वृक्षारोपण के अंक
6, 7	हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, सामाजिक विज्ञान एवं तृतीय भाषा	01 अंक प्रति विषय	00 अंक प्रति विषय	05 अंक
6, 7	विज्ञान	03 अंक	02 अंक	05 अंक
	वृक्षारोपण हेतु कुल अंक	**08**	**02**	**10**

कक्षा 9

कक्षा	विषय	तृतीय परख में से	वृक्षारोपण के अंक
9	हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, सामाजिक विज्ञान एवं तृतीय भाषा	01 अंक प्रति विषय	05 अंक
9	विज्ञान	02 अंक	05 अंक
	वृक्षारोपण हेतु कुल अंक	**07**	**07**

कक्षा 11

कक्षा	विषय	वृक्षारोपण के अंक	तृतीय परख में से
11	हिन्दी अनिवार्य तथा अंग्रेजी अनिवार्य	02 अंक प्रति विषय	04 अंक
11	वैकल्पिक विषय 1 वैकल्पिक विषय 2 वैकल्पिक विषय 3	01 अंक प्रति विषय	03 अंक
	वृक्षारोपण हेतु कुल अंक	**07**	**07**

उक्त दिशा–निर्देशों की अक्षरशः पालना सुनिश्चित की जावे।

3. भण्डार भौतिक सत्यापन एवं नाकारा समान के निस्तारण की कार्यवाही सुनिश्चित कर शाला दर्पण मॉड्यूल में आवश्यक सूचना प्रविष्ट करने बाबत्।

• कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • क्रमांकः शिविरा / माध्य/लेखा/डी-2/नकारा/अनुपयोगी समान/अभिलेख निस्तारण /2801/3/2023-05160/पार्ट-1 दिनांक 05-09-2024 • समस्त संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा • समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक • विषय : भण्डार भैतिक सत्यापन एवं नकारा सामान के निस्तारण की कार्यवाही सुनिश्चित कर शाला दर्पण मॉडयूल में आवश्यक सूचना प्रविष्ट करने बाबत्।

प्रसंगः इस कार्यालय का समसंख्यक पत्र दिनांक : 17.05.2024 (RajKaj Ref.No-7252622) व अर्द्ध शासकीय पत्र दिनांक : 05.06.2024 (RajKaj Ref.No-7713253), समसंख्यक पत्र दिनांक : 10.07.2024 (RajKaj Ref.No-8488087) एवं पत्र दिनांक : 10.08.2024 (RajKaj Ref.No-9349876)

सदंर्भ : श्रीमान् शासन सचिव, स्कूल शिक्षा की अध्यक्षता में आयोजित बैठक दिनांक : 27.04.2024 प्रदत्त निर्देश के क्रम में बैठक कार्यवाही विवरण क्रमांक : शिविरा-माध्य/मोनि/सचिव बैठक/2024-25 दिनांक-28.04.2024 राजकाज रेफरेन्स नम्बर 6823718 एवं श्रीमान् शासन सचिव महोदय, स्कूल शिक्षा विभाग की अध्यक्षता में दिनांकः 15.06.2024 को आयोजित बैठक के क्रम में प्राप्त कार्यवाही विवरण क्रमांकः F.17(1)Edu-1/2022 Part-1-01693-part file(2) जयपुर दिनांक : 27.06.2024 राजकाज रेफरेन्स नं. 8291647 के बिन्दु संख्या 11 के उप बिन्दु -2 के क्रम में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि आपको प्रासंगिक निर्देश पत्रों के माध्यम से निर्देशित किया गया था कि आप अपने क्षेत्राधिकार में समस्त राजकीय कार्यालय एवं राजकीय विद्यालयों में नाकारा समान का निस्तारण हेतु भौतिक सत्यापन की रिपोर्ट के आधार पर बेशी / अनुपयोगी / अप्रचलित सामान का निस्तारण सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियमों के पार्ट-ा के नियम 16 से 27 में अंकित प्रावधानों के अनुसार विज्ञ कार्मिकों के एक दल का गठन कर 15 अगस्त, 2024 तक भौतिक सत्यापन संबंधी कार्य एवं उसके पश्चात् आवश्यक रूप से नाकारा सामान के निस्तारण की कार्यवाही 30 सितम्बर, 2024 तक करवाया जाना सुनिश्चित करें।

उक्त आदेशों के क्रम में आशा है कि आप द्वारा इस संबंध में निर्धारित समयावधि में अपने क्षेत्राधिकार में समस्त राजकीय कार्यालय एवं राजकीय विद्यालयों में भण्डार के भौतिक सत्यापन की कार्यवाही पूर्ण कर संभवतया नाकारा समान निस्तारण की कार्यवाही प्रारंभ कर दी गई होगी।

नाकारा समान निस्तारण संबंधी सूचना को शाला दर्पण पोर्टल पर अपलोड करने हेतु विभाग द्वारा एक मॉड्यूल संलग्नानुसार लाइव किया जा चुका है (मॉड्यूल स्क्रीन शॉट संलग्न)। अतः आपको निर्देशित किया जाता है कि आप अपने क्षेत्राधिकार में समस्त राजकीय कार्यालय एवं राजकीय विद्यालयों संबंधी सूचना उक्त मॉड्यूल में प्रविष्ट करवाया जाना सुनिश्चित करावें।

मॉड्यूल में गलत सूचना प्रविष्ट होने या अन्य किसी कारण से अपलोड की गई सूचना में आवश्यक सुधार की स्थिति हेतु सम्बन्धित मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी के माध्यम से उक्त मॉड्यूल को अनलॉक करवाया जाकर आवश्यक सुधार किया जा सकता है। उक्त कार्य हेतु आप अपने कार्यालय में किसी एक विज्ञ अधिकारी को उक्त कार्य की दिन ब दिन मोनिटरिंग हेतु नोडल अधिकारी नियुक्त करावें।

कृपया इसे सर्वोच्च प्राथमिकता देवें।

संलग्न-यथोक्त।

संजय धवन, वित्तीय सलाहकार माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर।

अक्टूबर-2024					
रवि		6	13	20	27
सोम		7	14	21	28
मंगल	1	8	15	22	29
बुध	2	9	16	23	30
गुरु	3	10	17	24	31
शुक्र	4	11	18	25	
शनि	5	12	19	26	

अक्टूबर 2024 • कार्यदिवस-19, रविवार-04, अवकाश-08, उत्सव 02 • 01 अक्टूबर- विद्यालय समय परिवर्तन-1. एक पारी विद्यालय -प्रातः 10:00 AM से सायं 04:00 PM तक। 2. दो पारी विद्यालय -प्रातः 07:30 AM से सायं 05:30 PM तक (प्रत्येक पारी 5:00 घंटे), **01 से 02 अक्टूबर** - राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन जारी (तृतीय समूह) आयु वर्ग 14/17/19 वर्ष (छात्र -छात्रा) हेतु, **2 अक्टूबर** - महात्मा गाँधी जयन्ती (अवकाश-उत्सव)/लाल बहादुर शास्त्री जयन्ती (उत्सव), **3 अक्टूबर** - नवरात्रा स्थापना (अवकाश) एवं महाराजा अग्रसेन जयन्ती, **7 से 9 अक्टूबर** - जिला स्तरीय विज्ञान मेला (तीन दिन) (RSCERT), **07 से 13 अक्टूबर** - राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन (चतुर्थ समूह) आयु वर्ग 17/19 वर्ष (छात्र -छात्रा) हेतु (अधिकतम 05 दिन), **10 अक्टूबर** - विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस (SmSA), **11 अक्टूबर - दुर्गाष्टमी (अवकाश)**/अन्तर्राष्ट्रीय बालिका दिवस (उत्सव) (SmSA), **12 अक्टूबर - विजय दशमी (अवकाश), 13 अक्टूबर** - विश्व दृष्टि दिवस (SmSA), **14 से 15 अक्टूबर** - रोल प्ले एवं लोक नृत्य प्रतियोगिता राज्य स्तरीय (RSCERT), **14 से 16 अक्टूबर** - द्वितीय परख/एसए-1 एवं पूर्व कक्षा दक्षता आधारित आंकलन-1, **19 अक्टूबर** - सामुदायिक बाल सभा-विद्यालय स्तर पर, **25 व 26 अक्टूबर** - जिला स्तरीय शिक्षक सम्मेलन, **27 अक्टूबर से 07 नवम्बर - मध्यावधि अवकाश, 31 अक्टूबर** - सरदार वल्लभ भाई पटेल जयन्ती (राष्ट्रीय एकता दिवस)/इन्दिरा गाँधी पुण्य तिथि (संकल्प दिवस), **31 अक्टूबर - दीपावली (अवकाश) नोट** - 1. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतियोगिता का जिला स्तर पर आयोजन 2. शिक्षकों के व्यावसायिक कौशल एवं उन्नयन प्रतियोगिता का जिला स्तर पर आयोजन। 3. मध्यावधि अवकाश के दौरान कक्षा 07 व 08 के विद्यार्थियों हेतु शैक्षिक भ्रमण का आयोजन।

अधिगम के लिए मज़ेदार तरीक़ों का उपयोग

❒ डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता

कक्षा में सीखने के लिए शिक्षक और विद्यार्थी दोनों को निरन्तर प्रयास करने पड़ते हैं। इसके लिए एक ऐसे वातावरण की आवश्यकता होती है जो प्रेरणा प्रदान करे क्योंकि दिए गए कार्य की प्रकृति, शिक्षार्थियों की अपेक्षाएँ, जानकारियों को प्रस्तुत करने के तरीक़े - इन सभी का प्रभाव अधिगम पर पड़ता है। हम बड़ी आसानी से यह देख सकते हैं कि अधिगम के विभिन्न आयाम कौनसे हैं और उदाहरणों, अधिगम की गतिविधियों तथा बच्चों द्वारा अपने अधिगम को संसाधित करने के लिए उपयोग में लाए जाने वाले विभिन्न तरीक़ों की मदद से अधिगम कैसे होता है।

वातावरण में बदलाव

पहले दिन मैंने बालकों को समूहों में विभाजित किया। हमने दस समूह बनाए और प्रत्येक में लगभग नौ विद्यार्थी थे। मैंने प्रत्येक समूह को कहानी की पुस्तकें दीं और कहा कि वे उन्हें पढ़कर आपस में चर्चा करें, जो पात्रों, कहानी (कथानक), संवाद आदि पर हो सकती है। इन चर्चाओं के आधार पर उन्हें एक नाटक तैयार करना था। समूह के प्रत्येक सदस्य ने कहानियाँ पढ़ीं और फिर चर्चा और आम सहमति के बाद उन्होंने नाटक का अन्तिम प्रारूप तैयार किया।

दूसरे दिन सब लोग बड़े समूह में मिले, अपनी-अपनी कहानियां साझा की और उनमें आने वाले विभिन्न चरित्रों/पात्रों के बारे में बताया। इस सारी प्रक्रिया के परिणामस्वरूप हमने कठपुतली का कार्यक्रम आयोजित करने की सोची।

कठपुतली का कार्यक्रम

इसके बाद वे अपनी कहानियों के लिए कठपुतलियाँ तैयार करने में लग गए। विचार यह था कि पहले, पात्र के चेहरे का चित्र बनाया जाए, उदाहरण के लिए, अगर कहानी में एक शेर का चरित्र था तो उन्होंने शेर का चेहरा बनाया और उसमें रंगभरा, फिर उन्होंने कठपुतली को सहारा देने के लिए उसे गत्ते के एक टुकड़े पर चिपकाया। चिपकाने के बाद उन्होंने कठपुतली पर एक पतली छड़ी लगाई और बस, उनकी कठपुतलियाँ प्रदर्शन के लिए तैयार हो गईं। तीसरे दिन हमने अपना नाटक प्रस्तुत किया।

मंच तैयार था। विद्यार्थी छड़ी वाली कठपुतलियों को पकड़े हुए पर्दे के पीछे खड़े थे। वे इस तरह से खड़े हुए थे कि केवल कठपुतलियाँ नज़र आएँ। प्रत्येक समूह ने एक-एक करके अपना नाटक प्रस्तुत किया। पहला नाटक था 'ईमानदार लकड़हारा'। विद्यार्थियों ने हर बारीकी को ध्यान में रखते हुए नाटक को खूबसूरती के साथ प्रस्तुत किया। प्रस्तुति के बाद प्रत्येक प्रतिभागी ने अपना और उस पात्र का परिचय दिया जिसे वे निभा रहे थे। प्रदर्शन के बाद नाटक पर सवाल-जवाब का दौर चला। कुछ सवाल उठाए गए- जैसे, अगर आदमी सभी कुल्हाड़ियाँ ले जाता तो क्या होता? उसने लोहे से बनी कुल्हाड़ी क्यों चुनी? इसके बाद जो चर्चा हुई उसने इन विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन की घटनाओं के बारे में सोचने के लिए प्रेरित किया।

अगला नाटक था, 'बड़ा कौन'। कहानी का सन्देश, जो दर्शकों की ओर से ही आया, यह था कि अपने आकार के कारण किसी की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। पृथ्वी पर प्रत्येक जीव समान सम्मान और गरिमा का पात्र है। कठपुतली के प्रदर्शन के बाद विद्यार्थी बहुत उत्साहित और ख़ुश थे।

बाल-अखबार

अगली गतिविधि के लिए मैंने बच्चों से कहा कि वे अपने गाँव में होने वाली कुछ नई चीज़ों का अवलोकन करें। अगले दिन उनके पास हमें बताने के लिए बहुत कुछ था। इसलिए मैंने पहले एक समाचार पत्र के विभिन्न हिस्सों पर चर्चा की, जैसे समाचार, रिपोर्ट, विज्ञापन आदि। मैंने उन्हें फिर से समूहों में विभाजित किया और उनसे कहा कि उनके पास जो भी समाचार हों, उन्हें लिखें।

यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि बच्चों ने छोटी-से-छोटी बात को भी बहुत ध्यान से देखा था। कई विद्यार्थियों ने पिछले दिन हुई मूसलाधार बारिश के बारे में लिखा था। उनमें से कुछ के माता-पिता की सब्ज़ियों और फलों की दुकान थी, उन्होंने लिखा कि इस बारिश का उन पर क्या प्रभाव पड़ा। फिर विज्ञापनों की बारी आई। कई विज्ञापन थे- शैम्पू, दवाइयाँ और यहाँ तक कि स्कूल के एक विज्ञापन में वहाँ पर दी जाने वाली सुविधाओं पर भी प्रकाश डाला गया था। जिस विज्ञापन ने मेरा ध्यान खींचा, वह था तम्बाकू का विज्ञापन जिसमें धूम्रपान की बुराइयों के बारे में बताया गया था।

विद्यार्थियों से इन्हें एकत्र करने के बाद, अगला चरण था एक समाचार पत्र के रूप में इन्हें 'प्रकाशित' करना, अर्थात इन लेखों को एक चार्ट पेपर पर चिपकाना। यह कार्य करने के लिए एक टीम भी थी, जिसे 'प्रकाशन टीम' का नाम दिया गया। इस टीम की यह ज़िम्मेदारी थी कि वह समाचार पत्र को डिज़ाइन करे। उन्होंने चार्ट पेपर पर समाचार और विज्ञापन चिपकाए।

अब हमारे पास अपना बाल-अख़बार था, बच्चों द्वारा बनाया गया अख़बार! जब इसे प्रदर्शित किया गया तो बच्चों को बहुत बड़ी उपलब्धि का अनुभव हुआ।

बच्चों ने क्या सीखा

इन गतिविधियों के बाद शिक्षकों और मैंने देखा कि अब विद्यार्थी खुद को अधिक-से-अधिक व्यक्त करने लगे थे। इन गतिविधियों में सभी विद्यार्थियों को भाग लेने का मौका मिला था और इसने उन्हें अपने विचारों को सबके सामने रखने का आत्म-विश्वास दिया था। कठपुतली प्रदर्शन के लिए किए गए पूर्वाभ्यासों (रिहर्सल) से उनके मन में यह भावना जगी कि उन्हें अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना चाहिए। उन्होंने अपने तरीक़े से कहानियों में सुधार किया जो भाषा सीखने का एक अच्छा तरीक़ा बन गया। कठपुतली के प्रदर्शन से विद्यार्थियों को मानसिक छवि निर्मित करने में सक्षम और अधिक रचनात्मक तथा कल्पनाशील बनाने के भाषा-शिक्षण के उद्देश्य भी सम्भवतः पूरे हो सके क्योंकि विद्यार्थियों ने प्रदर्शन करते समय अपनी कल्पनाओ और अपने विचारों का प्रयोग किया था।

बाल-अख़बार गतिविधि ने विद्यार्थियों को अधिक सचेत रहने और बारीकी से अवलोकन करने की शिक्षा दी। उन्होंने अपने आस-पास होने वाली हर घटना की, हर उस बात पर बारीकी से ध्यान दिया जिस पर आमतौर पर किसी का ध्यान नहीं जाता। चार्ट पेपर पर समाचारों को चिपकाने से उन्हें अपने स्थानिक ज्ञान का उपयोग करने में मदद मिली जिसका उपयोग गणित के शिक्षण में किया जा सकता है। समाचार और विज्ञापनों के रूप में अपने अनुभवों को व्यक्त करने से उन्हें अपने विचारों को सामने रखने का मौका मिला। इन सबसे मुझे यह समझने में मदद मिली है कि अधिगम कहीं भी हो सकता है: फिर चाहे वह कक्षा हो या खेल का मैदान। हमें केवल एक चीज़ का ध्यान रखना है और वह यह है कि हमें कक्षा का वातावरण शिक्षार्थियों के अनुकूल और पूरी तरह से भय मुक्त रखना चाहिए। प्रत्येक बच्चे को किसी भी मंच पर खुद को व्यक्त करने के लिए उचित स्थान दिया जाना चाहिए और तभी अधिगम भी होगा।

सहायक आचार्य,
अग्रवाल महिला शिक्षक प्रशिक्षण
महाविद्यालय, गंगापुर सिटी (राज.)
मो. 9462607259

डाक खत की लिखावट

❒ सुभाष चन्द्र कस्वाँ

प्रतिवर्ष 9 अक्टूबर को विश्व डाक दिवस मनाया जाता है क्योंकि ठीक इस दिन यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन की सालगिरह है। इसके एक दिन पश्चात 10 अक्टूबर को राष्ट्रीय डाक दिवस मनाया जाता है । इसकी वजह यह है कि इस दिन सन् 1854 में लार्ड डलहौजी ने भारत में डाक सेवा की शुरूआत की थी। भारतीय डाक विभाग द्वारा 170 वर्षों द्वारा निभाई जा रही सेवा को मान्यता देना भी उसके उद्देश्य का एक बड़ा हिस्सा है । डाक सेवा ने कबूतर से लेकर हवाई जहाज तक का सफर किया है । इसका जीवन वृत्त बड़ा ही रोचक रहा है। जिस पोस्ट कार्ड की कीमत किसी समय चार पैसा हुआ करती थी। उस डाक सेवा ने अगस्त 1986 में स्पीड-पोस्ट को डाक सेवा का अहम हिस्सा बनाकर शुरूआती दौर में उत्तर से दक्षिण व पूर्व से पश्चिम तक आवश्यक डाक को तीव्रगति से महज 25 रुपये के भार से पहुँचाना शुरू कर दिया था। इससे पूर्व जल्दी सूचना पाने का एक मात्र जरिया तार (टेलीग्राम) हुआ करता था । इस सेवा ने देश भर में खुशियों व गम के समाचार पहुँचाए। नई प्रौद्योगिकी व तकनीकी के आगमन से तार इस लड़ाई से पार नहीं पा रहा था जिसकी वजह से इस 160 वर्ष पुरानी सेवा 25 जुलाई 2013 से बंद करनी पड़ी। पोस्टकार्ड का मेघदूत जो 25 पैसे में पूरे भारत में पहुँच जाता था उसे भी लिखावट की घटती ताकत ने हासिए पर पहुँचा दिया। फौजी भाई अपने घर के हाल-चाल जानने के लिए इसी सस्ते माध्यम का प्रयोग किया करते थे किसी जमाने में । किसी के घर में मनीआर्डर लेकर जब कोई डाकिया पहुँच जाता तब मनीआर्डर पाने वाले की खुशियां बेलगाम हो जाती थी । आज पेटियम ने इस सारे माहौल को एक अलग ही दुनिया में लाकर खड़ा कर दिया है।

कभी Philatedly (डाक टिकटों का संग्रहण) भी रोचक व उमंग भरा कार्य हुआ करता था जिसमें हमारी कला, संस्कृति व विरासत को झलकाने वाली टिकटें अपनी रंग-बिरंगी मोहक अदाओं से सबका ध्यान अपनी ओर बरबस ही खेंचने लगती थी का क्षय विगत के बीस-तीस वर्षों से होने लगा है जो रचनात्मकता के एक अनूठे कौशल में गिना जाता था। टिकट संग्रह, व्यक्ति के एक शौक का हिस्सा है जो अप्रकट भावनाओं को थोड़े से श्रम से ही उजागर कर देता था। किसी प्रतियोगिता का हिस्सा बन नौकरी पाने वाले युवकों की नजरें परीक्षा हर दिन डाकिए की आहट पर टिकी रहती थी । यदि आज डाकिया नहीं आया तो कल अवश्य आएगा । यही आशा उनके मन में एक नया विश्वास हर दिन भर देती थी। डाक की लालसा, अपने जमाने के मशहूर फिल्म अभिनेता प्रेमनाथ के प्रसंग से समझी जा सकती है। उनके घर प्राय: एक दो पत्र हर रोज आया करते थे। एक बार वे मानसिक रूप से अस्वस्थ हो गए। संयोग से उन दिनों कोई पत्र नहीं आया। प्रेमनाथ ने जब डाकिए को एक गली में देखा तब उसे आवाज देकर बुलाया। डाकिए से उन्होंने पत्र के बारे में पूछा तब बोला साहब इन दिनों आपका कोई पत्र नहीं आया । प्रेमनाथ ने प्रश्न किया, पत्र क्यों नहीं आया? खराब मानसिक स्थिति की वजह से प्रेमनाथ झुंझला उठे और डाकिए को कुछ भला-बुरा कहने लगे। डाकिए ने यह कर अपना पीछा छुड़वाया कि यदि पत्र आता तो मैं उसे घर पहुँचाता। घटना यह चाहे मानसिक आवेश आवेग की हो पर इतना तो इसमें सच अवश्य है कि उस समय डाक से कितना लगाव व्यक्ति का था।

भारतीय डाक सेवा ने भी अपने मूल स्वरूप में अपने को अग्रणी बनाए रखने के लिए कई बदलाव किए हैं जिसमें महिला डाकघरों का खोलना भी है । इसकी पहली शुरुआत 8 मार्च 2013 को राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली में देश का पहला महिला डाक घर खोल कर की गई। इसके बाद यह देश के कई कोनों में फैला। इस डाक घर की खास विशेषता यह है कि इसमें सभी कर्मचारी महिलाएं ही होंगी। डाक सेवा में महिलाओं की सहभागिता को बढ़ाने के लिए ही महिलाओं को वरीयता दी गई है । आज डाक घर ने सम्पूर्ण बैंकिंग प्रविधि को अपनाकर ग्रामीण क्षेत्रों तक अपनी सेवाओं का विस्तार किया है जिसका लाभ समाज के हर तबके को मिल रहा है।

रक्षा बंधन पर विशेष लिफाफों के प्रचलन में महिलाओं की राखी को अपने भाईयों व परिवार जनों तक पहुँचाने का एक सस्ता, सुरक्षित व सुलभ साधन बना दिया है । पहले महिलाएं कोरियर को इस कार्य के लिए अपनाती थी जो महंगा भी था तथा ग्रामीण क्षेत्र की पहुँच से परे भी। गंगाजल का पानी आज डाकघरों में बंद बोतल में रियायती दरों पर मिलने लग गया है। किसी बाहरी जगह से यदि कोई व्यक्ति आवश्यकता पड़ने पर खरीदता है तो क्या गारंटी है कि यह वास्तव में गंगा जल ही है?

आज खबर देने वाला ही बेखबर है । इस हालत तक पहुँचाने का श्रेय हम सबको ही जाता है। हाईटेक तकनीकी को अपना कर भले ही हम अपने को अति आधुनिक कहा जाने का सेहरा सर पर बांध ले लेकिन जो लाल लेटर बॉक्स कभी हर गुजरने वाले राहगीर का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लेता था, जिसका वजूद कितना भी पुराना हो जाए लेकिन उसकी अहमियत में छिपे वे उत्प्रेरक तत्व जिसमें कलम से खत में लिखी जाने वाली बातों को लिखने वाला व्यक्ति ऐसे डूब जाता था जैसे नदिया में गगरिया। हस्तलिपि को देखकर उस लिखावट को सलाम करने वाले व्यक्तियों की संख्या में भी कमी नहीं हुआ करती थी । इस खत का महत्त्व तो आज भी वैसा है क्योंकि व्यक्ति की भावनाओं को उकेरने का इससे बेहतर जरिया और कहीं नजर नहीं आता। आईए कलम उठाइए, अपने किसी परिचित का पता तलाशकर खत लिखे। आपको पता चल जाएगा कि आपके व्यक्तित्व में करिश्मा है जिस डाक खत में कलम में भावनाओं का रंग हो, कागज में चाहत की तरंग हो यह अनोखा संगम खत को सलाम करने के लिए बाह्य कर देता है। डाक खत के फायदों में सबसे बड़ा फायदा यह है कि वह व्यक्ति के शब्द कोष को और अधिक धनी बनाकर वाक्य सरंचना में निखार कर परोस देता है। एक समय ऐसा आया जब रेडियो प्रायः मृत यंत्र सा बन गया था। विगत के दस वर्षों से जब प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने उस पर मन की बात शुरू कर पुन: उसे जीवित कर दिया। आज यदि हम सब अपने प्रियजनों को डाक के द्वारा खत भेजने की आदत बना ले तो यकीनन लेटर बॉक्स में वर्षों से जमी धूल अपना कब्जा हटा लेने की स्थिति में आ जाएगी।

सेवानिवृत प्राध्यापक, अंग्रेजी एवं स्वतंत्र लेखक
ग्राम- पोस्ट - हेतमसर (वाया-नूंआ)
जिला-झुंझुनू (राजस्थान) - 333041
मो. 9460841575

आचार्य देवो भवः

❒ ललिता रानी

शिक्षा वह प्रकाश है जिसके द्वारा बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है । शिक्षा बालक के जीवन का महत्त्वपूर्ण पक्ष है । शिक्षा का अर्थ उन सभी अनुभवों से है जिसका प्रभाव जन्म से लेकर मृत्यु तक पड़ता है।

मानव के रूप में शिक्षक तथा व्यावसायिक रूप में शिक्षण कार्य पूरे विश्व में सर्वोच्च माने जाता हैं । यही कारण है कि आज तक के मानव इतिहास की श्रेष्ठतम विभूतियों ने इस व्यवसाय को अपनाया है । समाज और विद्यालय दोनों में शिक्षक का समान महत्त्व है । वह समाज की अच्छी बातों का विश्लेषण करता है तथा उसे ज्ञान के माध्यम से आने वाली पीढ़ी को हस्तांतरित करता है।

सभी प्राणियों में श्रेष्ठ होने के कारण मनुष्य को स्वयं अपने मूल्यों, आदर्शों एवं कार्य शैली का निर्धारण करना होता है । सामान्यतः मूल्यों, आदर्शों एवं कार्य शैली का प्रतिबिंबन समाज में होता है और इनका निर्माण विद्यालयों में गुरुजनों के आश्रय में होता है । 'आचार्य देवो भव' का उद्घोष करने वाली हमारी भारतीय संस्कृति में गुरु को अत्यन्त श्रद्धेय एवं सम्मानीय स्थान दिया गया है तथा उसे देवताओं की श्रेणी में रखा गया है । प्राचीन वैदिक काल में गुरु और शिष्य का जितना आदरणीय संबंध पाया जाता है उतना किसी भी ऐतिहासिक काल में सुनने को नहीं मिलता। उस समय गुरु एवं शिष्य का संबंध किसी संस्था के माध्यम से नहीं था। गुरु या आचार्य को छात्र का मानस पिता माना जाता था तथा उस पर विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, भावात्मक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक विकास का उत्तरदायित्व था । उसे कल के शिक्षकों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति राजाओं तथा समाज के अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा की जाती थी । अतः वे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए निश्चित थे तथा निष्काम भाव से शिक्षा प्रदान करते थे।

मुगल शासन काल में यद्यपि शिक्षा प्रणाली में आमूल-चूल परिवर्तन हुए किंतु शिक्षकों के उत्तरदायित्व पर संदेह प्रकट करने की स्थिति उत्पन्न नहीं हुई। शिक्षक अपने कर्त्तव्य के प्रति पूर्णतया जागरूक बने रहे। तत्पश्चात् ब्रिटिश कालीन शिक्षा व्यवस्था में पर्याप्त भिन्नता आई। शिक्षा की प्रणाली में भारी परिवर्तन हुए। शिक्षा के उद्देश्य एवं स्वरूप में भी परिवर्तन आया। शिक्षण विधियां तथा साधन आदि परंपरागत स्वरूप से पृथक हुए और उन्हें पर्याप्त रूप से आधुनिक बनाने की दिशा में प्रशासन द्वारा निरन्तर प्रयास भी किए गए, किंतु आधुनिकता के बावजूद शिक्षकों में सामान्य नैतिकता बनी रही और शिक्षकों के उत्तरदायित्व पर प्रश्न- चिन्ह नहीं लग सका। स्वतंत्रता के पश्चात देश का संपूर्ण परिवेश बदल गया व इससे शिक्षा भी अछूती नहीं रही। लोगों के दृष्टिकोण में परिवर्तन हुआ एवं नई आर्थिक, सामाजिक व्यवस्थाओं का नैतिक पतन एक सामान्य घटना बन गई । चारित्रिक मूल्यों का स्थान शनैः शनैः मौद्रिक मूल्यों ने ले लिया। भौतिकतावादी संस्कृति का तेजी से उदय हुआ और व्यक्ति अपने कर्त्तव्यों से विमुख होते गए। इस सबके परिणाम स्वरूप समाज के प्रत्येक वर्ग की भांति शिक्षक वर्ग में भी उत्तरदायित्व की समस्या उत्पन्न हो गई।

शिक्षकों में अपने महती उत्तरदायित्व को समझने की समस्या का जन्म विनाशकारी महामारी के कीटाणुओं के जन्म के समान है क्योंकि इस स्तर पर उत्पन्न समस्या समाज के प्रत्येक स्तर पर तीव्रता से फैलती है एवं समाज पर इसका सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है । समाज का कोई भी अंग शिक्षक उत्तरदायित्व की समस्या से अछूता नहीं रहता। यदि उत्तरदायित्व की भावना शिक्षकों में उत्पन्न होगी तो वे अपने कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक होंगे और समाज की उन्नति में योगदान दे सकेंगे । शिक्षक की उत्तरदायित्व प्रतिबद्धता शिक्षा के समस्त पहलुओं को प्रभावित करती है। कहने का तात्पर्य यह है कि यदि शिक्षक अपनी उत्तरदायित्व के प्रति प्रतिबद्ध होंगे तो शिक्षा की गुणवत्ता स्वयं निर्मित हो जाएगी। शिक्षकों को इस बात को समझना होगा कि केवल छात्र ही नहीं अपितु समाज, देश तथा विश्व भी उनकी प्रतिबद्धता से प्रभावित होता है। उन्हें इस प्रतिबद्धता को बढ़ाना होगा एवं सभी प्रलोभनों को छोड़कर अपनी व्यावसायिक प्रतिबद्धता स्थापित करनी होगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुसार 'आज भारत राजनीतिक और सामाजिक दृष्टिकोण के ऐसे दौर से गुजर रहा है जिसमें परंपरागत मूल्यों के ह्रास का खतरा पैदा हो गया है और समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र तथा व्यावसायिक नैतिकता के लक्षण की प्राप्ति में लगातार बाधाएँ आ रही हैं।' विद्यालय शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या (2000 व 2005) में विद्यालय शिक्षा के सभी स्तरों पर मूल्य की विकास की बात कही गई है। लेकिन जब तक शिक्षक अपने कार्य के प्रति प्रतिबद्ध एवं जवाबदेह नहीं होंगे तब तक मूल्य शिक्षा का विकास एक कोरी कल्पना होगा । शिक्षक शिक्षण-अधिगम-प्रक्रिया का मुख्य स्तंभ है । समाज एवं राष्ट्र की उन्नति की नींव को शिक्षकों द्वारा रखा जाता है। विद्यार्थियों तथा समाज को सही रास्ता दिखाने का पवित्र कार्य शिक्षक का होता है। उसे निःस्वार्थ भाव से अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन करना चाहिए। लेकिन अनेक विद्वानों ने अपने अनुभव से सर्वेक्षण के उपरांत यह निष्कर्ष निकला है कि शिक्षक में जैसे-जैसे अनुभव बढ़ता जाता है वैसे ही उनकी शिक्षण प्रक्रिया में नए प्रयोगों के प्रति उदासीनता आने लगती है, वह इसे एक रूटीन कार्य की तरह करता जाता है जबकि एक उद्योग में अनुभव के बढ़ने पर कुशलता में वृद्धि का होना स्वाभाविक रूप से स्वीकार किया जाता है। शिक्षक बनना मात्र एक व्यवसाय नहीं हैं ; यह एक आवहान हैं। कक्षा की दीवारों से परे शिक्षकों का प्रभाव हमारे समाज तक फैला हुआ हैं। हमारे समाज, देश, सभ्यता, संस्कृति का भार बहुत कुछ शिक्षकों के कंधों पर टिका है। अपने इस उतरदायित्त्व को समझते हुए बच्चों के उत्कृष्ट व्यक्तित्व का निर्माण करने में शिक्षकों द्वारा अत्यधिक प्रयास किया जाना चाहिए।

राष्ट्र निर्माण में शिक्षकों की अपरिहार्य भूमिका से सब परिचित हैं। सरकार और नीति निर्माताओं के लिए यह महत्त्वपूर्ण हैं कि वे उन्हें पर्याप्त संसाधन और सहायता प्रदान करें एवं उनकी भलाई सुनिश्चित करें। शिक्षकों को महत्त्व देने और उन्हें सशक्त बनाने से राष्ट्र अपनी शैक्षिक प्रणालियों को मजबूत कर सकते हैं और उज्ज्वल एवं समृद्ध भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

एक शिक्षक ही वह व्यक्ति होता हैं जो एक सम्पन्न राष्ट्र का निर्माण करने वाले नागरिकों को शिक्षा द्वारा योग्य बनाकर तैयार कर सकता है । महान आचार्य चाणक्य कथन सत्य हैं कि 'एक शिक्षक कभी साधरण नहीं होता । प्रलय और निर्माण दोनों उसकी गोद में खेलते हैं।'

व्याख्याता
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बीकानेर

हारे नहीं सो 'हिन्दी'

❒ नीलू शेखावत

किसी भी वृक्ष के पुष्पन पल्लवन के पीछे उसके मूल की मजबूती का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उसी मूल का अनुकूलन उस वृक्ष को दीर्घजीवी बनाता है। भाषाई विकास के संदर्भ में यह दृष्टांत हिन्दी भाषा पर लागू होता है। हिन्दी का विकास पाषाण से निकले हुए अंकुर की तरह हुआ है जिसने अपने शैशव में ही प्रबल प्रतिरोध देखे हैं, संयोजित विरोध देखा है और घोर उपेक्षा भी देखी है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य के इतिहास' में इसका विस्तार से वर्णन किया है। किंतु यह भाषा भी भारतीयों की तरह अपूर्व जीवट लेकर आयी। गंगा की तरह सबको आत्मसात करते हुए अनवरत बहती रही और आज परिणाम सबके सामने हैं।

वर्ल्ड लैंग्वेज डेटाबेस एथनोलॉग के अनुसार- हिन्दी भाषा वर्तमान समय में 61 करोड़ लोगों द्वारा बोली जाती है। यूनाईटेड स्टेट ऑफ अमेरिका के लगभग 45 विश्वविद्यालय सहित पूरे विश्व के लगभग 176 विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई व सिखाई जाती है और कोर्स में शामिल है।

विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा के संबंध में डॉ जयंती प्रसाद नौटियाल ने 1981 से शोधकार्य करना शुरू किया था। इस शोध की पहली रिपोर्ट भारत सरकार की राजभाषा पत्रिका में 1997 में प्रकाशित हुई थी। इस शोध अध्ययन के अनुसार-

'अब तक सभी यह मानते आए हैं कि मंदारिन जानने वाले विश्व में सबसे अधिक हैं। परंतु चीन में तो 70 अन्य उप भाषाएँ व बोलियाँ हैं जिनमें 10-15 तो बड़ी संख्या में चीन में व विश्व के अनेक भागों में बोली जाती हैं। यहाँ तक कि मंदारिन के नाम पर तो उत्तरी चीन एवं दक्षिणी चीन के मत भेद साफ़ नज़र आते हैं। तिब्बती, कैंटोनीज, फुकीन, हक्का जैसी उप भाषाओं का वर्चस्व चीन में व इसके बाहर देखा जा सकता है। चीनी भाषा की लिपि होने पर विश्व के भाषाविदों ने समस्त चीनी बोलियों, उपबोलियों व चीनी भाषा परिवार को जोड़ कर इसकी संख्या 1990 में लगभग 730 आँकी जो 2005 में बढ़कर लगभग 900 मिलियन हुई व 2007 तक 900 मिलियन। 2005 के बाद इसमें मामूली वृद्धि हुई है। विश्व में हिन्दी जानने वाले 1023 मिलियन से अधिक हैं जबकि मंदारिन जानने वाले केवल 900 मिलियन से थोड़े से अधिक हैं। अर्थात मंदारिन जानने वालों से हिन्दी जानने वाले 123 मिलियन अधिक हैं। हिन्दी के विषय में आरंभ से ही विदेशियों की धारणा गलत रही है। संसार भर के भाषाविद् हिन्दी के नाम पर सिर्फ़ 'खड़ी बोली' को ही हिन्दी मानते आए हैं जबकि यह सच नहीं है। हिन्दी की बोलियाँ भी इसमें शामिल की जानी चाहिए थी।'

इन आँकड़ों के आधार पर संख्याबल की दृष्टि से हिन्दी विश्वभाषा है। संभव है कि यह मातृभाषा न होकर दूसरी, तीसरी अथवा चौथी भाषा भी हो। हिन्दी में साहित्य-सृजन की परंपरा पर्याप्त पुरानी है। उसका काव्य साहित्य तो संस्कृत के बाद विश्व के श्रेष्ठतम साहित्य की क्षमता रखता है। इसकी शब्द संपदा समृद्ध है। आम बोलचाल और सरकारी कामकाज में प्रयुक्त शब्द-भंडार पिछले 20 वर्षों में 7.5 गुना बढ़ा है। शब्दों की संख्या 1.5 लाख पहुँच चुकी है। ये शब्द उन अनुमानित 6.5 लाख शब्दों की वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के अतिरिक्त हैं, जिनमें विज्ञान और मानविकी की सभी शाखाएं सम्मिलित हैं। इन सबको मिलाकर हिंदी का व्यापक शब्द-भंडार बनता है। इसने कई भाषाओं के शब्दों को उदारतापूर्वक ग्रहण किया है और जो शब्द अप्रचलित अथवा बदलते जीवन संदर्भों से दूर हो गए हैं उनका त्याग भी कर दिया है। आज हिन्दी में विश्व स्तरीय साहित्य का सृजन हो रहा है और अनुवाद भी।

जहाँ तक इसकी लिपि देवनागरी की वैज्ञानिकता का प्रश्न है तो वह सर्वमान्य है। देवनागरी में लिखी जाने वाली भाषाएँ उच्चारण पर आधारित हैं। अर्थात् जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है और जो लिखा गया है, वही बोला जाता है। हिन्दी की शाब्दी और आर्थी संरचना प्रयुक्तियों के आधार पर सरल व जटिल दोनों है। इसमें संस्कृत के उपसर्ग तथा प्रत्ययों के आधार पर शब्द बनाने की अद्भुत क्षमता है। हिन्दी और देवनागरी दोनों ही पिछले कुछ दशकों में परिमार्जन व मानकीकरण की प्रक्रिया से गुजरी हैं जिससे उनकी संरचनात्मक जटिलता कम हुई है। यद्यपि आधिकारिक शब्दावली अभी भी कुछ अवधिपार अप्रचलित शब्दों से बोझिल है जिसमें सुधार की आवश्यकता को समय समय पर प्रकट भी किया जाता है। वैसे विश्व की बदलती विचार धारा को अभिव्यक्त करने की भरपूर क्षमता हिन्दी भाषा में है बशर्ते इस दिशा में अपेक्षित बौद्धिक तैयारी तथा सुनियोजित विशेषज्ञता हासिल की जाए।

तकनीक में हिन्दी अभी थोड़ी पीछे है किंतु इसका कारण हमारी असमर्थता या अज्ञान नहीं है बल्कि हमारी इच्छाशक्ति का कमज़ोर होना है। हमने कभी भी इन सब चीज़ों को भारतीय भाषाओं में काम करने लायक समझा ही नहीं, क्योंकि हम अपनी भाषाओं को पिछड़ा हुआ समझते हैं। हालांकि भाषा पिछड़ी हुई नहीं होती, व्यक्ति की सोच पिछड़ी होती है। दुर्भाग्यवश हमने इसका दोष अपनी भाषा के माथे मढ़ दिया, जबकि भाषा एक समाज का आइना होती है, उसके लोगों की पहचान होती है, संस्कृति का

सूचक होती है। सुप्रसिद्ध विचारक हॉवेल ने भी कहा है कि किसी भी देश और समाज के चरित्र को समझाने की कसौटी केवल एक है और वह यह कि उस देश और समाज का भाषा से सरोकार क्या है।

आज ज़रूरत यह है कि हम अंग्रेज़ी व अंग्रेज़ी बोलने वालों को ऊँचा समझना बंद करें व इसे केवल एक विदेशी भाषा की तरह सीखें व सम्मान दें। भाषा को जीवन देने वाली जिह्वा है, जितने लोग बोलेंगे उतनी बढ़ती जाएगी। लोक जिह्वा से उतरते ही भाषा मृतप्राय होने लगती है। यह हिन्दी भाषियों के संख्या बल का ही प्रताप है कि 'इकोनामिक टाइम्स' तथा 'बिजनेस स्टैंडर्ड' जैसे अखबार हिन्दी में प्रकाशित होकर उसमें निहित संभावनाओं का उद्घोष कर रहे हैं। 'बीबीसी हिन्दी' हिन्दी की ताकत काफी पहले समझ चुका है। खेल चैनल हिन्दी में कमेंट्री देने लगे हैं। हिन्दी सिनेमा अपने संवादों एवं गीतों के कारण विश्व स्तर पर लोकप्रिय हुए है। हिन्दी को वैश्विक संदर्भ देने में उपग्रह-चैनलों, विज्ञापन एजेंसियों, बहुराष्ट्रीय निगमों तथा यांत्रिक सुविधाओं का विशेष योगदान है । वह जनसंचार-माध्यमों की सबसे प्रिय एवं अनुकूल भाषा बनकर निखरी है।

आज जब 21वीं सदी में वैश्वीकरण के दबावों के चलते विश्व की तमाम संस्कृतियाँ एवं भाषाएँ आदान -प्रदान व संवाद की प्रक्रिया से गुजर रही हैं, हिन्दी इस दिशा में विश्व मनुष्यता को निकट लाने के लिए सेतु का कार्य कर सकती है। तरुण संख्या- बल के कारण आज विश्व में भारत की प्रासंगिकता बढ़ी है। जाहिर है हमारी कला, संस्कृति और भाषा में भी लोगों की रुचि जगी है। हमारा मानव संसाधन विश्व के लिए विशेष महत्त्व रखता है। हिन्दी के पास पहले से ही बहु-सांस्कृतिक परिवेश में सक्रिय रहने का अनुभव है जिससे वह विश्व में अपेक्षाकृत अधिक रचनात्मक भूमिका निभाने की स्थिति में है । हिन्दी की मूल प्रकृति लोकतांत्रिक तथा रागात्मक संबंध निर्मित करने की रही है। मगर प्रयास तो हमें ही करने होंगे। पूर्व प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिंहराव के शब्दों में-

'हमने कितनी रुकावटों का सामना किया है, पर पीछे ही देखना नहीं, आगे भी देखना है। क्या सब कर चुके या कुछ और करना है। याद रखिए, देखते-देखते सौ साल गुजर जाएँगे, परखते-परखते आँखें पथरा जाएँगी। हमें अब कुछ नयी दिशाओं में सोचने का समय आ गया है।' (दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के अमृतोत्सव वर्ष के उद्घाटन समारोह के अवसर पर के भाषण का अंश)

रा. उ. मा. विद्यालय, हुडील, कुचामन
मु. पो. -सुरेरा, तह. दांतारामगढ़,
जिला-सीकर, राज.-332742
मो. 8742031309

संस्कार एक नई खोज..

❐ सुभाष रणवां

वर्तमान में सबसे अधिक आवश्यकता अगर है तो वो हैं छात्रों में संस्कारों की। संस्कारहीनता की वजह ढूंढ़ने चले तो अनगिनत मिल जाएगी यथाः- अर्थप्रधानता, एकल परिवार, समाज में कम होता शिक्षकों का सम्मान, सोशल मीडिया आदि आदि.....

शिक्षक राष्ट्रनिर्माता था है और रहेगा इस बात को साबित करने का पुनः वक्त आ गया है आज जब पूरा समाज बच्चों के सामने विवश दिखाई दे रहा है तो शिक्षक का दायित्व और अधिक बढ़ जाता है। संस्कार संस्कृत भाषा का शब्द है जिसका अर्थ होता है 'सज्जन बनाना' या 'निर्माण करना' । इसे हम सामान्यतः शिक्षा, आदर्शों, संगठन, नैतिकता और सामाजिक नियमों के माध्यम से व्यक्ति में अपनाए जाने वाले गुणों का संकेत के रूप में भी जानते हैं। समाज, छात्र के संस्कारों के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। परिवार, स्कूल, मित्रों, अध्यापकों, आदर्शों और सामाजिक परिवेश द्वारा प्रभावित होकर छात्र के व्यक्तित्व में संस्कारों का निर्माण होता है । एक समाज की मान्यताएं, संस्कृति, धार्मिक मान्यताएं, सामाजिक नीतियाँ और सामाजिक नियम आदि संस्कारों का महत्त्वपूर्ण स्रोत होते हैं । छात्र को समाज में संस्कृति और मान्यताओं का सम्मान करना सिखाया जाता है ताकि वह समाज के नियमों और मान्यताओं का पालन कर सके। शिक्षा भी संस्कारों के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा द्वारा छात्र को नैतिक और सामाजिक मूल्यों, जैसे कि सत्य, ईमानदारी, समरसता, सहयोग, समानता और समाज सेवा के महत्त्व को समझाया जाता है । शिक्षा छात्र को सोचने की क्षमता, न्याय और सही गलत का विवेचन करने की क्षमता, सामरिकता, स्वतंत्रता, सहनशीलता और दूसरों के प्रति सम्मान करने की क्षमता विकसित करती है। शिक्षा छात्र को संस्कृति के साथ एक समृद्ध सामाजिक और नैतिक जीवन के लिए तैयार करती हैं। अतः शिक्षक का यह परम दायित्त्व बन जाता है कि वह अन्यान्य बातों से ऊपर उठते हुए अपने छात्रों को संस्कारों की ऐसी घुट्टी प्रार्थना सभा या शनिवारीय सभाओं के माध्यम से पिलाए कि आने वाले वर्षों में एक संस्कारित समाज का आईना नजर आए। प्रार्थना सभा हमारे विद्यालयों में सुबह होने वाली एक औपचारिक सभा होती है, इसमें शिक्षक, छात्र और विद्यालय प्रशासन एक साथ आते है । प्रार्थना सभा का उद्देश्य विद्यालय में शिक्षा का सही माहौल तैयार कर छात्रों में एकाग्रता लाना होता है और इसी एकाग्रता में संस्कारों का ऐसा बीजारोपण करें कि संस्कृत की यह उक्ति सत्य प्रतीत होने लगेः-

''नाभिषेको न संस्कारः सिंहस्य क्रियते मृगैः।
विक्रमार्जितराज्यस्य स्वयमेव मृगेंद्रता ॥''

उपनिरीक्षक
संभागीय कार्यालय (सं.शि.) बीकानेर संभाग,
बीकानेर मो. 9772241000

अब्दुल कलाम : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

❒ डॉ. कांता मीना

''यदि आप ड्यूटी को सैल्यूट करोगे तो आपको किसी भी व्यक्ति को सैल्यूट करने की जरूरत नहीं पड़ेगी, लेकिन यदि आप अपनी ड्यूटी को पोल्यूट करेंगे तो आपको हर किसी को सैल्यूट करना पड़ेगा।''

-डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

विद्यार्थियों के सवालों का अपने बेहतरीन अंदाज में जवाब देते, ईमानदारी के साथ अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करने वाले अपने लक्ष्य की ओर नजर रखते हुए आगे बढ़ने की प्रेरणा देने वाले एक उम्दा शिक्षक एक महान वैज्ञानिक, एक बेहतरीन लेखक, मिसाइल मैन भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का जन्म दिवस प्रतिवर्ष विश्व विद्यार्थी दिवस' के रूप में मनाया जाता है। अपनी कल्पनाशक्ति को धरातल पर उतारते हुए भारत को परमाणु शक्ति बनाने में इसरो के लिए दिया गया उनका योगदान अविस्मरणीय है। अनगिनत प्रोजेक्ट्स का उनके द्वारा नेतृत्व किया गया। भारत की परमाणु शक्ति को सुधारने में उनके महान योगदान के लिए उन्हें 'मिसाइल मैन' कहा जाता है। अपने समर्पित कार्यों के लिए उन्हें भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से नवाजा गया। यह किसी सपने से कम नहीं कि आज की युवा पीढ़ी ने कलाम साहब के प्रेरणास्रोत विचारों को अपनी आँखों से देखा और सुना। डॉ. कलाम साहब एक युग के महानायक रहे और आने वाले युगों में भी युवा उनके द्वारा किए गए कार्यों से प्रेरणा लेते रहेंगे। एक साधारण से परिवार में जन्म लेकर देश के लिए असाधारण कार्यों का लोहा मनवाया। उनका शुरूआती जीवन बड़े ही संघर्षो से गुजरा। युवा पीढ़ी के लिए डॉ. कलाम साहब असली योद्धा रहें।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का पूरा नाम अबुल पाकिर जैनुलाबदीन अब्दुल कलाम था। पिता जैनुलाब्दीन व माता आशीयम्मा के घर 15 अक्टूबर 1931 को तमिलनाडु के रामेश्वरम् में उनका जन्म हुआ था। डॉ. कलाम का प्रारंभिक जीवन बेहद संघर्षपूर्ण था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा रामेश्वरम में हुई वही तिरुचिरापल्ली के सेंट जोसफे कॉलेज से विज्ञान में ग्रेजुएशन एवं मद्रास इंस्टीट्यूट से वैमानिकी इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी की। साथ ही अपने कैरियर की शुरुआती सेवा रक्षा मंत्रालय के तकनीकी एवं उत्पादन निदेशालय में सन् 1958 में वरिष्ठ वैज्ञानिक सहायक के पद पर दी और अपने सपने को साकार किया। फिर उन्होंने पीछे मुड़ कर कभी नहीं देखा। उनका योगदान विज्ञान युग में मील का पत्थर साबित हुआ। भारत को उन्होंने परमाणु शक्ति बनाने में अपना अविस्मरणीय योगदान दिया। अपनी ईमानदारी, कर्त्तव्यनिष्ठ, दूरदर्शिता जिनके लिए देश के विकास से बढ़कर कुछ नहीं था। भारत की परमाणु शक्ति को आगे बढ़ाने के लिए उनके महान् योगदान को देखते विभिन्न प्रतिष्ठित पुरस्कार व सम्मानों से नवाजा गया। जिनमें 1981 पद्मभूषण, 1990 में पद्मविभूषण, 1997 में भारत का सबसे बड़ा समान भारत रत्न व 1998 में राष्ट्रीय एकता के लिए इंदिरा गांधी अवार्ड प्रदान किया गया। वहीं लगभग 40 से ज्यादा विश्वविद्यालयों ने डॉक्टर ऑफ साइंस और डॉक्टर ऑफ लिटरेचर की मानद उपाधि प्रदान की। लेखक के रूप में उन्होंने वर्तमान युवाओं को एक ऐसी धरोहर दी जो कि वर्तमान पीढ़ी से लेकर भावी पीढ़ी का भी पथ प्रदर्शक का कार्य करती रहेंगी। लेखन से उन्हें असीम प्रेम था। वह रोजाना 2 से 3 घण्टे अपने लेखन कार्य में लीन रहते थे। उनका मानना था कि जिस भी कार्य से आप प्रेम करते हो उस कार्य को अधिक समय दिया जाए। उनके द्वारा लिखी गई असंख्य किताबें, लेख, साक्षात्कार, युवाओं के लिए मार्गदर्शक का कार्य करते रहेंगे। साथ ही युवाओं को अपने कर्म पथ पर आगे बढ़ने का हौसला प्रदान करते रहेंगे। डॉ.कलाम 2002 से 2007 तक देश के 11वें राष्ट्रपति रहे व इनकी आत्मकथा विंग्स ऑफ फायर (अग्नि की उड़ान) ने अत्यधिक लोकप्रियता हासिल की। इनके द्वारा लिखित पुस्तकें है....

- इंडिया 2020 : ए विजन फॉर द न्यू मिलेनियम।
- फैलियर टू सक्सेज : लीजेडरी लाइव।
- मिशन ऑफ इंडिया : विजन ऑफ इंडियन यूथ।
- इंस्पायरिंग थॉट्स : कोटेशन सीरिज
- यू आर बोर्न टो ब्लॉसम : टेक माय जर्नी बियोंड
- द साइंटिफिक इंडियन फर्स्ट सेंचुरी गाइड : टू द वर्ल्ड अराउंड अस।
- गाइडिंग सोल्स : डायलॉग्स ऑन द परपज ऑफ लाइफ।
- द ल्यूमिनस स्पार्क्स : अ बायोग्राफी इन वर्स एंड कलर्स
- इगनाइटेड माइड्स : अनलीजिंग द पावर विद इन इंडिया

डॉ.कलाम ने देश की असली शक्ति व संपत्ति देश के युवाओं को माना। उनका मानना था कि देश के युवाओं को शिक्षित करते हुए उन्हें अवसर प्रदान किए जाएं जिससे वह अपनी कार्य क्षमताओं से देश हित में कार्य कर सके। राष्ट्रहित में युवाओं को एक आदर्श नेतृत्व की अत्यधिक आवश्यकता है, जो उन्हें प्रेरित कर सके। विद्यार्थी जीवन में उनकी जिज्ञासाओं व प्रतिभाओं को प्रोत्साहन मिलें। डॉ. कलाम साहब खुद को एक शिक्षक के तौर पर ज्यादा सहज मानते थे। छात्रों को सम्बोधित करना व उनके असंख्य सवालों का बड़ी ही सरलता से जबाब देना शिक्षण के प्रति उनका रुझान इतना था कि उन्होंने भारत सरकार के प्रमुख वैज्ञानिक सहलाकार जैसे कैबिनेट श्रेणी का पद छोड़कर एक शिक्षक का पद चुना। युवाओं से खुली आँखों से सपने देखने को कहते थे। उन्होंने कहा कि सपने वो नही होते जो आप सोते वक्त देखते हो, सपने वो है जो आपको सोने नहीं देते। जब तक हम सपने देखते रहेंगे, तब तक ही उनको पूरा करने का लक्ष्य भी निर्धारित करते रहेंगे। साथ ही उनके बारे में चिन्तन-मनन भी करना शुरू करेंगे। अपने लक्ष्यों का निर्धारण हमेशा बड़ा रखो और सदैव उसे प्राप्त करने के लिए सार्थक कदम उठाओ। लक्ष्य तक पहुँचने में बाधाओं का सामना करना पड़े तब भी मत घबराओ क्योंकि असली योद्धा वही है जो बाधाओं को पार करते हुए अपने लक्ष्य तक पहुँच जाएं। सदैव किसी भी कार्य को बोल कर नहीं अपितु करके दिखाओ क्योंकि लोग सुनना नहीं देखना ज्यादा पसंद करते हैं। जीवन में अपना लक्ष्य तय करो, लक्ष्य तक पहुँचने के लिए ज्ञान की प्राप्ति करो व कड़ी मेहनत के साथ दृढ़ आत्मविश्वास रखो तो निश्चित ही सफलता तुम्हारे कदम चूमेगी।

बच्चों के अतिप्रिय डॉ. कलाम साहब का जीवन एक आदर्श के रूप में हमारे समक्ष है। उन्होंने जो भी कहा उसे उन्होंने अपने जीवन में चरितार्थ भी किया। डॉ. कलाम अपने अन्तिम समय तक भी विद्यार्थियों को अपने ज्ञान से लाभान्वित व प्रेरित करते रहे। डॉ. कलाम साहब शिलांग मेघालय में आईआईएम संस्थान के छात्रों को 'जीवन योग्य ग्रहों' पर व्याख्यान देते हुए 27 जुलाई 2015 को परलोक गमन कर गए। अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में भी वो देश के लिए समर्पित रहे। ऐसी अविरल प्रतिभा के धनी, कर्त्तव्यनिष्ठ, देश के सच्चे देशभक्त, सदी के महानायक, हर युवा के प्रेरणास्रोत व विद्यार्थियों की 'आंखों का तारा' थे। ऐसे भारतीय मिसाइल प्रोग्राम के जनक व सभी के दिलों में अमिट छाप छोड़ने वाले एक बेहतरीन प्रेरणादायक महान सोच रखने वाले डॉ. ए.पी.जे. कलाम को हमारा कोटि कोटि नमन।

वी-5 मुरलीधर व्यास कॉलोनी,
बीकानेर (राज.)
मो. 9829397817

विश्व छात्र दिवस पर विशेष

❒ दिलीप कुमार अग्रवाल

''इंतजार करने वालो को उतना ही मिलता है जितना कि कोशिश करने वाले छोड़ देते है।''

सम्पूर्ण भारतवर्ष को संदेश देने वाले महान् वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को ''मिसाइलमैन'' के नाम से भी जाना जाता है। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा सफल मिसाइलों के निर्माण की योजना बनाने के कारण इन्हें भारत का मिसाइलमैन कहा जाता हैं। उनका सम्पूर्ण जीवन हर किसी के लिए एक मिसाल हैं।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का जन्म एक गरीब व अल्प शिक्षित तमिल परिवार में 15 अक्टूबर 1931 को रामेश्वरम के धनुषकोडी गाँव में हुआ। इनका पूरा नाम अवुल पाकिर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम था। इनके पिता का नाम जैनुलाब्दीन (नाविक) एवं माता का नाम असीम्मा (गृहणी) था। अब्दुल कलाम, पाँच भाई-बहन थे।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा गाँव के ही प्राथमिक विद्यालय से पूर्ण की थी और फिर अपनी आरंभिक शिक्षा के लिए मद्रास चले गए। 1954 में तिरूच्चिराप्पली के सेंट जोसेफ कॉलेज से भौतिकी विज्ञान में स्नात्क की डिग्री पूरी करने के बाद इन्होंने मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से अंतरिक्ष विज्ञान में स्नातक की डिग्री हासिल की क्योंकि बचपन से ही उनका सपना एक फाइटर पायलट बनना था, किन्तु प्रथम आठ में स्थान नहीं बना पाने के कारण उनका यह सपना सच न हो सका, वक्त के साथ उनका सपना बदल गया और रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन के तकनीकी केन्द्र में एक वरिष्ठ वैज्ञानिक का कार्यभार संभालने लगे और भारतीय सेना के लिए हेलिकॉप्टर का डिजाइन तैयार किया। इन्होने कई उपग्रह प्रक्षेपण योजनाओं में सफलता प्राप्त की। 1980 में रोहिणी उपग्रह को पृथ्वी के निकट स्थापित किया और इसी तरह से भारत भी एक अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष क्लब का सदस्य बन गया। योजना महानिदेशक के रूप में भारत के पहले स्वदेशी उपग्रह प्रक्षेपण यान (रोहिणी) का निमार्ण करवाया और जुलाई 1982 में रोहिणी उपग्रह सफलतापूर्वक से अंतरिक्ष में प्रक्षेपित किया। बाद में इन्होने देश का गाइडेड मिसाइल का डिजाइन तैयार किया और अग्नि व पृथ्वी जैसे प्रक्षेपास्त्रों का निर्माण कराया। कलाम 1992 से लेकर 1999 तक प्रधानमंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार व विकास विभाग के सचिव रहे थे। इसी दौरान उन्होंने पोकरण में द्वितीय परमाणु परीक्षण किया। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल ने गाइड़ेड मिसाइल को बनाया और परमाणु शक्तियों के रूप में सभी राष्ट्रों की सूची में भारत को शामिल करवा दिया और डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल का नाम वैज्ञानिकों की सर्वोच्च सूची में आ गया।

डॉक्टर ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को सन् 2002 में NDA दलों ने भारतीय जनता पार्टी से राष्ट्रपति चुनाव के लिए अपना उम्मीदवार बनाया और सभी के समर्थन से 18 जुलाई 2002 को डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, देश के 11वें राष्ट्रपति निर्वाचित हुए। इन्होंने कभी राजनीति में अपना समर्थन नहीं दिया, फिर भी भारत के सर्वोच्च पद पर विराजमान रहें और अपने कार्यकाल में भारत को एक विकसित देश बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और 25 जुलाई 2007 को डॉक्टर ए.पी.जे. अब्दुल कलाम राष्ट्रपति के पद से सेवानिवृत हो गये।

डॉक्टर ए पी जे अब्दुल कलाम राष्ट्रपति पद छोड़ने के बाद तिरूवनंतपुरम में इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ स्पेस साइंस एंड टेक्नोलॉजी के कुलाधिपति बन गए और अन्ना यूनिवर्सिटी के एरोस्पेस इंजीनियरिंग कॉलेज के प्रोफेसर बन गए। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को देश के कई कॉलेजो व विद्यालयों में मार्गदर्शक के रूप में बुलाते थे ताकि वहाँ के सभी बच्चों को कलाम जी के द्वारा आगे की ओर बढ़ने का व अपने सपनों को पूरा करने का मार्गदर्शन मिल सके।

डॉक्टर ए पी जे अब्दुल कलाम को कई देशों के द्वारा पुरस्कार व सम्मान प्राप्त हुआ है, भारत सरकार द्वारा 1997 में विज्ञान व भारतीय रक्षा के क्षेत्र में अपने अद्वितीय योगदान के लिए इनको भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, जुलाई 2015 में मेघालय राज्य में भारतीय प्रबंधन संस्थान को शिलोंग में स्थापित करने के लिए एक बैठक में भाषण दे रहे थे। उस समय उनकी आयु लगभग 84 साल की थी। भाषण देते समय उनको अचानक दिल का दौरा पड़ा और वही पर बेहोश होकर गिर गए।

चिकित्सा विभाग की सभी कोशिशे नाकाम रही और 2 घंटे बाद उनकी 27 जुलाई 2015 को उनकी मृत्यु हो गयी। उनके निधन के दिन उनके सम्मान के लिए सात दिवसीय राजकीय शोक घोषणा की गई।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का छात्रों से बहुत लगाव होने के कारण उनके जन्मदिवस के दिन को उनके सम्मान में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा वर्ष 2010 से हर वर्ष विश्व छात्र दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। उन्होंने अपने पूरे जीवन काल में शिक्षा के प्रचार प्रसार के लिए बहुत कुछ किया था, उन्हें अपने पूरे जीवन काल में पद्म भूषण, पद्म विभूषण, भारत रत्न जैसे अनेकों पुरुस्कार प्राप्त किए, साथ ही उन्होंने कई किताबें लिखी जिनमें अग्नि की उड़ान, मेरी यात्रा, इंडिया विजन प्रमुख हैं। आज भी हम प्रति वर्ष 15 अक्टूबर को विश्व छात्र दिवस मनाते हैं।

वरिष्ठ अध्यापक
राउमावि बजरंगगढ़ (बारां)
मो. 9462064244

प्राथमिक कक्षा स्तर के बच्चों के लिए बाल साहित्य का सृजन कैसे हो

❒ ललिता पारीक

बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण, कल्पना शक्ति, रचनात्मकता, भाषा शिक्षण भाषिक, संज्ञानात्मक कौशल के विकास के लिए बाल साहित्य का बहुत बड़ा योगदान होता है। बाल साहित्य बच्चों के विकास की मुख्य धारा को सही दिशा देने वाला हो । इसके साथ बच्चों में विविधता, समानता तथा समावेशन की समझ को बढ़ाने वाला हो। बाल साहित्य का उद्देश्य बाल पाठकों का मनोरंजन करना ही नहीं अपितु उन्हें वर्तमान की सच्चाई से परिचित कराना हैं, क्योंकि आज के बालक कल के भारत के नागरिक हैं। वे जैसा पढ़ेंगे उसी के अनुरुप उनका चरित्र निर्माण होगा । बाल कहानियां और कविताओं के अच्छे ज्ञान के साथ हम विद्यार्थियों को इस विरासत का महत्त्व जानने, उसका आनंद लेने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

बाल साहित्य का अभिप्राय - वह साहित्य जो बच्चों के मन और मनोभावों को परख कर उनकी भाषा में उनके स्तर पर लिखा गया हो, बाल साहित्य कहलाता है। यह साहित्य बाल हित के लिए हो। बच्चों के व्यक्तिगत निर्माण और उनके विकास के लिए समुचित दिशाएं करने वाला हो। यही बाल साहित्य की मुख्य उपादेयता है।

बाल साहित्य की उपादेयता..

वर्तमान समय में जीवन को जोड़ने वाले बाल साहित्य की अत्यधिक आवश्यकता है, जो सामयिक और स्थितियों के परिप्रेक्ष्य में लिखा गया हो। बाल साहित्य में बच्चों की रुचियां, जरूरत को समझने की आवश्यकता है। बालकों के भविष्य निर्माण में घर के वातावरण के साथ-साथ बाल साहित्य की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। हमें यह भली भांति समझने की आवश्यकता है कि बच्चों के विकास के लिए जैसे दूध भोजन पानी आदि की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार बाल साहित्य की भी अनिवार्यता है, क्योंकि बच्चे ही हमारे देश के भाग्य विधाता है। बाल साहित्य उनके जीवन में उचित वातावरण का सृजन कर सकता है । यही कारण है कि अभिभावक व शिक्षकों को चाहिए कि वह बच्चों को उत्तम बाल साहित्य उपलब्ध करवाएं। बच्चों की जिज्ञासा अत्यंत प्रबल बलवती होती है। कल्पना शक्ति इतनी प्रखर होती है कि उनकी भावना जीवन के हर पहलू को छूती है। वर्तमान में प्राथमिक स्तर कक्षा 1 से 5 तक के बच्चों के लिए श्रेष्ठ बाल साहित्य का अभाव है। बाल साहित्य सृजन करने की दिशा में लेखक, प्रकाशनों, संपादकों, शिक्षकों को एक मंच पर आकर सुनिश्चित योजना के अनुसार कार्य करने की आवश्यकता है।

प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के लिए बाल साहित्य की रचना करते समय अधोलिखित उद्देश्यों व आधार तत्वों पर ध्यान देना आवश्यक है

1. बाल साहित्य की भाषा बच्चों की आयु व स्तर के अनुकूल हो। बाल साहित्य का प्रथम गुण यह हो कि वह आयु स्तर के अनुरूप हो क्योंकि साहित्य से उन्हें भी गुण मिले। जिससे इस आयु वर्ग के बच्चों में हम स्वस्थ सामाजिक एवं राष्ट्रीय भावनाओं को पुष्पित और पल्लवित कर सकें। प्राथमिक स्तर पर बच्चों के लिए बाल साहित्य के चयन का मुख्य आधार रोचक विषय वस्तु होना चाहिए। रोचक बाल साहित्य बच्चों में पढ़ने की उत्सुकता पैदा करके उनमें पढ़ने की क्षमता का विकास करते हैं । बाल साहित्य की रचनाएं छोटी, रंगीन चित्र और सरल जानकारी से परिपूर्ण हो।

कल्पना शक्ति बनाए रखना, जो यथार्थ से परे ना हो-

प्राथमिक स्तर पर बच्चों में कल्पना शक्ति बड़ी प्रबल होती है, बच्चे साथ ही कल्पना व यथार्थ में विशेष अंतर नहीं कर पाते हैं। बाल साहित्य ऐसा हो, जिसमें बच्चों को आनंद विभोर करने की शक्ति हो । बाल साहित्य में बच्चों की सृजनात्मकता की प्रवृत्ति होनी चाहिए। बाल साहित्य निर्माण में आकाश की सैर, मिठाइयों का संसार, परियों की कहानी, जादू की दुनिया , बोलते जंगल आदि विषयों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। हमें सावधानी रखनी चाहिए कि भय, क्रोध उत्पन्न करने वाली घटनाएं, हिंसा, भूत प्रेत की कहानी आदि बाल साहित्य में शामिल नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे बच्चों में संवेगात्मक असंतुलन उत्पन्न होता है।

बाल साहित्य सचित्र होना चाहिए-

बाल साहित्य की पुस्तके सचित्र होना अनिवार्य है। यदि वे सचित्र नहीं होगी तो बच्चे उनके प्रति आकर्षित नहीं होंगे । अतः बाल साहित्य को सचित्र एवं सुसज्जित रूप से प्रस्तुत करने की दिशा में चित्रकारों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

बाल साहित्य की भाषा सरल व सहज होनी चाहिए -

बाल साहित्य में सरल भाषा का प्रयोग किया जाना उपयुक्त होगा क्योंकि जैसे-जैसे वह अधिक उम्र के बालकों के लिए लिखा जाए, वैसे-वैसे शब्द ज्ञान एवं शब्द भंडार में वृद्धि की जा सकती है जिससे वह नए शब्द व अर्थ जान सके।

बाल साहित्य का विद्यालय एवं बच्चों के लिए महत्त्व-

बाल साहित्य बच्चों में कल्पना शक्ति, तर्क-वितर्क कर उन्हें स्वतंत्र रूप से अपनी अभिव्यक्ति की अनुमति देता है। एक शिक्षक अपने विद्यालय में बाल साहित्य के नियमित उपयोग द्वारा बच्चों में मौखिकता का विकास, शब्दावली का विस्तार, पढ़ने के प्रति रुचि पैदा करने के साधन के रूप में योगदान दे सकता है।

बाल साहित्य से बच्चों में पठन संस्कृति का विकास होता है।

बच्चों में सृजनशीलता व रचनात्मक का विकास होता है।

बाल साहित्य बच्चों को उत्साही पाठक बनाने के लिए प्रोत्साहित करता है तथा उन्हें काल्पनिक दुनिया की सैर कराता है।

बाल साहित्य बच्चों को आदर्श उदाहरण और मूल्य देता है, यह बच्चों को मार्गदर्शन और नैतिक शिक्षा देने में सहायक है।

बाल साहित्य द्वारा बालक वर्तमान जीवन की

सच्चाइयों से परिचित होता है।
बाल साहित्य में कई विधाएं जैसे बाल कविता, बाल गीत, बाल पहेली, चित्र पहेली, चित्र कथा, बाल कहानी, बाल उपन्यास आदि को शामिल कर बालकों को उत्साहित पाठक बनाने का पथ प्रदर्शित करता है।

निष्कर्ष -

हम सब की प्रबल अभिलाषा है कि स्वाधीन भारत की कोमल पौध को उनके विकास के लिए हवा, भोजन, पानी के रूप में ऐसा सद् साहित्य उपलब्ध कराया जाए, जिससे वर्तमान की यह पौध हरी-भरी और प्रसन्न दिखाई दे और भविष्य में भी दूसरों के लिए फलदायी हो।
बाल साहित्य के माध्यम से बच्चों में कल्पना शक्ति, सृजनात्मक शक्ति को उभारने में, अनुशासन जीवनयापन करने, जीवन में मानवीय मूल्यों का विकास करने में महत्त्वपूर्ण योगदान होगा।
वर्णित बातों को दृष्टिगत रखते हुए बाल साहित्य का सृजन करने का प्रयास एक अनिवार्य आवश्यकता है।

राजकीय प्राथमिक विद्यालय दुर्गापुरा,
दूनी, ब्लॉक देवली, जिला टोंक
मो. 98290-26090

शिक्षक एक धर्म

❐ कुलदीप सिंह

"शिक्षक" शब्द का अर्थ है 'जो ज्ञान देता है' या 'जो शिक्षा प्रदान करता है।' शिक्षक वह व्यक्ति होता है जो अपने ज्ञान और अनुभव के आधार पर विद्यार्थियों को शिक्षा देता है और उन्हें जीवन के मूल्यों और सिद्धांतों के बारे में सिखाता है।

'शिक्षक' शब्द संस्कृत से लिया गया है, जहाँ 'शिक्ष' का अर्थ है 'ज्ञान या शिक्षा' और 'क' का अर्थ है जो देता है। इसलिए शिक्षक वह होता है जो ज्ञान देता है या शिक्षा प्रदान करता है।

'गुरु' और 'शिक्षक' दोनों शब्द एक ही अर्थ को दर्शाते हैं, परंतु अंतर की बात करें तो 'गुरु' शब्द अधिक व्यापक है। जीवन के हर पहलू पर गुरु के मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। 'गुरु' व्यक्ति को आध्यात्मिक आधार पर जीवन और जीवन के बाद भी राह प्रदान करता है, जबकि 'शिक्षक' बालक से वयस्क होते शिक्षार्थी को समाज के एक सभ्य नागरिक के रूप में निर्मित करते हैं।

वर्तमान समय में शिक्षक होना एक पेशा है या यूं कहें कि आजीविका का साधन हैं। आज का शिक्षक अपने काम के लिए भले ही वेतन प्राप्त करता है, भले ही कार्य करने के लिए एक समयावधि निर्धारित हो, पर शिक्षक के रूप में कार्य करते - करते व्यक्ति अपने-आप एक ऐसे व्यक्तित्व में ढल जाता हैं, जो उसे अन्य व्यवसाय या पेशों से अलग बना देता है।

आज के आर्थिक युग में भी यदि शिक्षक के व्यवहार की गहराई में झांका जाए, तो शिक्षक एक पेशा नहीं बल्कि 'धर्म' के रूप में नजर आता है। शिक्षक समाज के विकास और विद्यार्थियों के जीवन को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

शिक्षक का कार्य केवल विद्यार्थियों को ज्ञान देना नहीं है, बल्कि उन्हें जीवन के मूल्यों और सिद्धांतों के बारे में सिखाना भी है। 'शिक्षक' विद्यार्थियों को अच्छा इंसान बनने में मदद करता है, उन्हें समाज में एक जिम्मेदार नागरिक बनाने के लिए तैयार करता है।

शिक्षक के वे गुण जो उसे विशिष्ट बनाते है:-

1. शिक्षार्थी से आत्मीय संबंध :- एक बालक अपने परिवार के बाद सबसे ज्यादा वक्त शिक्षक के साथ ही बिताता है। कक्षा- कक्षीय दैनिक गतिविधि और परस्पर संवाद के माध्यम से शिक्षक और शिक्षार्थी में एक आत्मीय संबंध पैदा होता है जो जीवन पर्यन्त चलता है। आगे चलकर शिक्षक शिक्षार्थी के पारिवारिक आयोजनों का हिस्सा बनता है, जो कि आत्मीय संबंध को दर्शाता है।

2. अनुकरणीय व्यक्तित्व :- शिक्षक के रूप में कार्य करते - करते व्यक्ति में एक स्व अनुशासन विकसित होता है, जो स्वतः ही दूसरों के लिए अनुकरणीय बनता है। इस प्रकार शिक्षक बिना कहे, अपने आस-पास एक मार्गदर्शन पथ निर्मित करता है।

3. भरोसेमंद सामाजिक सलाहकार - समाज में जब भी किसी व्यक्ति को एक भरोसेमंद सलाहकार की जरूरत होती है तो शिक्षक ही सहज, सरल व भरोसेमंद सलाहकार के रूप में दिखता है।

उपर्युक्त गुणों के साथ ही समर्पण, सेवा, त्याग, करुणा, ज्ञान आदि का सम्मिलित रूप होता है शिक्षका जिस प्रकार धर्म हमें सही राह पर चलने के लिए प्रेरित करता है, उसी प्रकार एक अच्छा शिक्षक अपने विद्यार्थियों के लिए अपना जीवन समर्पित कर उन्हें अपने लक्ष्यों को प्राप्त कराने में मदद करता है।

इसलिए शिक्षा एक व्यवसाय नहीं बल्कि एक धर्म है, जिसमें विद्यार्थियों के जीवन को आकार देने की शक्ति होती है। शिक्षक की भूमिका केवल शिक्षा देने तक ही सीमित नहीं है, वरन् वह हमारे जीवन में एक मार्गदर्शक की भूमिका भी निभाता है। वह विद्यार्थियों के जीवन में आए उतार-चढ़ावों से निपटने के लिए उन्हें तैयार करता है और एक अच्छा इंसान बनाने में मदद करता है। अतः शिक्षक एक धर्म, एक संस्कृति व श्रेष्ठ पथ प्रदर्शक होता है।

अध्यापक
राज. बा. प्रवेशिका संस्कृत विद्यालय
कवई (नदबई), भरतपुर
मो. 9983288679

निराशा में आशा की जीत है दीपावली

❒ तारकेश्वरी 'सुधि'

भारत के बड़े त्योहारों में दीपावली को प्रथम स्थान प्राप्त है। इस पौराणिक महत्त्व वाले सनातनी उत्सव को अँधकार पर प्रकाश की विजय के रूप में मनाया जाता है। दीपावली को हर धर्म, जाति और संप्रदाय के लोग मनाते हैं जिसका सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और आध्यात्मिक महत्त्व है। यह समाज में भाईचारे का संदेश देता हुआ प्रकाश का ऐसा पर्व है जो हर एक व्यक्ति के हृदय में उल्लास और उम्मीद की भावना को प्रबल करता है। साथ ही इस बात का प्रतीक है कि यदि हम दीपक की तरह मुकाबला करें तो समाज में फैली बुराइयों और अज्ञानता रूपी अंधकार को भगाकर उस पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। उम्मीद का एक दीपक भी गहन अंधकार को हराने की क्षमता रख सकता है। हम तो फिर भी इंसान हैं। और यदि एक से अधिक व्यक्ति साथ मिलकर किसी बुराई का खात्मा करना चाहे तो विजय अवश्यंभावी है।

सर्वविदित है कि कार्तिक मास की अमावस्या को समुद्र मंथन के दौरान लक्ष्मी जी का अवतरण हुआ था। इसलिए इस दिन लक्ष्मी जी की पूजा को विशेष महत्त्व दिया जाता है। अक्सर हम लक्ष्मी जी के दो रूपों की तस्वीर देखते हैं जिनमें एक में कमल पर विराजमान दिखती और दूसरे में विष्णु जी के साथ दिखती है। कमल पर विराजमान रूप को श्रीरूप माना जाता है और विष्णु जी के साथ विराजमान रूप को लक्ष्मी रूप में माना जाता है। दीपावली पर हम लक्ष्मी जी के श्री रूप की पूजा करते हैं। लक्ष्मी जी धन और समृद्धि की देवी है इसलिए बहुत प्रेम और सम्मान के साथ में लक्ष्मी जी का पूजन दीप जलाकर किया जाता है। इनके साथ प्रथम पूज्य गणेश जी का पूजन भी किया जाता है क्योंकि प्राचीन मान्यताओं के अनुसार लक्ष्मी जी की संतान नहीं होने की स्थिति में पार्वती जी ने निराश लक्ष्मी जी को अपना पुत्र सौंप दिया था। लक्ष्मी जी ने उन्हे अपना दत्तक पुत्र बना लिया और यह घोषणा की कि उनकी पूजा के साथ गणेश जी का पूजन करने पर ही वे प्रसन्न होंगी तथा व्यक्ति को धन-धान्य से पूर्ण करेंगी।

इस दिन के लिए और भी कथाएँ प्रचलित है। जैसे इस दिन भगवान श्री कृष्ण ने नरकासुर का वध किया था, सिखों के छठवें गुरु हरगोविंद जी को जहांगीर की कैद से छुटकारा मिला था, राजा विक्रमादित्य का राज्याभिषेक हुआ था, तेरह साल के वनवास के बाद पांडवों का अपने राज्य में लौटना भी इसी दिन हुआ था और सबसे प्रमुख राम जी के वनवास से अयोध्या वापिस लौटने की खुशी में अयोध्या वासियों ने दीप जलाकर उनका स्वागत किया था। इस तरह दीपावली को मनाने की बहुत सारी वजहें है।

दीपावली हिंदुओं का त्योहार माना जाता है। लेकिन भारत में लगभग सभी धर्म के लोग दीपावली की आहट से ही उल्लासित होने लगते हैं। इस धर्म को मनाने के लिए हर धर्म की अपनी वजह और धारणा है। जैन धर्म के लोग महावीर के मोक्ष दिवस के रूप में मनाते हैं तो सिक्ख समुदाय के लोग इसे बंदी छोड़ दिवस के रूप में मनाते हैं। बौद्ध धर्म के अनुयायी भी पूर्ण उल्लास के साथ दीपावली मनाते हैं। इस दिन सभी धर्म के लोग अपना आपसी मतभेद बुलाकर एक दूसरे को शुभकामनाएं देते हैं और मिठाइयों का आदान-प्रदान करते हैं। इस दिन धार्मिक एकता का अनुभव होता है।

दीपावली पर व्यापार अपने चरम पर होता है। धनतेरस का दिन बहुत शुभ मुहूर्त माना जाता है। इसलिए लोग नई वस्तु खरीदने के लिए लंबे समय से दीपावली के शुभ आगमन का इंतजार करते हैं। धनतेरस के दिन व्यापार अपनी सभी सीमाएँ लाँघ कर नई ऊँचाइयों को छूता है। सभी व्यक्ति सोने चाँदी के गहने, सिक्के खरीदने के लिए लालायित रहते हैं। बाजार तरह-तरह के कपड़ों से सजकर सतरंगी छटा बिखेरता है। व्यक्ति घर से निकलकर बाजार जाने का लोभ त्याग ही नहीं पाता है। नए-नए वाहन खरीदे जाते हैं, इलेक्ट्रिक सामान, रसोई के बर्तन, घरेलू सुविधाएं सभी दीपावली पर खरीदने की कोशिश रहती है। दुकानों में भीड़ उमड़ी हुई रहती है और यह उमड़ी हुई भीड़ व्यापार को चार चाँद लगाती है। इस दिन लक्ष्मी गणेश की पूजा होती है तो कहीं काली का पूजन भी होता है। दीपावली पांच दिन तक चलने वाला त्योहार है। क्योंकि आगे पीछे के दिनों में छोटे बड़े कई त्योहार शामिल हो जाते हैं। जैसे तुलसी पूजन, नरक चतुर्दशी, लक्ष्मी- गणेश पूजन, गोवर्धन पूजन, भाई दूज आदि शामिल है।

वैसे तो भारतीय परंपरा में बहुत से ऐसे मौके आते हैं जब व्यक्ति अपना आध्यात्मिक विकास करता है। लेकिन दीपावली की बात बेहद निराली है। इस दिन व्यक्ति आध्यात्मिक उन्नति के साथ-साथ मानसिक और वैचारिक उन्नति की ओर अग्रसर होता है। जब एक छोटे से दीपक को विशाल अंधकार से लड़ते हुए पाता है तो वह खुद भी दीपक की तरह स्वयं में विश्वास और दृढ़ता की भावना को पुष्ट करता है। आमतौर से पूजन नहीं करने वाला व्यक्ति भी इस दिन लक्ष्मी गणेश की पूजा अवश्य करता है। लक्ष्मी जी से प्रार्थना करता है कि वे उसके घर में स्थाई रूप से अपना वास करें।

दीपावली स्वच्छता का प्रतीक भी है। जैसे-जैसे दीपावली नजदीक आने लगती है, लोग अपने घरों के हर एक कोने की सफाई करने में व्यस्त हो जाते हैं। बरसात का मौसम जा चुका होता है, खरीफ की फसल तैयार होकर घर पहुँच जाती है और रवि की फसल बुवाई का मौसम होने से लोग उल्लासित मन से सफाई का भरपूर आनंद लेते हैं। अनुपयोगी सामान को घर से बाहर निकाला जाता है। बरसात में हुई सीलन से सामान को खराब होने से बचाने के लिए उसे धूप लगाकर दोबारा सहेज कर रखा जाता है। वैज्ञानिक दृष्टि से भी घर को बरसात में सीलन से पैदा हुए जीव जंतुओ से मुक्त करने के लिए सफाई का विशेष महत्त्व होता है।

दीपावली की बात हो और आतिशबाजी का जिक्र नहीं हो तो दीपावली की खुशी अधूरी सी लगती है। हालाँकि पटाखे चलाने से प्रदूषण बढ़ता है लेकिन पटाखों की आवाज और रोशनी देखकर हर उम्र का व्यक्ति प्रफुल्लित होता हैं। उनका ये तर्क होता है कि पर्यावरण बचाने के लिए साल भर का समय होता है। लेकिन पटाखे चलाने के लिए सिर्फ एक दिन का समय होता है। इसलिए इस दिन का भरपूर आनंद लिया जाए। क्योंकि पटाखे आनंद का प्रतीक माने जाते है। इनकी आवाज और रोशनी के बगैर दीपावली बेरंग सी नजर आती है। साल भर से रोजी-रोटी कमाने में व्यस्त से व्यस्त लोग भी इस दिन आतिशबाजी करने का आनंद उठाते हैं।

आज की व्यस्त दिनचर्या में व्यक्ति के पास इतनी फुर्सत ही नहीं है कि वह अपने लिए आनंद के दो पल निकाल सके। भौतिकवादी युग ने समाज की पुरानी साधारण दिनचर्या को डस लिया है। व्यक्ति सुबह से शाम तक कोल्हू के बैल की तरह लगा रहता है। ऐसा नहीं है कि पहले लोग काम नहीं करते थे। लेकिन तब के और अब के जीवन में जमीन आसमान का फर्क है। तब व्यक्ति आनंद ढूंढ़ने के लिए अलग-अलग मौसम में त्योहार का भरपूर आनंद लेते थे। लेकिन आज की दिनचर्या में आनंद शब्द गायब है। इसलिए भी दीपावली का महत्त्व काफी बढ़ जाता है क्योंकि व्यक्ति दूसरे त्योहारों को इग्नोर कर सकता है लेकिन दीपावली से खुद को चाह कर भी अलग नहीं कर पाता। दीपावली खुशियों का प्रतीक, निराशा में आशा का प्रतीक, अंधकार पर रोशनी की विजय का प्रतीक और स्वच्छता का प्रतीक है। यह ऐसा त्योहार है जिसे हर व्यक्ति उमंग और उल्लास के साथ मनाता है तथा सारे गिले शिकवे भूल कर परस्पर स्नेह बाँटता है।

अध्यापिका
राज. उच्च माध्यमिक विद्यालय अणतपुरा,
किशनगढ़ रेनवाल, सांभर लेक,
जयपुर, राजस्थान
मो.-9829389426

ईयर फोन का शोर : कितना सेहतमन्द ?

❒ डॉ. नगेन्द्र सिंह राठौड़

आज का आधुनिक विद्यार्थी तकनीकी के इस दौर में विभिन्न इलैक्ट्रोनिक गैजेट का दैनिक जीवन के क्रियाकलाप में कहीं न कहीं इसका उपयोग कर रहा है । जाने अनजाने में वह इन इलैक्ट्रोनिक गैजेट के माया जाल में फंसता चला जा रहा है और अपने शरीर के महत्त्वपूर्ण अंगो आँख, कान, दिमाग को धीरे-धीरे नष्ट होते भी नहीं देख पा रहा है । मेरा आज का यह लेख विद्यार्थियों को इलैक्ट्रोनिक गैजेट के दुष्प्रभावों से समय पूर्व जागृत करने का एक प्रयास है।

ईयर फोन्स-बड्स- आज विद्यार्थी, युवा ईयर फोन्स, ब्लू टूथ, बड्स और पॉड्स के शौकिन है। चाहे ऑन लाइन क्लास हो, मॉर्निंग वॉक पर जा रहा हो, बस, रेल में यात्रा के दौरान, लाइब्रेरी, ऑफिस में काम के दौरान इन सब डिवाइस का अत्यधिक उपयोग करता है। लेकिन विद्यार्थी यह नहीं सोचता है कि कुछ समय का यह सुकुन आपको जिंदगी भर के अनगिनत रोग मुफ्त बांट रहा है । धीरे-धीरे कब हियरिंग लॉस, चिडचिड़ापन, मानसिक अवसाद, चीजों को भूलना यहाँ तक कि व्यक्तियों के नाम तक भूलनें की समस्याओं तक न जानें कितनी अनगिनत समस्याओं के मकड़जाल की गिरफ्त में फंसता चला जा रहा है। हर आयु के लोगों को कम उम्र में ही हियरिंग लॉस का सामना करना पड़ रहा है।

अभी कुछ दिनों पहले विभिन्न समाचार पत्रों में मशहूर गायिका अल्का याग्निक के सेंसरिनुरल नर्व-हियरिंग लॉस बीमारी का पता चला । गायिका ने विभिन्न समाचार पत्रों के माध्यम से युवाओं, ख़ासकर विद्यार्थियों को तेज आवाज में संगीत सुनने से बचनें का आह्वान किया।

कान-नाक-गला रोग विशेषज्ञों के पास लगातार इस तरह की शिकायतों के साथ युवा, छात्र, लोग पहुँच रहे है। इन दिनों राजधानी जयपुर के सबसे बड़े एस.एम.एस. अस्पताल की ओ.पी.डी. में प्रतिदिन 10 से 15 मरीज आ रहे है जो गंभीर सेंसरिनुरल नर्व-हियरिंग लॉस का शिकार हैं।

अमेरिका की यूनिवर्सिटी ऑफ कोलाराडो में बायोकेमेस्ट्री के प्रोफेसर जेरी फिलिप्स के रिसर्च के अनुसार ब्लूटूथ या वायरलेस हेडफोन ब्रेन केंसर के जोखिम को बढाता है। इसके अलावा न्यूरोलॉजिकल, जेनेटिक डिसऑर्डर जैसी गंभीर बीमारियों का भी कारण बन सकती है। बच्चों तथा गर्भवती महिलाओं को इससे ज्यादा खतरा है।

लम्बे समय तक कानों में ईयरफोन या हेडफोन लगाने से बहरापन होने की संभावनाएं काफी बढ़ जाती है। देर तक ईयरफोन लगाए रखने से कानों की नसों पर दबाव पड़ने लगता है, जिससे नसों में सूजन की आशंका काफी बढ जाती है । ऐसे में वाइब्रेशन की वजह से हियरिंग सेल्स अपनी संवेदनशीलता खोने लगते हैं और व्यक्ति बहरा हो जाता है। डब्लू.एच.ओ. ने भी चेतावनी दी है कि ईयरफोन के अधिक इस्तेमाल से 2050 तक 70 करोड़ से ज्यादा लोगों के कान खराब हो सकते हैं।

क्या है सेंसरिनुरल नर्व-हियरिंग लॉस-सेंसरिनुरल नर्व- हियरिंग लॉस (एस.एन.एच.एल.) इन विशेष कोशिकाओं या आंतरिक कान में तंत्रिका तंतुओं के नुकसान के कारण होता है । कभी-कभी सुनने की क्षमता में कमी, मस्तिष्क तक संकेतो को ले जाने वाली तंत्रिका को नुकसान के कारण होती है। ईयर फोन्स, ब्लूटूथ, बड्स और पॉडस के लगातार प्रयोग से सुनने की नसों को रिकवरी के लिए समय नहीं मिलता हैं। ईयरफोन सीधे कान की नली में लगाए जाते हैं, इसलिए वे हवा के मार्ग को अवरुध करते हैं जिससे कान में संक्रमण की संभावना बढ़ जाती है।

90 डेसिबल का साउंड लगातार 5-6 घंटे या 120 डेसिबल का साउंड एक दम सुनते हैं तो इससे सुनने की क्षमता कम हो सकती है।

संवेदी श्रवण हानि एक अपक्षयी स्थिति है जो मस्तिष्क के सबसे निकट कान के हिस्से को प्रभावित करते है इसलिए इसे सर्जरी से ठीक नही किया जा सकता है।

हम कोई भी आवाज दो तरीकों से सुन सकते है-

1. प्रथम- कंडक्टिंग हियरिंग जिसमें पर्दे में हलचल के कारण हम सुन पाते है।

2. द्वितीय - सेंसरिनुरल नर्व हियरिंग इसमें कान का एक हिस्सा दिमाग तक जाने वाली नस के माध्यम से आवाज ब्रेन तक पहुँचाता है।

ब्लूटूथ, हेड फोन से होने वाले अदृश्य खतरे-

1. न्यूरोलोजिकल बीमारियाँ - सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन की एक रिपोर्ट के अनुसार नॉन-आयोनाइजिंग रेडियेशन के डाइरेक्ट कांटेक्ट में लगातार रहने से ब्रेन टिश्यू के डेमेज होने की आशंका रहती है, जो कि न्यूरोलोजिकल बीमारियों का कारण बनती है।

2. ब्रेन केंसर - इयरबड्स से निकलने वाले रेडियेशन ब्रेन ट्यूमर को बढाने का काम करते हैं जिससे कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों का खतरा भी बढ़ता है।

इस बीमारी के प्रारम्भिक लक्षण -

- बातचीत करने के दौरान सुनने या समझने में परेशानी होना।
- कानों में सिटी बजना, घंटी जैसी आवाज आना (टिनिटस), कानों में दर्द तथा सूजन।
- ऊँची आवाज सुनने में परेशानी।
- बैकग्राउंड शोर होने पर आवाज सुनने में परेशानी होना।
- चक्कर आना या संतुलन संबधी समस्याएं।
- सिरदर्द या नींद न आने जैसी समस्याएं भी होने लगती है।
- ऐसा एहसास होता है कि ध्वनि काफी तेज है, लेकिन फिर भी उसे समझना कठिन है।

इस बीमारी से कैसे करें बचाव -

- लाऊड म्यूजिक सुनना बन्द करें।
- ईयर फोन, हेड फोन, ब्लुटुथ की आवाज 60 प्रतिशत से कम रखें और लगातार प्रयोग करने से बचे । इसकी आवाज 25 से 30 डेसिबल ही रखनी चाहिए।
- तेज आवाज के आस-पास जाने से बचना चाहिए । अगर जाते है तो ईयर प्लग पहनना चाहिए।
- अपनी सुनने की क्षमता की नियमित जाँच कराए।
- फोन पर बात करते समय स्पीकर का प्रयोग करें।
- एयरपॉड, नैक बैण्ड ईयरफोन, ब्लूटूथ का प्रयोग कम से कम करें।
- अगर कोई विद्यार्थी लम्बी ऑनलाइन क्लास लेता है तो 30 मिनट के बाद 15 मिनट का ब्रेक लेना चाहिए।
- लम्बे समय तक वीडियो देखने या ऑडियो सूनने के लिए स्पीकर का इस्तेमाल करें।
- ईयरफोन, किसी के साथ शेयर नहीं करने चाहिए । इससे संक्रमण दूसरे व्यक्ति को भी होने का खतरा रहता है।

श्रवण क्षमता के लिए आवश्यक ध्वनि क्षमता डेसिबल में

- सामान्य हियरिंग - 25 डेसिबल तक श्रवण हानि नहीं।
- हल्की हियरिंग/श्रवण हानि - 26 से 40 डेसिबल के बीच
- मध्यम हियरिंग/श्रवण हानि - 41 से 55 डेसिबल के बीच
- मध्यम से गंभीर हियरिंग/श्रवण हानि - 56 से 70 डेसिबल के बीच
- गंभीर हियरिंग/श्रवण हानि - 71 से 90 डेसिबल के बीच

अतः प्रिय बच्चों फैशन के इस दौर में आधुनिक दिखनें या दूसरों की होड के चक्कर में ईयर फोन, हेडफोन, ब्लूटुथ डिवाइस का प्रयोग ना करे । आपका मस्तिष्क बहुत खुबसुरत व अनमोल है ऐसी किसी डिवाइस का प्रयोग ना करे जो आपके मस्तिष्क के सोचने समझने जैसे कार्य करने की क्षमता पर नकारात्मक प्रभाव डाले।

प्राध्यापक (रसायन विज्ञान)
रा.उ.मा.वि.बेरी जतनपुरा
डीडवाना-कुचामन
मो. 9983364346

पुस्तक समीक्षा

समै री सुरणाई

कवि–शिवराज छंगाणी;

प्रकाशक–सूर्य प्रकाशन मन्दिर, बीकानेर ;

मूल्य– ₹ 23; संस्करण – 2008

मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृति सृजन की रही है। प्रकृति की भाँति व्यक्ति भी स्वयं को विविध माध्यमों एवं कला रूपों में रचता, अभिव्यक्त करता आया है। प्रत्येक देश और प्रत्येक भाषा में मानवीय सृजन, चिन्तन, शिल्पगत कौशल और जीवन जगत के विभिन्न रूपों की उत्कर्ष रचनाओं का शानदार इतिहास आज भी सुरक्षित है। उन्हें देखकर तथा उनका अनुशीलन करने वाली पीढ़ियां सृजन के लिए प्रतिमान रचती आई है। परन्तु शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाले शिक्षक अपने सृजन से बालकों का भविष्य निर्माण एवं राष्ट्र के प्रति दायित्वों का बोध कराने में अग्रिम पंक्ति में रहे हैं। ऐसा ही प्रयास माध्यमिक शिक्षा विभाग, राजस्थान बीकानेर कर रहा है जो प्रत्येक शिक्षक दिवस पर अपने विभाग के शिक्षकों व कार्मिकों के सृजन को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा साहित्य प्रकाशित करता है। विभिन्न भाषा व विधाओं की पाँच पुस्तकें प्रति वर्ष प्रकाशित करना एक उल्लेखनीय प्रयास, जिससे रचनाधर्मियों को साहित्य सृजन का सुअवसर प्राप्त होता है। इन्हीं पाँच पुस्तकों में राजस्थानी भाषा की विविध विधाओं की पुस्तक 'समै री सुरणाई' पाठकों के सामने है जिसका सम्पादन शिक्षाविद व वरिष्ठ साहित्यकार शिवराज छंगाणी ने कुशलता पूर्वक किया है। इस पुस्तक में निबन्ध, यात्रा संस्मरण, नाटक, एकांकी, कहानी, लघुकथा, गीत, कविताएं व गजल शामिल है। सभी विधाओं की रचनाएं पाठकों को उत्तम सीख व प्रेरणा देने में सफल रही हैं।

निबन्ध विधा में 'अहिंसा की अवधारणा' में रचनाकार डॉ. जगदीश चन्द्र शर्मा ने अहिंसा के महत्व को पाठकों के सामने रखते हुए यह सन्देश देने में कामयाब हुए हैं कि अहिंसा, दया, करुणा, प्रेम, क्षमा, सहयोग, धैर्य आदि के मिश्रण से ही अनुभव किया जा सकता है। दुनिया, देश व समाज को सभ्य, सुसंस्कृत व विकसित बनाने के लिए अहिंसा की परम आवश्यकता है। हत्या, लूटपाट, तोड़ फोड़, आगजनी, मारपीट, अपहरण करना, चोरी, धोखाधड़ी, दंगा फसाद, शिकार करना, आतंकी घटनाएँ, अपराध, भ्रष्टाचार, शोषण, सतीप्रथा, बाल विवाह, असत्य भाषण व कटुता, वैचारिक विद्वेष को हिंसा में शामिल किया जा सकता है। ऐसा हर कृत्य जो समाज को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष हानि पहुँचाए हिंसा की श्रेणी में आता है। मनुष्य को अहिंसा पूर्ण बनाने में सकारात्मक सोच आवश्यक होती है।

''राजस्थानी लोक संस्कृति - एक पहचान'' में रचनाकार ने राजस्थान की लोक संस्कृति के विभिन्न आयामों का विस्तारपूर्वक वर्णन कर पाठकों को महत्त्वपूर्ण जानकारी परोसी है। राजस्थान की लोक संस्कृति समृद्ध व अनुपम है। प्राकृतिक सम्पदा, कलात्मक वैभव, रहन-सहन, खान-पान, वेश भूषा, धर्म और दर्शन का इस निबन्ध में सराहनीय वर्णन हुआ है। हमारी संस्कृति सनातन है। जो भी बाहर से यहाँ आया वह यहाँ की संस्कृति को अपनाकर यहाँ का ही बनकर रह गया।

शिक्षाविद व लेखक ओम प्रकाश सारस्वत ने अपने सारगर्भित निबन्ध में जल के संरक्षण के महत्त्व को समझाने का प्रयास किया है। जल एक सीमित व महत्त्वपूर्ण तत्त्व है जो प्राणीजगत के लिए अनिवार्य है। बिना जल के किसी भी प्राणी के जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। लेखक का जल संरक्षण सम्बन्धी सन्देश सटीक व प्रेरणादायी है। जगदीश नागर ने अपने निबन्ध में देश, प्रदेश व विदेश में बसे मारवाड़ी समाज के लोगों का समाज सेवा के कार्यों में योगदान व देश की आर्थिक प्रगति में समाज की महत्त्वपूर्ण भूमिका सराहनीय है। यात्रा संस्मरण में ओम दत्त जोशी ने यमनोत्री गंगोत्री तक की यात्रा के मनभावन दृश्यों को तथा प्राकृतिक छटा का वर्णन कर पाठकों को सुन्दर रचनाकार ने अपनी लेखनी से शब्द चितराम के माध्यम से बहुत ही सुन्दर व आकर्षक वर्णन किया है।

कहानी विद्या में 'अपनो साचो' कहानी में लिच्छु जैसी होनहार बेटी समाज की विद्रुपताओं व बाधाओं तथा दकियानुसी सोच के बाद भी डॉक्टर बनने का स्वप्न पूरा करती है। 'मीठो सुपनो' और 'मौसा री मार' कहानियाँ भी सामाजिक सरोकार की कहानियां है। समाज में व्याप्त कुरीतियों को पाठकों के सामने रखने में ये कहानियों सफल रही हैं। लघुकथाएँ 'पराए खातर जीवन खपाणो' एक शिक्षा प्रद लघुकथा है। कार्य कोई भी छोटा बड़ा नहीं होता। पानी की बूंद की तरह कार्य करने की भावना शुद्ध होनी चाहिए। 'अनोखों प्रसाद' एक ज्ञानवर्धक नाटक है जो त्रेता युग में शबरी के भगवान राम के माध्यम से प्रेम प्रकट करता है जिसमें ऊँच नीच का भेद नहीं होता है। यह नाटक विद्यालयों में मंचन योग्य है।

कविता विद्या में सांवलाराम नामा की कविता 'हंसा रे...' प्रथम पूज्य गणेश की वन्दना का गान करते हुए मनुष्य जन्म को सुधारने पर बल देती है। 'समतावादी पाठ सीरव है। जगदीश नागर के 'उहा' भावपूर्ण व ज्ञानवर्धक है। इन दूहों में बिन वर्षा के अकाल की 'प्रकृति में विचरण करने वाले पशु-पक्षियों के बिना भेदभाव के रहने की स्थिति का का चित्रण है। इस स्थिति में वनस्पति, पशु पक्षियों का जीवन बचाना महत्वपूर्ण हो जाता है। इस दोहे की बानगी-

गाँव-गाँव में काळ पड्यो, बूंद-बूंद सांसा।
जग्य होम करता थकां नी मेह बरसण री आता॥

दशरथ सिंह खिड़िया के 'वीरां रा दूहा' में राजस्थान के वीर सपूतों के बलिदान का बखान है। देखिए - 'कायर सुवै महल में, हिंवड़े सँका जाण। / सूळी सेजां सूरमों, सोवे खूंटी ताण॥ इसी प्रकार गैरी नींद सूतौ है, सोनलिया मिरग, कोजा दिन, प्रणवीर प्रताप, ओ कांई हाल?, रितु बसंत, रूखड़ों री पुकार आदि कविताएं भी भावपूर्ण व सीख प्रद है। ये कविताएं कथ्य और कथानक के परिप्रेक्ष्य में खरी उतरती है। 'माँ' कविता में कवि माँ की ममता, करुणा, त्याग और माँ के ममतामयी व्यवहार का सटीक वर्णन है। 'भाषा चाइजै' कविता में डॉ. मदन गोपाल लढ़ा राजस्थानी भाषा को मातृभाषा व इसे मान्यता देने की वकालत करती है। इसके अलावा गीत और गजल का चुनाव भी सराहनीय है। 'पाणी अरपाणी' गीत में जल संरक्षण व इसका उचित उपयोग करने की सीख है। भगवती प्रसाद गौतम के हाइकू कम शब्दों में अधिक कहने की ताकत रखते हैं। कुंदन सिंह सजल की गजल जीवन को संयमित बनाने की प्रेरणा देती है।

राजस्थानी भाषा की यह विशेष पुस्तक 'समै री सुरणाई' शिक्षा विभाग के शिक्षकों व कर्मचारियों की प्रतिनिधि पुस्तक है जिसमें शिक्षक रचनाकारों ने अपनी लेखनी से उत्कृष्ट रचनाएं उकेरी है। माध्यमिक शिक्षा विभाग, विभाग के रचनाकारों की प्रतिभाओं को तरासने का सराहनीय कार्य करता है। इस पुस्तक का आमुख शिक्षा विभाग के निदेशक महोदय का है जो रचनाकारों को प्रोत्साहित करता है। शिवराज छंगाणी के सम्पादन में ही यह पुस्तक पुस्तकालयों के लिए भी संग्रहणीय है।

समीक्षक
रामजी लाल घोडेला प्रधानाचार्य (सेवा निवृत)
C/o राज क्लॉथ स्टोर,
लूणकरणसर-334603 (बीकानेर)
मो. 6350087987

बाल शिविरा

राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा अपनी सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है। –व. संपादक

बेटियाँ

बेटों के जन्म पर खुशियां मनाई
बेटियों को क्यों मारने की इच्छा जताई।
लाड़ प्यार किया बेटों को
बेटियों को क्यों थप्पड़ लगाई।
बेटों को ला दिए खिलौने नए
बेटियों की क्यों इच्छा भुलाई।
जो रो देते हैं बेटे तो
सारा संसार कदमों में डाल देते हैं।
बेटियां मांगें पढ़ना लिखना
तो जल्दी ब्याह कर देते हैं।
बेटियां सुख दुःख सब कुछ
अपने अंदर सह लेती हैं
माँ-बाप को खुश देखकर
बेटियां आंसू खुशी में बदल लेती है।
कभी न बताती दुःख अपना
अपनी ख्वाहिश छुपा लेती हैं।
बेटी अपना दुःख दिल में दबाकर
सबके सामने जीवन-भर मुस्कुरा लेती है।

नाजीन, कक्षा 12, राउमावि दूंसरा, जिला बारां, राजस्थान

बच्चों को पुस्तकें पुरस्कार में दे

माता-पिता घर में मोबाइल में लगे रहते है फिर बच्चों को दूर रहने के लिए कहते है जो ग़लत है। अभिभावकों को स्वयं पहले बदलना होगा। बच्चे तो उसका अनुकरण करके स्वयं अच्छी आदतों को अपनाते जाएंगे। बाल साहित्य में रुचि जगाने के लिए विद्यालय में प्रार्थना सत्र के शुरुआत में या कक्षा की शुरुआत में कक्षा अध्यापक जी द्वारा बच्चों को बाल साहित्य की पुस्तकें पढ़ने के लिए वितरित करनी चाहिए और कुछ दिन या सप्ताह के बाद उसमें से प्रश्न पूछने चाहिए। जो बच्चा अधिक सटीक उत्तर दे, उसको प्रोत्साहन व पुरस्कार देना चाहिए। जिससे बच्चों में बाल साहित्य की पुस्तकें पढ़ने की ओर रूझान बढ़ेगा। कभी -कभी विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले और विजेता बच्चों को कविता, कहानी, चुटकुलें, चित्र कथा आदि की पुस्तकें पुरस्कार में देनी चाहिए। जिससे बच्चों को विभिन्न पुस्तकें पढ़ने में रुचि बढ़ेगी।

पाखी जैन, कक्षा 7, एमडीएस सी.सै.स्कूल, से.3, उदयपुर, राजस्थान

हिन्दी-हिन्दु-हिन्दुस्तान

बिछड़ जाएंगे अपने हमसे
अगर अंग्रेजी टिक जाएगी ।
मिट जाएगा वजूद हमारा
अगर- हिन्दी मिट जाएगी ।
हिन्दी हमारी राष्ट्रीय भाषा
हिन्दी हिन्दू - हिन्दुस्तान
कहते है सब सीना तान ।
पल भर के लिए जरा सोचे ।
हर एक भारतीय इंसान ।
कितना रख पाते हैं हम
हमारी हिन्दी का ध्यान ।
सिर्फ 14 सितम्बर को ही क्यों
करते अपनी राष्ट्र-भाषा का सम्मान।
हर पल हर दिन करते हैं हम
हिन्दी बोलने वालों का अपमान ।
सिर्फ 14 सितम्बर को ही क्यो
याद आता है हमें, हिन्दी बचाओ अभियान ।
आखिर क्यों करता हैं अपमानित
हिन्दी को, स्वयं भारतीय इन्सान ।
सिर्फ 14 सितम्बर को ही हिन्दी में
क्यों भाषण देते है हमारे नेता महान ।
आखिर क्यों समझते हैं अपना
हिन्दी बोलने में अपमान ।
क्यों समझते है हम, अंग्रेजी बोलने मे खुद को महान ।
क्या भूल गए, हम,
इन्हीं अंग्रेजों ने बनाया था
हमे वर्षों पहले गुलाम ।
आज उन्ही की भाषा को
क्यों करते हैं हम शत-शत प्रणाम ।
अरे ओ ! सोये हुए भारतीय इन्सान
अब तो जगाओ अपना सोया हुआ स्वाभिमान ।
उठ खडे हों, सब मिलकर करें प्रयास
आओ दिलाएं अपनी मातृ भाषा को अन्तर्राष्ट्रीय पहचान ।
हम सब ताकि कह सकें सीना तान
हिन्दी - हिन्दू - हिन्दुस्तान ।
"हिन्दी - दिवस"

गुडी बैरवा, कक्षा-6, म.गां.रा.वि. समेलिया फागी, दूदू, राजस्थान

एक पेड़ देश के नाम

बैठा था एकांत मे सोचा कुछ शब्द मिल
जाए लिखने को
मन में आया की लिख लू एकांत के बारे मे
एकांत में बैठ के
मेरे मन में एकांत की परिभाषा
यही है कि एकांत तभी अच्छा लगता है
जब व्यक्ति दुःखी हो, मन से हारा हो,
असफलता हो असफलता की जकड़ी
जंजीरों में जीवन से हारा व्यक्ति
जब जाता है एकांत में तब -
उसके मन मे आशा की किरण
की भांति मन का दीपक जलता है तथा
सोचने लगता है
यह दुःख कब तक रुकेगा ? असफलता
कब तक रुकेगी ? अगर रात हैं तो निश्चित
दिन आएगा । दुःख है तो सुख आएगा ।
अगर असफलता से सफलता प्राप्त करनी है
तो मेहनत का हथियार अपनाना होगा ।
इतना सोच में मन को मना लेता हूँ
इतने विचारों में गोता क्यूं खाऊ ?
जीवन आगे महासंग्राम है, मैं चलता रहूँगा
यह एकांत मेरे लिए एक सपने की तरह है
और इस सपने में, मैं आना पसंद करूँगा।

पियुष पण्डिया, कक्षा-12, रा.उ.मा.वि. सेवन्त्री कुम्भलगढ़ (राजसमन्द)

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिवार में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अत: आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर shivira.dse@rajasthan.gov.in पर भिजवाकर सहयोग करें। –व. संपादक

छात्रों ने शिक्षक बनकर जगाई शिक्षा की अलख

दूदू - आज शिक्षक दिवस के शुभअवसर पर महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय समेलिया, फागी में विद्यार्थियों में से ही प्रधानाचार्य, उपप्रधानाचार्य व व्याख्याता अध्यापक बन कर विद्यालय संचालन की समस्त गतिविधियों का प्रार्थना सत्र से प्रारम्भ कर अंत में सांस्कृतिक समारोह के आयोजन तक का सुचारु रूप से संचालन कर अनोखे अंदाज में शिक्षक दिवस मनाया गया। इस शुभअवसर पर शिक्षक बने विद्यार्थियों ने अपने शिक्षक बनने के अनुभव साझा किए व विभिन्न कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा समस्त शिक्षकों को उपहार स्वरुप ग्रीटिंग काड्र्स बना कर दिए गए। उपहार के रूप में तस्वीरें व पेन आदि भेंट किए गए। अंत में सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में गुरु की वंदना करते हुए एक नृत्य नाटिका प्रस्तुत की गयी। इस शुभअवसर पर होनहार विद्यार्थियों को प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए। अंत में संस्था प्रधान अवधेश कुमार चौधरी द्वारा शिक्षक धर्म पर विचार व्यक्त करते हुए उपस्थित समस्त शिक्षकों से देश व समाजसेवा में तन मन धन से पूर्ण रूप से लग जाने का आह्वान किया।

पर्यावरण की स्वच्छता हेतु बढ़ाई जागरूकता

झुन्झुनूं - स्थानीय विद्यालय में प्लास्टिक बैग के उपयोग को कम करने एवं पर्यावरण को स्वच्छ रखने के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रधानाचार्य श्री राकेश कुमार ढाका के नेतृत्व में कक्षा 11 के विद्यार्थियों ने 'नो प्लास्टिक' के संदेश के माध्यम से प्लास्टिक बैग का उपयोग नहीं करने और इसके सुरक्षित विकल्पों के बारे में जागरूकता संदेश प्रस्तुत किया। प्रधानाचार्य श्री ढाका ने सभी स्टॉफ एवं विद्यार्थियों को सिंगल यूज प्लास्टिक उपयोग न करने की शपथ दिलवाई। प्राध्यापक श्री साकेत कुमार ने वार्ता प्रस्तुत कर बताया कि प्लास्टिक न केवल पर्यावरणीय क्षति पहुँचाता है अपितु हमारी सेहत के लिए भी बेहद खतरनाक है। उन्होनें छात्रों का प्लास्टिक मुक्त जीवन शैली अपनाने के लिए प्रेरित किया। अन्य गतिविधियों के अन्तर्गत चार्ट, बैनर तथा पोस्टर तथा निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। गतिविधियों के आयोजन के उपरान्त प्रतियोगिता में प्रथम व द्वितीय स्थान पर रहने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर इको क्लब गतिविधियों के अन्तर्गत विद्यालय परिसर एवं आस-पास क्षेत्र के प्लास्टिक कचरे को एकत्रित कर उसे सही तरीके से निपटाने के लिए एक विशेष अभियान श्री भागीरथमल ढाका अध्यापक के नेतृत्व में सभी सदनों के विद्यार्थियों द्वारा चलाया गया।

शिक्षक दिवस पर शिक्षक गुरुदीन वर्मा ने अपने विद्यालय की बदली तस्वीर

सिरोही – नांदिया (पिण्डवाड़ा, राजस्थान) - सिरोही जिले के पिण्डवाड़ा ब्लॉक के नांदिया गाँव के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में नियुक्त शिक्षक गुरुदीन वर्मा शिक्षक दिवस पर भामाशाह बनकर अपने विद्यालय का रंग-रोगन करवाया है।

संस्था प्रधान हड़मत सिंह राठौड़ ने बताया कि श्री वर्मा ने खुद भामाशाह बनकर अपने विद्यालय के प्राथमिक परिसर का रंग- रोगन करवाया है। इस कार्य के लिए उनके विद्यालय के प्रधान और गाँव के प्रतिनिधि ताराराम जी ने उनका माला एवं साफा पहनाकर सम्मान किया।

इस अवसर पर संस्था प्रधान ने वर्मा के इस कार्य की प्रशंसा करते हुए कहा कि किसी भामाशाह से सहयोग लेने से पहले यह पहल शिक्षक खुद से करें तो इससे भामाशाह भी प्रेरित होते हैं। गाँव के प्रतिनिधि ताराराम ने कहा कि मेरे जीवन में और इस गाँव में यह ऐसे पहले शिक्षक हैं जिन्होंने खुद

भामाशाह बनकर इस विद्यालय के विकास की शुरुआत की। शारीरिक शिक्षक नरेंद्र सिंह ने कहा कि इन्होंने इस विद्यालय को वह सूरत दी है जिसकी तरफ हर कोई आकर्षित होता है और इनके कार्य की प्रशंसा करता है। स्थानीय विद्यालय के पंचायत शिक्षक सांकलाराम ने कहा कि इनकी शुरू से ही इस विद्यालय के विकास के प्रति रूचि रही है और एक भामाशाह के रूप में यह इस विद्यालय को स्मार्ट टीवी, कुर्सियां, पँखें, पोषाहार थालियां, डिजिटल घड़ी,लेखन सामग्री आदि भेंट कर चुके हैं और भविष्य में भी इन्होंने इस विद्यालय में विकास में सहयोग देने की बात कही है। एक भामाशाह के रूप में इनको इस वर्ष स्वतंत्रता दिवस पर उपखण्ड स्तर पर सम्मानित किया गया है।

इस अवसर पर उपस्थित शिक्षक धनराज लोहार, मंजीत सिंह, इरफान खान, बिन्दु चौधरी आदि द्वारा भी अपने वक्तव्य में वर्मा के कार्यों की प्रशंसा की गई और माला पहनाकर सम्मान किया गया।

ज्ञात हो कि शिक्षक वर्मा मूलतः बारां जिले के मूलनिवासी है जो एक अच्छे साहित्यकार भी है। साहित्यकार के रूप में वर्मा अब तक 250 से ज्यादा सम्मान पत्र प्राप्त कर चुके हैं और 3000 के लगभग रचनाए लिख चुके हैं।

पचपहाड़ विद्यालय में पादपों की क्यू आर कोडिंग शुरू

झालावाड़-स्थानीय विद्यालय के जीव विज्ञान के व्याख्याता दिव्येंदु सेन ने बताया कि वैसे तो सभी पौधे पर्यावरण में अपना महत्त्व रखते हैं लेकिन कभी-कभी पौधे की पहचान और उपयोगिता के ज्ञान बिना उन्हें काट दिया जाता है या विस्थापित कर दिया जाता है, इनमें कई दुर्लभ पौधे भी होते हैं, तकनीकी के उपयोग से इन्हें बचाया जा सकता है, अधिकांश लोग पेड़ों की सुन्दरता का अवलोकन तो कर लेते हैं लेकिन उसकी उपयोगिता और प्रजाति को पहचान नहीं पाते, अब क्यू आर कोड से यह आसन हो जाएगा, नवाचार के रूप में कक्षा 11 जीव विज्ञान के विद्यार्थियों को मार्गदर्शन देकर विद्यालय के बगीचों के पौधों को क्यू आर कोड दिया जा रहा है जिससे मोबाइल से स्कैन करके उनके बारे में प्रारंभिक जानकारी जैसे नाम, आकारिकी व उपयोग के बारे में जाना जा सकता है, इससे न केवल पौधों की जानकारी होगी बल्कि पौधे के बारे में जानकर वन संरक्षण में भी मदद मिलेगी। प्रारंभिक चरण में 50 पौधों के क्यू आर कोड तैयार किए जा चुके हैं। लोग इन्हें स्कैन कर जानकारियां ले रहे हैं।

क्यू आर कोड जनरेट करने के लिए इंटरनेट पर संबंधित पौधे के बारे में जानकारी एकत्रित की गई तथा उनको लैपटॉप में टाइप करके फाइल को क्यू आर कोड में बदल दिया गया, इसमें केवल प्रिंटिंग का खर्चा आता है जो नाममात्र का होता है।

68वीं जिला स्तरीय शतरंज प्रतियोगिता का हुआ समापन, विजेता खिलाड़ियों को विधायक व्यास ने पहनाएं मेडल

बीकानेर : शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित 68वीं जिला स्तरीय शतरंज प्रतियोगिता 17/19 वर्ष छात्र/ छात्रा का समापन समारोह एनडी मॉर्डन सीनियर सैकेण्डरी स्कूल आचार्यों का चौक में हुआ। प्रतियोगिता समिति सदस्य मोहर सिंह सलावद ने बताया कि समापन समारोह के मुख्य अतिथि बीकानेर पश्चिम विधायक जेठानंद व्यास व विशिष्ट अतिथि उप जिला शिक्षा अधिकारी शारीरिक शिक्षा अनिल बोड़ा रहे व समारोह कि अध्यक्षता शाला की व्यवस्थापक संतोष व्यास ने की। इस अवसर पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। विधायक व्यास ने कहा कि खिलाड़ियों को खेलों को मन लगाकर खेलने से जीत अवश्य होती है। उप जिला शिक्षा अधिकारी अनिल बोड़ा ने सभी विजेता खिलाड़ियों को राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में जीतकर आने के लिए बधाई एवं शुभकामनाएं दी। समारोह में चारों वर्गों में प्रथम तीन-तीन स्थान प्राप्त खिलाड़ियों के साथ विजेता चारो टीमों को सम्मानित किया गया। 17 वर्ष छात्रा में प्रथम स्थान का पुरस्कार राबाउमावि हर्षों का चौक, द्वितीय स्थान महारानी किशोरी देवी गर्ल्स स्कूल तथा तीसरा स्थान राजस्थान बाल मंदिर पब्लिक स्कूल ने प्राप्त किया। 19 वर्ष छात्रा में प्रथम स्थान एमएम स्कूल, द्वितीय स्थान राउमावि हर्षा का चौक, तीसरा स्थान महारानी किशोरी देवी गर्ल्स स्कूल ने प्राप्त किया। इसी प्रकार 17 वर्ष छात्र में प्रथम स्थान श्री जैन पब्लिक स्कूल, द्वितीय स्थान आर्मी पब्लिक स्कूल व तीसरा स्थान श्री चैतन्य टेक्नो स्कूल ने प्राप्त किया व 19 वर्ष छात्र में प्रथम स्थान आर्मी स्कूल, दूसरा स्थान सेंट तोलाराम अकादमी और तृतीय स्थान श्री जैन पब्लिक स्कूल ने प्राप्त किया।

19 वर्ष छात्र वर्ग में प्रथम तीन स्थानों पर मधुर स्वामी, कुशल व्यास, मयंक रंगा तथा 19 वर्ष छात्रा में प्रथम तीन स्थान पर राधिका पुरोहित, सानिया जोशी, तेजस्वी रंगा रही इसी प्रकार 17 वर्ष छात्र व छात्रा वर्ष में प्रथम तीन स्थानों पर उदय सेठी, रवि कांत मारू, रंजन कुमार माचरा व छात्रा में अन्वेषा व्यास, दिव्या महात्मा व भाविका सुथार विजेता रही।

राजकीय गुरू गोविन्दसिंह उच्च माध्यमिक विद्यालय में भामाशाह सहयोग

उदयपुर : श्रीमती सरोज जैन, व्याख्याता, रा. बा. उ.मा.वि., जगदीश चौक, उदयपुर ने 50,000/- रु. पचास हजार की राशि स्वेच्छा से रा. गु.गो. उ. मा. वि. चेटक सर्कल, उदयपुर को दिनांक 3/5/2024 को विद्यालय विकास कोष हेतु प्रधानाचार्य श्री पंकज कुमार पटेल को चैक प्रदान किया गया।

ज्ञान संकल्प पोर्टल

भामाशाहों ने बदला विद्यालय का स्वरूप

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय 12 AG मिर्जावालीमेर (टिब्बी) जिला– हनुमानगढ़

❐ गोविन्द कुमार तनाण

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय 12 AG मिर्जावालीमेर ब्लॉक टिब्बी, जिला हनुमानगढ़ (राज.) जो सन् 1957 में स्थापित हुआ (प्राथमिक स्तर) तथा 1967 में यह विद्यालय उच्च प्राथमिक स्तर पर क्रमोन्नत हुआ। सन् 1977 में माध्यमिक और 1982 में इसे उच्च माध्यमिक स्तर का दर्जा प्राप्त हुआ। स्थापना से लेकर वर्तमान तक यह विद्यालय अपनी बेहतरीन उपलब्धियों एवं शैक्षिक नवाचारों के द्वारा केवल जिला हनुमानगढ़ ही नहीं बल्कि राजस्थान प्रान्त के सर्वश्रेष्ठ राजकीय विद्यालयों में शामिल होकर शिक्षा जगत की नींव मजबूत कर रहा है।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय 12 AG मिर्जावालीमेर शुरुआत से शैक्षणिक परिणाम में श्रेष्ठता के साथ- साथ सहशैक्षिक गतिविधि और खेल के क्षेत्र में उच्च उपलब्धियां प्राप्त करते हुए पढ़ने वाले नौनिहालों के उज्ज्वल भविष्य के लिए कटिबद्ध है। यहाँ उच्च माध्यमिक स्तर पर कला और कृषि संकाय संचालित है। शैक्षिक वातावरण, विद्यालय स्टाफ तथा महान और नेक दिल भामाशाहो के अथक प्रयास से विद्यालय अपनी श्रेष्ठता की तस्वीर प्रस्तुत कर अन्य विद्यालयों और शिक्षा विभाग के सम्मान में अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ विद्यार्थियों को साथ लेकर एक सुनहरी मंजिल की ओर अग्रसर है।

स्थिति :- यह विद्यालय रावतसर शहर से वाया चाइया होते हुए संगरिया, टिब्बी और ऐलनाबाद (हरियाणा) जाने वाले मुख्य सड़क मार्ग पर ग्राम पंचायत मिर्जावाली मेर के मुख्य बस स्टैंड के नजदीक स्थित है।

गाँव के मुख्य प्रवेश द्वार से अंदर की तरफ जाने वाले मार्ग पर स्थित यह सुंदर और विशाल मैदान से युक्त भव्य विद्यालय भवन यहाँ से गुजरने वाले प्रत्येक व्यक्ति का ध्यान बरबस ही आकर्षित करता है।

विद्यालय का पुराना भवन अपनी स्वर्णिम स्मृतियों को अशेष छोड़ते हुए नव निर्मित विशाल विद्यालय प्रांगण में परिवर्तित हो चुका है। इस विद्यालय में पढ़कर जाने वाले प्रत्येक विद्यार्थी की इस संस्था से जुड़ी स्मृतियाँ यहाँ लौटने के लिए प्रेरित करती हैं।

इस विद्यालय में अध्ययन कर चुके असंख्य विद्यार्थी केंद्र और राज्य सरकारों के विभिन्न विभागों यथा- प्रशासन, पुलिस, रक्षा सेवा, बैंकिंग, चिकित्सा, शिक्षा और निजी सेवाओं के साथ-साथ अन्य सामाजिक और राजनितिक क्षेत्र में उच्च और श्रेष्ठ पदों पर पहुँचकर राष्ट्र निर्माण में अपनी महत्ती भूमिका का निर्वहन कर रहे है।

भामाशाहों ने बदली तस्वीर :- स्थापना के काफी लम्बे समय के बीतने के बाद विद्यालय का पूर्व भवन काफी क्षतिग्रस्त और पुराना हो चुका था। अब इसके नवीनीकरण और पुनःनिर्माण की आवश्यकता थी। अक्टूबर 2019 में पूर्व प्रधानाचार्य श्री रमाकान्त टांटिया पीईईओ की अध्यक्षता में विद्यालय SMC, SDMC और ग्रामीण शिक्षण समिति की बैठक का विद्यालय परिक्षेत्र के भामाशाहों को सम्मिलित करते हुए आयोजन किया गया।

आम चर्चा के पश्चात् भामाशाह परिवारों ने आपसी विचार विमर्श करते हुए कुछ दिन बाद पुनः बैठक का आयोजन कर विद्यालय के सम्पूर्ण भवन का पुनः निर्माण का निर्णय लेते हुए भामाशाह परिवारों और समाज ने प्रतिबद्धता प्रकट की। विद्यालय के प्रधानाचार्य एवं समस्त स्टाफ की प्रेरणा उपरांत भामाशाहों ने विद्यालय भवन निर्माण हेतु कुल 47,67,381 रूपये (सेंतालिस लाख सड़सठ हजार तीन सौ इक्यासी) राशि दान में दी।

अन्य सामाजिक सरोकार :- विद्यालय स्तर पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों के अंतर्गत प्रबुद्ध नागरिकगण, भामाशाह एवं युवा साथी तन मन धन से सामाजिक, सहशैक्षणिक गतिविधियों में सेवा हेतु तत्पर रहते है। विद्यालय स्टाफ की प्रेरणा से देश एवं राज्य की विकट परिस्थिति कोविड -19 एवं चुनाव जैसे राष्ट्रीय महत्त्व के कार्यो में भी विद्यालय की SMC, SDMC एवं ग्रामीण शिक्षा समिति ने बढ़चढ़ कर भाग लिया।

राज्य सरकार का योगदान :- विद्यालय भवन के नवनिर्माण हेतु पूर्व प्रधानाचार्य SMC, SDMC व ग्रामीण शिक्षण समिति ने कक्षा- कक्ष और अन्य कमरों का निर्माण CMJY योजना अंतर्गत करवाने का निर्णय लिया जो 60:40 अनुपात के अनुसार बनाना प्रस्तावित हुआ। इस विद्यालय के भवन निर्माण कार्य की नींव दिनांक 26 जनवरी 2022 को तत्कालीन जिला कलेक्टर हनुमानगढ़ श्री नथमल जी डिडेल के करकमलों से विधिवत रूप से रखी गई और

निर्माण कार्य लगभग 2 वर्षों तक चला। इस निर्माण कार्य के अंतर्गत 14 कक्षा कक्षों, प्रधानाचार्य कक्ष, कार्यालय , पुस्तकालय, खेल कक्ष, MDM कक्ष, स्मार्टक्लास रूम, ICT लैब, प्रयोगशालाए तथा शौचालयों का निर्माण सम्पन्न हुआ विद्यालय आयताकार स्थिति में निर्मित है जिसमें टाइल निर्मित प्रार्थना स्थल, हरा पार्क तथा आकर्षक मंच बनाना प्रस्तावित है। इस विद्यालय के नए भवन के निर्माण हेतु जनसहयोग एवं मुख्यमंत्री जनसहभागिता योजना से लगभग 1.25 करोड़ रुपये की राशि से निर्माण कार्य सम्पन हुआ। विद्यालय में शीतल पेयजल हेतु वाटर कूलर लगा हुआ है।

पुरस्कार :- गत वर्ष 2021-22 में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मिर्जावालीमेर की SDMC को ब्लॉक स्तरीय प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। जिसमें रुपये 11000/- नकद राशि का शिक्षा विभाग की तरफ से प्रोत्साहन मिला।

संस्था प्रधान की कलम से :- इस विद्यालय के भवन निर्माण कार्य जो लगभग दो साल चला, वह कार्य अब पूर्ण हो चुका है इतने बड़े स्तर पर निर्माण कार्य चुनौतिपूर्ण था। लेकिन भामाशाह परिवार, समाज, संस्थाओ तथा विभागीय सहयोग से सही समय पर सम्पन्न हो पाया। विद्यालय परिवार ग्राम पंचायत मिर्जावालीमेर पीईईओ परिक्षेत्र के तथा उन बाहरी सहयोगी एवं भामाशाहों को वंदन करते हुए हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

शिक्षा विभाग, विद्यालय परिवार, तथा ग्रामवासियों का भामाशाह के रूप में यहाँ सहयोग इसी प्रकार बने रहने से यहाँ अध्ययनरत विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को गति मिलेगी तथा ये समस्त विद्यार्थी अपने गाँव, परिवार, समाज के साथ-साथ राष्ट्र निर्माण की अग्रिम पंक्ति में खड़े होकर अपने माता-पिता और गुरुजनों का मान बढ़ाएगे।

प्रधानाचार्य

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय

12 AG मिर्जावालीमेर (टिब्बी), हनुमानगढ़

मो. 8385070325

हमारे भामाशाह

ज्ञान सकंल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से राजकीय विद्यालयों को माह - जून 2024 में 50,000 एवं अधिक राशि का सहयोग करने वाले भामाशाह

S.No.	Donar_Name	School	Block_Name	Dist_Name	AMOUNT
1	NANDLAL TOSHNIWAL FOUNDATION	GOVT. PRIMARY SANSKRIT SCHOOL DADHICH COLONY KRISHNAPURI KISHANGARGH (227376)	KISHANGARH	AJMER	500000
2	VENUS PIPES AND TUBES LIMITED	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BAMANWAS PATTI KHURD (212764)	BAMANWAS	SAWAIMADHOPUR	500000
3	SITA DEVI TOSHNIWAL CHARITABLE TRUST	GOVT. UPPER PRIMARY SANSKRIT SCHOOL KULDA KA TIBA (226083)	SHRI MADHOPUR	SIKAR	350000
4	SITA DEVI TOSHNIWAL CHARITABLE TRUST	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL DHURILA KI DHANI DHURILA (424767)	LADNUN	NAGAUR	350000
5	RATI RAM	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL RATANPURA (492255)	SANGARIA	HANUMANGARH	300000
6	SITA DEVI TOSHNIWAL CHARITABLE TRUST	SITA DEVI TOSHNIWAL GOVT. PRAVESHIKA SANSKRIT SCHOOL JASWANTGARH (213472)	LADNUN	NAGAUR	200000
7	GYAN SINGH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL CHHAYAN (220526)	NACHANA	JAISALMER	111000
8	JAGMAL SINGH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL 8 RJM (224861)	GHARASANA	GANGANAGAR	100000
9	ANITA CHOUDHARY	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL MAJIPURA (487913)	DHOD	SIKAR	100000
10	THE INDIA CEMENTS LIMITED	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KUSHALPURA (223800)	TALWARA	BANSWARA	100000
11	K C INDIA LIMITED	SHAHEED HAVALADAR PRITHVI SINGH GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL MOHANPUR (215802)	CHIRAWA	JHUNJHUNU	100000
12	K C INDIA LIMITED	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL CHAMPA KHERI (219416)	DEGANA	NAGAUR	100000
13	SUGRIV SINGH VERMA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SUROTH (212499)	HINDAUN	KARAULI	100000
14	DR PAWAN KUMAR GARG	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL BAMANWAS PATTIKALAN (212763)	BAMANWAS	SAWAIMADHOPUR	100000
15	OM PRAKASH PAWARIYA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL LALASARI (219790)	DEEDWANA	NAGAUR	100000
16	SURESH KUMAR POONAM CHAND JAIN	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KOOKRA (222697)	BHIM	RAJSAMAND	80000

16	SURESH KUMAR POONAM CHAND JAIN	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KOOKRA (222697)	BHIM	RAJSAMAND	80000
17	RAMNARAYAN MEENA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL ITAWA (224446)	ITAWA	KOTA	53000
18	NARAYAN LAL KUMAWAT	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DEVTHARI (222926)	RAJSAMAND	RAJSAMAND	51151
19	PUSHPAJ JAIN	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KESARPURA P.S. ARTHUN (214950)	ARTHUNA	BANSWARA	51001
20	SAROJ APURVA	LUNKARAN BAHETI GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL RAJAREDI KISHANGARH (413193)	KISHANGARH	AJMER	51000
21	RAM JIWAN	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL HARSOLAO (219513)	MERTACITY	NAGAUR	51000
22	KAILASH CHANDER MEENA	GOVT. SE NIOR SECONDARY SCHOOL CHARAWAS (215965)	KHETRI	JHUNJHUNU	51000
23	BRAHMANAND	SHAHEED NAYAK SATYAVEER SINGH GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL GHANDAWA (215852)	PILANI	JHUNJHUNU	51000
24	HABIB KHAN	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL NIMBI KALAN (219799)	DEEDWANA	NAGAUR	51000
25	BHURA RAM	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SARNOO PANJI (220831)	BARMER RURAL	BARMER	51000
26	RAKESH KUMAR CHOTIA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL 22MD (503234)	GHARASANA	GANGANAGAR	51000
27	PURAN MAL KUMAWAT	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL KASARI BADAGAON (495581)	KUCHAMAN	NAGAUR	51000
28	VIKAS	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DHABA JHALLAR (212206)	SURATGARH	GANGANAGAR	51000
29	HET RAM DOODI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL GODU (211350)	BAJJU KHALSA	BIKANER	51000
30	SHEESH RAM	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL PAKORI KI DHANI (215619)	JHUNJHUNU	JHUNJHUNU	51000
31	JAIPAL GODARA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL MAGHEWALI DHAANI (224858)	VIJAYNAGAR	GANGANAGAR	51000
32	SHRI GOPAL SHARMA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL HARSAWA BARA (213131)	FATEHPUR	SIKAR	51000

33	ANITA KUMARI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL LUNA (211615)	ALSISAR	JHUNJHUNU	51000
34	RAMESH CHANDRA JAIN	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL GARHI (223912)	GARHI	BANSWARA	51000
35	RAMESH CHANDRA NAI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL GANDHER NEAR BUS STAND POST GANDHER (224832)	PRATAPGARH	PRATAPGARH	51000
36	TEJKIRAN PATIDAR	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL LALPURA (486683)	ARTHUNA	BANSWARA	51000
37	SHELENDRA PATIDAR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DAIYANA (223051)	GALIYAKOT	DUNGARPUR	51000
38	BHARAT LAL GAMETI	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL VARD N. 7-9 BALWADA I KAKRADARA (481636)	DUNGARPUR	DUNGARPUR	50000
39	JAGDISH PRASAD	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SIRSALA (215881)	SURAJGARH	JHUNJHUNU	50000
40	SITA DEVI TOSHNIWAL CHARITABLE TRUST	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL GODRAS (506127)	DEEDWANA	NAGAUR	50000
41	RAGHVENDRA REWAL	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL GOTHARA (221557)	HINDOLI	BUNDI	50000
42	DHANPAL MEENA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL PADHANA (217905)	SAWAI MADHOPUR	SAWAIMADHOPUR	50000
43	SHREE MANSHANKER GARASIYA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SARANPUR (214941)	ARTHUNA	BANSWARA	50000
44	OM PRAKASH DHAKA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL JATO KI DHANI NARAYANPURA BAP JODHPUR (220152)	GHANTIYALI	JODHPUR	50000
45	ANITA DEVI KHARADI	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL ANTRI (222389)	DOVDA	DUNGARPUR	50000

ज्ञान सकंल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से राजकीय विद्यालयों को माह - अगस्त 2024 में प्राप्त जिलेवार राशि

S.NO.	DISTRICT	TRANSACTION	AMOUNT
1	NAGAUR	743	1236940
2	SIKAR	932	838957
3	SAWAIMADHOPUR	351	726053
4	JHUNJHUNU	353	640776
5	AJMER	304	609654
6	HANUMANGARH	931	546351
7	BANSWARA	226	532823
8	KOTA	1125	500884
9	CHURU	222	437142
10	DUNGARPUR	1476	424888
11	GANGANAGAR	786	394259
12	BIKANER	539	365904
13	BHILWARA	1518	298558
14	CHITTAURGARH	444	290297
15	PALI	915	257860
16	RAJSAMAND	512	248531
17	JODHPUR	286	243976
18	ALWAR	1585	238733
19	PRATAPGARH	214	226773
20	BARMER	343	224924
21	BUNDI	421	189175
22	KARAULI	452	178276
23	JHALAWAR	904	175554
24	BARAN	700	174085
25	JAISALMER	124	153940
26	JALOR	354	133594
27	JAIPUR	644	130593
28	UDAIPUR	215	122767
29	BHARATPUR	263	117941
30	DHAULPUR	365	82632
31	TONK	371	51497
32	DAUSA	452	33543
33	SIROHI	147	10006
Mukhyamantri Vidyadan Kosh		39	17461
Total		**19256**	**10855347**

ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से अनुमोदित/स्वीकृत प्रोजेक्टः-

विभिन्न औद्योगिक घरानों/संस्थानों/व्यक्तिगत दानदाताओं द्वारा राजकीय विद्यालयों मे सहयोग प्रदान करने के उद्धेश्य से स्वीकृति हेतु ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Create Your Own Projects में Projects Submit किए गए। माह अगस्त 2024 में 4 करोड 77 लाख से अधिक की लागत से कुल 8 Projects स्वीकृत/अनुमति प्रदान की गई है, उक्त अनुमोदित/स्वीकृत किए गए Projects निम्नानुसार हैः-

क्रं. स	कम्पनी/संस्था/दानदाता का नाम	प्रोजेक्ट संख्या	कम्पनी/संस्था/दानदाता द्वारा किए जाने वाले कार्य का विवरण	अनुमानित लागत/व्यय (लाखों में)
1	सेठ श्री भंवरलाल कौशल्यादेवी नवल फाउण्डेशन	1601	**राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय देह, जायल, नागौर में** खेल मैदान का निर्माण कार्य	**200.00**
2	आइपीसीए फाउण्डेशन	1614	**राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, अरेन, अजमेर में** भवन निर्माण कार्य	**75.00**
3	आइपीसीए फाउण्डेशन	1613	**राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, संदोलिया, अजमेर में** भवन निर्माण कार्य	**35.00**
4	आइपीसीए फाउण्डेशन	1612	**कमला देवी गीगालाल गोधा राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, झिरोता, अजमेर में** भवन निर्माण कार्य	**75.00**
5	एस. एम. सहगल फाउण्डेशन	1606	**महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय महुआ कलना, मालाखेडा, अलवर में छात्र–छात्राओं** का शौचालय, खेल का मैदान विकास, वर्षा जल संचयन, फर्नीचर, प्रमुख मरम्मत, बालाध्एबीएल गतिविधियाँ, कमरों का नवीनीकरण का कार्य	**25.8**
6	श्री सुरेश चंद गुप्ता	1604	**राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय ज्योतिनगर, करतारपुरा, जयपुर में** कक्षा–कक्ष (1–8) का निर्माण कार्य	**5.50**
7	श्रीमति श्वेता चौधरी	1602	**राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय लाधुवाला, श्रीगंगानगर में** सोलर पैनल का कार्य	**1.5**
8	क्लूबा फाउण्डेशन	1456	**राजकीय प्राथमिक विद्यालय, मील बस्ती तलबगाँव, हिन्दोली, बून्दी मे** भवन, कक्षा– कक्ष (1.8), बालक शौचालय, बालिका शौचालय, बिजली सुविधा/इलेक्ट्रिक फिटिंग, पीने का पानी, चारदीवारी, एचएम कक्ष, दिव्यांग शौचालय, छात्र–छात्राओं का शौचालय, हाथ धोने का सिस्टम, अन्य कक्ष	**60.00**
			कुल राशि	**477.80**

शिविरा पत्रिका (मासिक) : अक्टूबर, 2024/निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा राज्य केन्द्रीय मुद्रणालय, जयपुर से मुद्रित।
वरिष्ठ सम्पादक : कमला कालेर, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

गंगा
रा. बाठिया बा. उच्च मा. वि., मीनासर, बीकानेर

गंगा
रा. बाठिया बा. उच्च मा. वि., मीनासर, बीकानेर

वसुन्धरा
रा. उच्च मा. वि., बैनिवालों की ढाणी, मंगले की बेरी, आडेल, बाड़मेर, राजस्थान

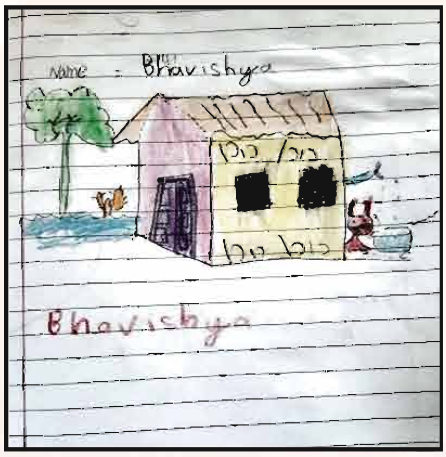

भविष्य जाँगिड़
रा. उच्च मा. वि., बैनिवालों की ढाणी, मंगले की बेरी, आडेल, बाड़मेर, राजस्थान

सीना
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, संगराना
जिला-श्रीगंगानगर

राधा
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, संगराना
जिला-श्रीगंगानगर

सचिन जयपाल
स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूल
देसूरी, जिला-पाली

कृपा प्रजापत
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
गढ़ी थानागाजी, कोटपूतली-बहरोड़

तनीषा
रा.बा.उ.मा.वि. टपूकड़ा (खैरथल तिजारा)

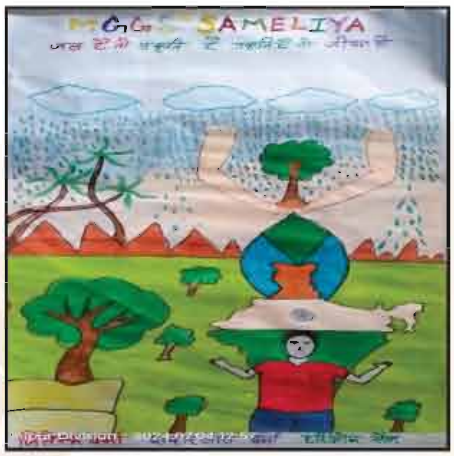

जितेन्द्र वर्मा
एम.जी.जी.एस. समेलिया, फागी, दूदू

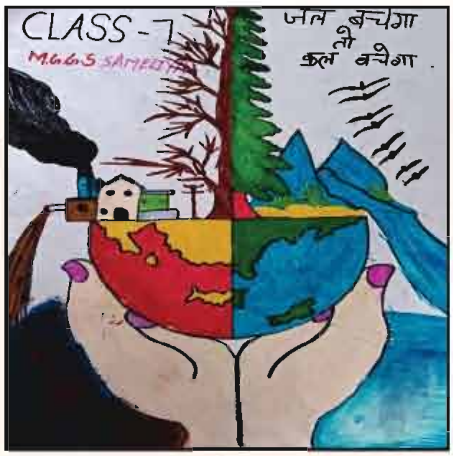

हर्षिता
एम.जी.जी.एस. समेलिया, फागी, दूदू

पायल कुमारी
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय
सराणा, ब्लॉक-आहोर, जिला-जालोर

देविका
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
तिंवरी, जोधपुर

आकृति शर्मा
महात्मा गाँधी राज. विद्यालय
बांसखोख, बस्सी, जयपुर

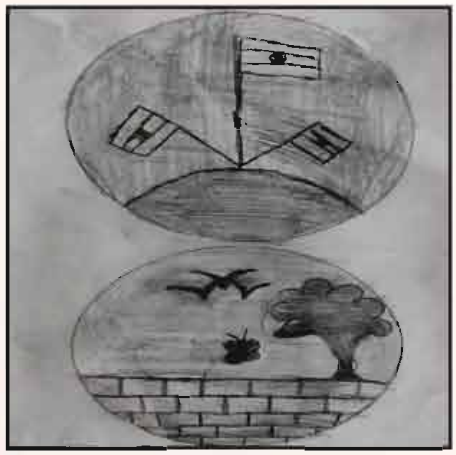

दक्ष
श्रीमती राधा रा. उ. मा. वि., बींजवाड़िया
तिंवरी, जोधपुर

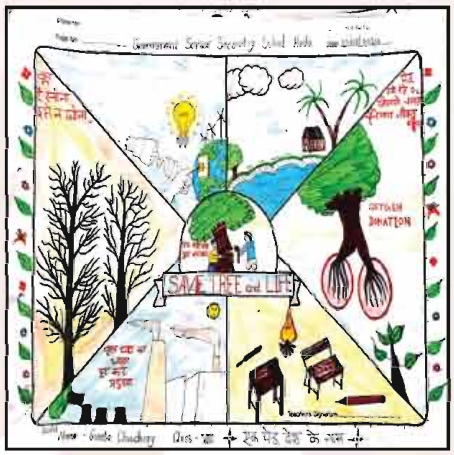

गीता चौधरी
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
होडू, बालोतरा

गौतम कुमार
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
होडू, बालोतरा

नीतू सोनी
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
होडू, बालोतरा

राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह 2024 के कार्यक्रम की झलकियाँ
कार्यक्रम स्थल : बिड़ला ऑडिटोरियम जयपुर

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/414/2023-25 शिविरा पत्रिका (मासिक) • अक्टूबर 2024 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 अक्टूबर, 2024 पृष्ठ 56 • प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह 2024 के कार्यक्रम की झलकियाँ

कार्यक्रम स्थल : बिड़ला ऑडिटोरियम जयपुर